सितंबर - 2013
वर्ष - 11 अंक- 4

सुगन्ध

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
की गृह-पत्रिका

संपादकीय

नये संकल्प के साथ ...

संकल्प का बल बड़ा सशक्त होता है। यदि किसी ने संकल्प ले लिया कि मुझे अमुक काम करना है और वास्तव में दृढ़ संकल्प के साथ वह उसके लिए प्रयत्नशील रहा तो सफलता उसके हाथ अवश्य लगती है। भारत में सिपाही विद्रोह के प्रणेता मंगल पाण्डेय ने कभी नहीं सोचा होगा कि धार्मिक भावना को ठेस पहुँचाने के खिलाफ उठाई गई उनकी आवाज कभी भारत की आजादी की लड़ाई में तब्दील हो जाएगी। अंग्रेजों ने भी कभी नहीं सोचा होगा कि बिरसा मुंडा से उनकी जमीन और जंगल छीनने का उनका प्रयास इतना महंगा पड़ जाएगा कि उनके साम्राज्य का ही अंत हो जाएगा।

भारतीय इतिहास का अध्ययन करने वाले लोग जब अर्धनग्न गांधी जी के बारे में पढ़ते हैं तो उन्हें संशय होता है कि क्या बिना किसी हथियार के लड़ाई लड़ी जा सकती है? या फिर डॉ अंबेड्कर ने इतनी अधिक विषमता वाले समाज में समानता की लड़ाई कैसे शुरु की होगी? या फिर दशरथ मांझी जैसा एक अदना सा किसान कैसे 22 वर्षों तक पहाड़ काटने का प्रयास कर रास्ता बना सकता है? और ऐसे ही न जाने कितने उदाहरण हमारे सामने उभर कर आते रहते हैं और विश्वास प्रबल बनाते हैं कि जिनके इरादे मजबूत होते हैं, उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। ये सारे उदाहरण इस धारणा को बल देते हैं कि 'मन से मजबूत' कुछ भी नहीं है।

हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ

सृष्टिकर्ता ने मनुष्य को संकल्प शक्ति तो प्रदान की है। साथ ही उसके मन में विकल्प नामक पलायन वादी प्रवृत्ति भी डालकर उसे आलसी अथवा फिर टालमटोल का रवैया अपनाने हेतु एक औजार भी दे दिया है। ईश्वर ने यदि मनुष्य के मस्तिष्क में केवल संकल्प शक्ति डाली होती तो संभवत: दुनिया की स्थिति कुछ और होती। संभवत: मनुष्य जो कुछ सोचता, वह पक्का होता। अर्थात हम जो ठान लेते उसे पूरा कर लेते।

'इच्छाशक्ति' की शक्ति न तो कोई जादू है और न ही कोई चमत्कार। यह एक स्थापित विज्ञान से संचालित होती है। शैक्षणिक संगठन मनुष्य के मन से संबंधित ज्ञान को 'मनोविज्ञान' के तहत पढ़ाते हैं और दार्शनिक व अध्यात्म से जुड़े लोग इसे ही आत्मा के रूप में देखते हैं। प्राचीन काल में तो सभी लोग इसे ही आत्मा मानते थे। लेकिन शैक्षणिक संगठनों ने इसे मनोविज्ञान के रूप में प्रतिस्थापित करके अलौकिक चिंतन से अलग कर दिया। इच्छाशक्ति से ही आज मनुष्य मंगललोक में प्रवेश का प्रयास कर रहा है।

इच्छाशक्ति से ही लोग बड़े से बड़े कार्यों को अंजाम दे पाते हैं। हम कमजोर इच्छाशक्ति वालों के मंसूबे बीच में ही दम तोड़ देते हैं। इच्छाशक्ति की प्रबलता के अभाव में संभव को असंभव के रूप में भी प्राय: देख लिया जाता है। इच्छाशक्ति से परिपूर्ण लोग ही इतिहास रचते हैं। अपने सकारात्मक कार्यों के बल पर वे सामाजिक धारा में नया जोश भरते हैं या उसे नया मोड़ देते हैं। मात्र कुछेक प्रबल इच्छाशक्ति संपन्न लोगों के बदौलत विश्व की प्राचीनतम सभ्यताएँ, संस्कृतियाँ व भाषाएँ आज संरक्षित नहीं हैं, बल्कि इसके पीछे उनको पोषित करने वाली जनता के बहुतायत लोगों की निष्ठा होती है। इच्छाशक्ति विहीन नागरिकों के अभाव में न जाने कितनी सभ्यताओं, संस्कृतियों और भाषाओं ने दम तोड़ दिया है। व्यक्तिगत स्तर पर तो इच्छाशक्ति जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करती है, लेकिन राष्ट्रीय एवं सामाजिक उत्थान व विकास हेतु यह भावनाशक्ति, समूह में अंतर्निहित रहती है।

हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने अथवा विश्व भाषा बनाने की जो भावना प्राय: सभी भारतीयों में परिव्याप्त है, उसे मूर्त रूप देने की जरूरत है। उसके लिए मात्र ख्याली पुलाव बनाने या राजभाषा की दशा पर घड़ियाली आँसू बहाने से काम नहीं बनेगा, बल्कि उस इच्छाशक्ति से काम करना होगा, जिस इच्छाशक्ति से मंगलयान भेजा गया है या फिर हरित क्रांति अथवा श्वेत क्रांति जैसे अभियान चलाना होगा। हिंदी भारत की पहचान है और भारतीयता की समूची विरासत उसके इर्द-गिर्द घूमती है। इस प्रकार हिंदी की यदि कोई क्षति होती है तो उससे भारतीयता की भी क्षति होती है। इसीलिए बिना हिंदी के भारतीयता की कल्पना बेमानी होगी। अब हिंदी मात्र एक भाषा नहीं रह गई है, अब यह भारतीय अस्मिता की संवाहिका है। अत: हिंदी है तो भारत है, अन्यथा 'इंडिया' तो आपके पास है ही, जहाँ चिंतनशील दर्शन की जगह उच्छृंखल मानसिकता की वकालत होगी और 'जिओ और जीने दो' की जगह व्यापक उपभोक्तावाद हावी बनेगा।

इन्हीं कुछेक भावनाओं के साथ मैं 'सुगंध' के नये अंक को आपके समक्ष रखने का प्रयास कर रहा हूँ। 'सुगंध' परिवार राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास के प्रति हमेशा आशावान रहा है और आगे भी ऐसा ही बना रहेगा।

मुझे 'सुगंध' व राजभाषा के प्रचार-प्रसार कार्य से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ है, जो मेरे लिए एक नई चुनौती है। साथ ही मैं आशान्वित हूँ कि सुधी पाठकों, सुहृदय लेखकों, हिंदी प्रेमियों और हमारे संपादक मंडल के सहयोगियों की इच्छाशक्ति के सहयोग से भारतीय जनमानस में राजभाषा के प्रति सम्मान व उसे सीखने, सिखाने व अपने रोजमर्रा के कामकाज में प्रयोग में लाने की भावना को बढ़ाते हुए राष्ट्रनिर्माण के इस पुनीत कार्य को आगे बढ़ा सकूँगा। हिंदी दिवस की शुभकामनाओं के साथ...

संपादक

विषय सूची

'सुगन्ध'

वी एस पी की त्रैमासिक गृह-पत्रिका

वर्ष-11 अंक-4 सितंबर, 2013

संपादक

वै बालाजी

उप-संपादक

वी सुगुणा

गोपाल

संपादकीय कार्यालय

विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र

कमरा सं.245, पहला तल

मुख्य प्रशासनिक भवन

विशाखपट्टणम-530 031

दूरभाष: 0891-2518471

मोबाइल: 9989888457 & 9949844146

ई-मेल: vspsugandh@rediffmail.com

vspsugandh@gmail.com

'सुगन्ध' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं और उनके प्रति 'विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र प्रबंधन' जिम्मेदार नहीं है।

सृजनात्मक स्तंभ

कहानी

जलकुंभी	श्रीमती अनिता रश्मि	9
किस्सावाली काकी	श्री चित्रेश	18
सीट	श्री शैलेंद्र तिवारी	29
आविष्कार-2 (पुरस्कृत कहानी)	श्री अमित कुमार	39

बाल-सुगन्ध

खराब अर्थव्यवस्था के कारक	सुश्री अलका	35
भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष चुनौतियाँ	मास्टर टी उमा महेश्वर राव	36
उदारीकरण: एक अच्छी पहल	मास्टर विपिन कुमार	37

कविता

माँ तू महान्!	श्री सीताराम शास्त्री	8
मैं चाहता हूँ	श्री कमल कुमार बहिदार	22-23

लेख

नवीन सिंटरिंग प्रौद्योगिकी...	श्री विक्रम कुमार झा	05
संगठनात्मक विकास और व्यक्तित्व	श्री गोपाल	14
राष्ट्रीय चेतना जगानेवाले महत्वपूर्ण गीत	श्रीमती रीतिका	27
प्रेम रोग	श्री रामनारायण सिंह मधुर	32
प्रशिक्षण संस्थानों में हिंदी माध्यम की आवश्यकता	डॉ कृष्ण कुमार गोवर	41

अध्यात्म

क्रोध	38

मानक स्तंभ

संगीत सरिता	26
वी एस पी के बढ़ते कदम - यातायात विभाग	33
आओ भाषा सीखें	44

कार्य-कलाप 24-25

बदलाव सृष्टि का गुणधर्म

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र की हिंदी गृहपत्रिका 'सुगंध' अपने प्रकाशन का ग्यारहवाँ वर्ष पूरा कर रही है। पिछले ग्यारह वर्षों में संगठन के प्रबंधन और संपादक मंडल के साथ-साथ इसके पाठकों, लेखक व लेखिकाओं, रेखाचित्र व अन्य मानक स्तंभकारों के प्रयास से पत्रिका के समन्वित रूप में काफी निखार आया है। तदनुरूप इसे राष्ट्रीय स्तर के श्रेष्ठतम पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है।

'सुगंध' पत्रिका के संपादक, सहायक महा प्रबंधक श्री ललन कुमार का हाल ही में विपणन विभाग में स्थानांतरण हो गया है। उन्होंने इस पत्रिका का संपादन कार्य बखूबी निभाया, जिसके लिए संपादक मंडल उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र में राजभाषा के प्रचार-प्रसार कार्य को पर्याप्त महत्व दिया जाता है। हाल ही में प्रबंधन ने 'सुगंध' के संपादक मंडल का पुनर्गठन किया है और बहुत अनुभवी एवं कार्य के प्रति समर्पित व सहज प्रवृत्ति के प्राधिकारी एवं उप महा प्रबंधक (कार्मिक) श्री वै बालाजी को 'सुगंध' के संपादक का दायित्व सौंपा है।

श्री वै बालाजी जुलाई, 1983 से राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड में कार्यरत हैं। उन्होंने अभी तक संगठन के विभिन्न विभागों में विभिन्न पदों व दायित्वों का प्रभावी ढंग से निर्वाह किया है। उनकी कार्यशैली स्पष्ट एवं उद्देश्यपूर्ण होती है। प्रबंधन का विश्वास है कि उनके मार्गदर्शन में 'सुगंध' पत्रिका नई ऊँचाइयों को छूते हुए आगे बढ़ेगी।

आपकी पाती ✉ हमारी थाती

'सुगंध' का जून 2013 अंक मिला। मैंने पत्रिका को आद्योपांत देखा। इसका मुद्रण, साजसज्जा, पहले की तरह ही आकर्षक एवं सुरुचिपूर्ण है और संकलित सामग्री रोचक तथा ज्ञानवर्धक। 'प्रकृति कुछ चाहती है...' शीर्षक से ललन कुमार का संपादकीय प्रभावित करता है। श्रीमती आभा सिन्हा की कहानी 'सुहागन' मुझे विशेष रूप से अच्छी लगी।

आशा है कि यह पत्रिका नियमित रूप से प्रकाशित करते रहेंगे और मुझे भिजवाते रहेंगे। इस बार हिंदी दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति जी के करकमलों से आपके संस्थान को एक बार फिर इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड मिली, बधाई।

- डॉ कृष्ण कुमार गोवर, नई दिल्ली

आपके कार्यालय की गृह-पत्रिका 'सुगंध' सदैव ही राजभाषा के क्षेत्र में प्रेरणा की संवाहक रही है। मुखपृष्ठ आकर्षक एवं संग्रहणीय है। श्री संजीत कुमार का आलेख 'वी एस पी में रसायनिक अभिक्रिया उपरांत कोक की गुणवत्ता', श्री सुधीर निगम का आलेख 'कंफ्यूशियस और भारतीय दर्शन', श्री रामप्यारे प्रजापति की कहानी 'तिरंगा', श्री सुभाष सेतिया का आलेख 'आम आदमी का पुराना साथी रेडियो', श्री मदन सैनी की कहानी 'बचकानी बातें', श्रीमती आभा सिन्हा की कहानी 'सुहागन', आओ भाषा सीखें तथा श्री ललन कुमार का संपादकीय अत्यंत सारगर्भित, पठनीय एवं प्रेरणाप्रद हैं। पत्रिका की समस्त रचनाएँ शुरु से लेकर अंत तक पाठकों को अपने साथ-साथ लेकर चल रही हैं। वस्तुत: भारतीय और पाश्चात्य साहित्यपरक सिद्धांतों के अनुसार रचनाधर्मिता और साहित्यिक अभिव्यंजना के उदात्त तत्वों की यही सच्ची कसौटी है। अन्य सभी रचनाकारों ने अपनी लेखकीय क्षमता का पूरा परिचय दिया है।

आपके कार्यालय में हो रही विभागीय गतिविधियों व कार्यकलापों के बारे में गहन जानकारी प्राप्त हुई। आपके इन कार्यकलापों से अत्यंत प्रेरणा मिली। पत्रिका के संपादन में सहयोगी सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों, विशेष रूप से राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं हिंदी अनुभाग का परिश्रम स्पष्ट रूप से झलकता है। आशा है कि उनकी सृजनात्मक एवं सहयोगपरक प्रतिभा का यह प्रयास आगे भी इसी प्रकार जारी रहेगा। निश्चित ही आपके अनुभवजन्य एवं विद्वत्तापूर्ण संपादन में 'सुगंध' प्रगति करेगी और राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में हमारा कार्पोरेशन सदैव आपके साथ है।

- डॉ राजनारायण अवस्थी, हैदराबाद

आपकी पत्रिका 'सुगंध' का जून अंक देखने को मिला। अच्छी पत्रिका के प्रकाशन एवं अच्छे कार्य हेतु संपूर्ण संपादक-सदस्य बधाई के पात्र हैं। आपकी पत्रिका विकास की नई-नई ऊँचाइयों को स्पर्श कर रही है। कमलेश द्विवेदी की गजलें अच्छी लगीं तथा प्रोफेसर विमला उपाध्याय का लेख 'कबीर की सामाजिक क्रांति' भी कम अच्छा नहीं लगा। श्री कृष्ण शर्मा की लघुकथा 'वक्त की सौदेबाजी' ने भी मेरे मन को छू लिया। आपकी पत्रिका 'सुगंध' लेखकों एवं पाठकों के साथ-साथ पूरे भारत राष्ट्र के लिए आवश्यकता की चीज बन गई है। इसकी साज-सज्जा व कलेवर की संपूर्ण सामग्री अच्छी लगी। इसका नियमित प्रकाशन होता रहे, यही मेरी कामना है। इस पत्रिका को कभी न कभी राष्ट्रपति पुरस्कार तो मिलना ही है। अच्छी प्रस्तुति हेतु अनेक बार धन्यवाद।

- डॉ दयानाथ लाल, सासाराम

आपके कार्यालय को माननीय राष्ट्रपति महोदय के करकमलों द्वारा पुरस्कार मिला, यह देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। मेरी तरफ से हार्दिक बधाई। आप द्वारा संपादित पत्रिका 'सुगंध' को भी पुरस्कार मिला, यह भी अच्छी बात है। 'सुगंध' पत्रिका की सुगंध देश के कोने-कोने तक फैले, मेरी ऐसी शुभकामनाएँ हैं।

- श्री ओम प्रकाश सेठी, गुड़गाँव

आपकी त्रैमासिक समाचार पत्रिका 'उक्कुवाणी' एवं त्रैमासिक गृह-पत्रिका 'सुगंध' का अंक प्राप्त हुआ। 'उक्कुवाणी' इस्पात संयंत्र की व्यावसायिक, राजभाषायी एवं सामाजिक गतिविधियों एवं समाचारों की चित्रमय तथा वृत्तात्मक सजीव झलकियाँ प्रस्तुत कर रही है। 'उक्कुवाणी' के सफल प्रकाशन हेतु बधाई स्वीकारें। 'सुगंध' पत्रिका में समाहित साहित्य, साहित्य के शिखर को स्पर्श कर रहा है। जहाँ इसमें बेबसी, सहयात्री, श्यामा जैसी कहानियाँ हैं, वहीं लघु उत्पादन एवं हरित क्रांति में सुंदर तारतम्य प्रस्तुत किया है। निश्चित रूप से इतनी सुंदर गृह-पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र है।

- श्री विकास श्रीवास्तव, कानपुर

'सुगंध' का जून अंक प्राप्त हुआ। हरित प्रौद्योगिकी को समर्पित यह अंक निश्चय ही स्तरीय है। इसमें प्रकाशित लेख, उपदेश, कहानियाँ, कंपनी के अविस्मरणीय कार्यक्रम और हिंदी भाषा संवर्द्धन के प्रयास सराहनीय हैं। संपादकीय तो जैसे नायिका के मुखमंडल की बिंदी लगी।

इन सबसे अलग उत्साह और गर्व से इतरा उठा कि 'सुगंध' पत्रिका को महामहिम राष्ट्रपति द्वारा सितंबर, 2013 में द्वितीय बार 'सर्वश्रेष्ठ पत्रिका' का पुरस्कार प्राप्त हुआ। बहन सुगुणा को नागार्जुन पर लेख हेतु मिला पुरस्कार भी गौरवान्वित किया। इसके लिए 'सुगंध' परिवार को बधाई एवं शुभकामनाएँ। कसौटिया ही किसी चीज को 'कुंदन' बनाती है। आनेवाले दिनों में 'सुगंध' विश्वपटल पर महके, यही हमारी कामना है। अंते च प्रणम्य।

- डॉ रामप्यारे प्रजापति, सुलतानपुर

'हरित प्रौद्योगिकी' को समर्पित 'सुगंध' के मार्च अंक की सभी रचनाएँ रोचक और पठनीय हैं। श्रीमती मंजु डागा की कहानी 'श्यामा' अत्यंत हृदयस्पर्शी है।

- श्रीमती टी पी गिरिजा, कोच्ची

'सुगंध' का मार्च अंक मिला। पत्रिका हमें सुंदर, प्रतिष्ठित और बेहद पसंद आयी। सभी आलेख ज्ञानवर्धक, संग्रहणीय एवं रुचिकर लगे। कई आलेख शोधपरक, भावात्मक, मार्मिक, हृदयस्पर्शी तथा मन को छू गये। सृजनात्मक स्तंभ, कहानी, बाल-सुगंध, कविता, लेख, अध्यात्म, मानक स्तंभ और कार्यकलाप और विविध संगोष्ठियों के निष्कर्ष पढ़ने को मिले।

- श्री अशोक कुमार सोरी, भिलाई

हरित प्रौद्योगिकी को समर्पित 'सुगंध' का अंक प्राप्त हुआ। आपके श्रम तथा सूझबूझ के कारण 'सुगंध' में खूब निखार आ चुका है और पत्रिका रोचक तथा संग्रहणीय हो गई है। इस अंक में 'कंफ्यूशियस और भारतीय दर्शन', 'कबीर की सामाजिक क्रांति' एवं बाल रचनाएँ विशेष पसंद आईं। संपादकीय सामयिक है और सोचने पर मजबूर करता है।

- श्री कृष्ण शर्मा, जम्मू

प्रकृति को समर्पित 'सुगंध' का जून, 2013 अंक प्राप्त हुआ। प्रस्तुत अंक पठनीय, मननीय, प्रासंगिक और अवसरानुकूल है। संपादकीय, प्रकृति कुछ चाहती है, पढ़कर मन अभिभूत हो गया है। पत्रिका में चयनित सामग्री स्तरीय एवं रुचिकर है। रचनाकारों के स्थान पर उच्च रचनाओं का चयन निश्चित रूप से सराहनीय है। 'कंफ्यूशियस' पर आधारित लेख ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। 'विक्रम और बेताल' तथा 'सुहागन' कहानियाँ नारी की गंभीर विचारप्रधान सामग्री के मध्य श्री ओम प्रकाश मंजुल लिखित व्यंग्य का छौंक अच्छा लगा। अंतिम पृष्ठ पर प्रकाशित 'जरा गैर करें' स्तंभ लेख प्रेरणादायक है। सुगंध की सुगंध चतुर्दिक फैले, यही मेरी मंगलकामना है।

- श्रीमती रश्मिशील, लखनऊ

लेख

नवीन सिंटरिंग प्रौद्योगिकी: वर्तमान इस्पात उद्योग के परिप्रेक्ष्य में

- श्री विक्रम कुमार झा -

प्रस्तावना:

सिंटर संयंत्र ऐसा संयंत्र है, जो इस्पात उद्योग की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करता है और पर्यावरण को सुरक्षा और मजबूती प्रदान करता है। विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र की 6.3 मिलियन टन विस्तारीकरण योजना के तहत नवीन सिंटर संयंत्र प्रवर्तित हो चुका है। इसकी हर एक प्रौद्योगिकी अत्याधुनिक व समयानुकूल है। प्रस्तुत आलेख में वी एस पी की प्राचीन एवं नवीन दोनों सिंटर संयंत्रों की प्रौद्योगिकियों की समीक्षा की जा रही है, ताकि इस्पात उद्योग से जुड़े पाठकों को नवीनतम जानकारी दी जा सके तथा आम पाठक जो बढ़ती औद्योगिकीकरण से पर्यावरण के प्रति आशंकित हों, उन्हें इस बात का आश्वासन दिया जा सके कि वर्तमान में राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड पर्यावरण के प्रति और सचेत व सजग है।

सर्वप्रथम सिंटर निर्माण की मूल तकनीक पर प्रकाश डालते हैं। सिंटरिंग वह प्रक्रम है, जिसमें विभिन्न अयस्कों के महीन, अर्थात 3 मिलीमीटर से कम आकार के कणों को ज्वलन तथा आंतरिक संलयन के माध्यम से बड़े आकार, अर्थात 10-50 एम एम के अयस्कों में परिवर्तित किया जाता है, जिन्हें सिंटर कहा जाता है। इसमें निम्नलिखित कच्चेमाल का प्रयोग किया जाता है :

- लौह अयस्क चूर्ण (0-10 एम एम)
- कोक (0-3 एम एम)
- चूनापत्थर एवं डोलोमाइट (0-3 एम एम)
- बालू (क्षारीयता बनाये रखने के लिए)
- चूना (0-3 एम एम)
- इस्पात उद्योग के विभिन्न प्रक्रम से उत्पन्न धात्विक व्यर्थ

यह प्रक्रम निम्नलिखित चरणों से गुजरता है : -

- कच्चे माल की तैयारी
- जल एवं सिंटर कणों के साथ पुन: मिश्रण
- सिंटर मशीन में चार्ज किया जाना
- प्रज्वलन एवं सक्शन

उत्पादित सिंटर की उर्वरता निम्न चार कारकों पर निर्भर करती है -

1) कच्चे पदार्थ की गुणवत्ता
2) सिंटर बेड की पारगम्यता
3) ग्रेट बार के नीचे का निर्वात और
4) सिंटर की गुणवत्ता।

सिंटर निर्माण की यह मूल प्रौद्योगिकी नवीन एवं प्राचीन संयंत्रों के लिए समान है। परंतु इसे पूरा करने हेतु जो सहायक प्रौद्योगिकियाँ उपलब्ध हैं, उनमें थोड़ा बदलाव आया है। आगे इसके नवीनीकरण पर प्रकाश डाला गया है।

सिंटर संयंत्र-1	सिंटर संयंत्र-2
फ्लक्स क्रशिंग एवं स्क्रीनिंग	फ्लक्स क्रशिंग एवं स्क्रीनिंग
कोक क्रशिंग एवं स्क्रीनिंग	कोक क्रशिंग एवं स्क्रीनिंग
रिसीविंग बिन्स	रिसीविंग बिन्स
फ्यूल स्टोरेज यार्ड	एस पी-1 यार्ड द्वारा संचालित
रॉ मैटेरियल बिन्स	रॉ मैटेरियल बिन्स
बेस मिक्स यार्ड	बेस मिक्स यार्ड
सिंटर मिक्स एवं प्रिपरेशन प्लांट	सिंटर मिक्स एवं प्रिपरेशन प्लांट
फैन बिल्डिंग	फैन बिल्डिंग
डबल रौल क्रशर	एक स्कल्पर स्क्रीन
फायर फाइटिंग पंप हाऊस	फायर फाइटिंग पंप हाऊस
गैस मिक्सिंग स्टेशन	गैस मिक्सिंग स्टेशन
एरिया रिपेयर शाप	सिंटर स्टोरेज यार्ड
लाइम-डी-वाटरिंग पम्प हाऊस	री-सर्कुलेटिंग वाटर पम्प हाऊस
एअर एवं गैस क्लीनिंग प्लांट	चिल्लर यूनिट
डीजल जनरेटर सेट	एअर एवं गैस क्लीनिंग प्लांट

ए) सिंटर संयंत्र-1 एवं सिंटर संयंत्र-2 की मूलभूत सुविधाएं :

सिंटर संयंत्र-1 में दो सिंटर मशीनें प्रत्येक 312 वर्ग मीटर क्षेत्रफल, 135 पैलेट, 26 वायु द्वार एवं 500 एम एम की बेड की ऊँचाई वाली हैं, जो 5 मिलियन टन सिंटर का प्रतिवर्ष उत्पादन करती हैं, वहीं सिंटर संयंत्र-2 में एक मशीन है, जो 408 वर्ग मीटर क्षेत्रफल, 166 पैलेट, 35 वायु द्वार एवं 700 एम एम की बेड की ऊँचाई वाली है, जो 3.7 एम टी सिंटर प्रति वर्ष का उत्पादन करने को तैयार है। सक्शन के लिए 5.6 मेगावॉट के चार एग्जास्ट फैन एस पी-1 में हैं, वहीं एस पी-2, में 8.8 मेगावॉट के दो एग्जास्ट फैन हैं। एस पी-1 में एक रेखीय कूलर के लिए गर्म सिंटर को ठंडा करने हेतु 8 पंखे (1 मेगावॉट) लगाए गए हैं, अर्थात दो मशीनों के कूलरों के लिए 16। वहीं वृत्तीय कूलर के लिए 2.9 मेगावॉट के तीन पंखे हैं। एअर क्लीनिंग प्लांट के लिए 1 मेगावॉट

के 6 पंखे चालित हैं, जबकि नए संयंत्र में 2.5 एम डब्ल्यू का 1 पंखा चालित है। एस पी-1 में कच्चे पदार्थ के मिक्सिंग के लिए एक मिक्सिंग तथा दो पैलेटाइजिंग ड्रम हैं, वहीं एस पी-2 में एक मिक्सिंग एवं एक नाड्युलाइजिंग ड्रम है। सिंटर प्लांट-1 के बेस मिक्स यार्ड में दो रिक्लेमर, एक टी बी एस एवं एक डब्ल्यू ओ बी आर सी है, वहीं सिंटर संयंत्र-2 में सिंटर भंडारगृह के निर्माण से एस बी एस एवं डब्ल्यू ओ बी आर सी जैसे जटिल उपकरणों के उपयोग पर रोकथाम लगी है। इस प्रकार सिंटर संयंत्र-1 से सिंटर संयंत्र-2 में हुए मूलसंरचनात्मक बदलाव को संक्षेप में दर्शाया गया है।

	सिंटर संयंत्र-1 (मशीन-1 व 2)	सिंटर संयंत्र-2 (मशीन-3)
निर्धारित क्षमता (टी/एम स्क्वेयर/घंटे)	1.2 (1.06)	1.12
रेटेड दैनिक सिंटर उत्पादन	15,950	10,950
क्षमता (टन/घंटे)	450	560
वार्षिक कुल सिंटर उत्पादन	5,25,6000	3,66,1000
विशिष्ट ऊष्मा खपत (एम कैल/टन आफ सिंटर)	37	17
विद्युत उपयोग (एम डब्ल्यू)	35-40	20-25
निर्दिष्ट विद्युत उपयोग	51	54
हीट एनर्जी रिकवरी	शून्य	5.5 जी कैल/घंटे

आइए, अब बात करते हैं इसके प्रौद्योगिकी आर्थिक मापदंड की:

सी) पर्यावरण, ऊर्जा एवं गुणवत्ता:

पर्यावरण संरक्षण का मामला अब उद्योगजगत के लिए एक चुनौती है। यह जरूरी भी है, क्योंकि धरती की पारस्थितिकी बचाव से मानवता सुरक्षित रह सकती है। पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ ही अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बने रहने के लिए उत्पाद की गुणवत्ता को भी बढ़ाना होता है।

सर्वप्रथम बात करते हैं सिंटर संयंत्र के पर्यावरण तथा ऊर्जा संबंधी मसलों पर:

बड़े बड़े कारखानों से उत्पन्न अवांछनीय गैसीय पदार्थ वायुमंडल के सबसे बड़े दुश्मन हैं। इसे ध्यान में रखते हुए एअर क्लीनिंग प्लांट एवं गैस क्लीनिंग प्लांट का निर्माण किया गया है। यह वायु एवं गैस को लगभग 95% तक शुद्ध करके चिमनियों के माध्यम से वायुमंडल में उत्सर्जित करते हैं। इस प्रक्रिया में लगे उच्च क्षमता के ट्रांसफार्मर उच्च डी सी वोल्टेज उत्पन्न करते हैं, जिसमें गैस एवं वायु के आवांछनीय पदार्थ धनात्मक एवं ऋणात्मक प्लेटों पर जमा हो जाते हैं। बाद में रैपिंग एवं जॉल्टिंग तकनीक द्वारा इन्हें कन्वेयरों पर एकत्रित करते हैं और पुन: उपयोग से पहले इन्हें ग्रेन्युलेटर में डाला जाता है, जो धूलकणों को ग्रीन बाल (धूलकणों को जल के साथ मिलाकर घूर्णित गति से घुमाने से धूलकणों के बनने वाले आकार को ग्रीन बाल कहा जाता है) में परिवर्तित करते हैं। साथ ही डबल कोन वाल्व के इस्तेमाल से इन धूलकणों को निर्वात द्वारा कन्वेयर तक पहुँचाया जाता है। इस प्रकार वायुमंडल को प्रदूषणरहित बनाया जाता है। जहाँ तक ठोस व्यर्थ की बात है, तो विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र का सिंटर संयंत्र धात्विक व्यर्थों को पुन:उपयोग करने में अग्रणी है और पर्यावरण मैत्री का एक मिसाल है।

ऊर्जा की बचत, संरक्षण और पुन: प्राप्ति तथा पुन:प्रयोग को भी अब पर्यावरण संरक्षण के मद से सीधे जोड़ कर देखा जाने लगा है। इसीलिए सिंटर संयंत्र से उत्सर्जित होने वाली व्यर्थ ऊष्मा का पुन:प्रप्ति करके विद्युत उत्पादन किया जा रहा है। सिंटर संयंत्र-1 से लगभग 1.5 मिलियन टन सिंटर उत्पादन के लिए लगभग 35-40 मेगावाट विद्युत ऊर्जा की खपत होती है। सिंटर संयंत्र-2 जो नवीनतम प्रौद्योगिकी से लैस है उससे लगभग 4 मिलियन टन सिंटर उत्पादन हेतु 20-25 मेगावॉट विद्युत की खपत हो रही है।

सिंटर संयंत्र से ऊर्जा संरक्षण के उपायों में निम्नलिखित प्रमुख हैं:

1. वृत्तीय कूलरों से उत्पन्न ऊष्मा को ब्लोअर फैन की मदद से गर्म हवा के रूप में पुन:सिंटर फर्नेस में प्रवाहित करते हैं। यहाँ लगभग 300 डिग्री सेंटीग्रेड ऊष्मीय ऊर्जा का पुन: उपयोग होता है। जिससे 5 गेगा कैलरी/घंटे ऊर्जा की बचत होती है।
2. नए संयंत्र में प्रयुक्त विद्युतीय उपकरण ऊर्जा सक्षम यंत्र हैं। यहाँ 3-फेज इंडक्शन मोटर का इस्तेमाल किया गया है जिनको वी वी वी एफ डी (वैरिएबुल वोल्टेज, वैरिएबुल फ्रीक्वेंसी ड्राइव) एवं सॉफ्ट स्टार्टर द्वारा कंट्रोल एवं संचालित किया जाता है।
3. नए संयंत्र में डबल कोन वाल्व तकनीक के कारण जल की खपत पर भी अंकुश लगाया जा सकता है। इस प्रकार जल संरक्षण के क्षेत्र में भी हमने पहला कदम रखा है, जो एक तरह से पर्यावरण एवं ऊर्जा संरक्षण ही है।

विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र ऐसा पहला संयंत्र है जिसे आई एस ओ: 9001-2000, 14001-2004 तथा ओ एच एस ए एस: 18001-1999 जैसी संस्थाओं ने प्रमाणित किया है। नए संयंत्र में आधुनिक प्रौद्योगिकियों द्वारा सिंटर की गुणववत्ता और औद्योगिक सुरक्षा को पहले से भी बेहतर किया गया है। जहाँ एक ओर वी/एफ, एल सी आई तथा बड़े-बड़े उच्च क्षमता के

विद्युतीय ड्राइव्स लगाए गए हैं, वहीं उनके कूलिंग एवं स्वच्छ रखरखाव के लिए केंद्रीयकृत वातानुकूलन की व्यवस्था भी है। पूरे विद्युत उपकेंद्र में केंद्रीयकृत वातानुकूलन के लिए चिल्लर इकाई का निर्माण किया गया है। अग्नि सुरक्षा के लिए अलग से फायर फाइटिंग पम्प हाऊस एवं नाइट्रोजन सिलिंडर बैंक की व्यवस्था की गई है। सिंटर संयंत्र के प्रत्येक यूनिट में फायर फाइटिंग संकेतक एवं पंप हाऊस से जल पाइप लाइन का जाल बिछाया गया है। चिल्लर इकाई एवं पंप हाऊस के जल संचालन के लिए आर सी पी एच (री-सर्कुलेटिंग वाटर पंप हाऊस) का निर्माण किया गया है। विद्युत आपूर्ति बंद होने जैसी आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए डीजल जनरेटर सेट की व्यवस्था की गई है। सभी विद्युतीय उपकरणों का डबल अर्थिंग किया गया है एवं विद्युत पैनलों के सामने रबड़ मैट बिछाए गए हैं। सात मंजिला एरिया शॉप कार्यालय का निर्माण किया गया है। पहले तल पर जनउपयोगी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इसकी सभी मंजिलें केंद्रीयकृत वातानुकूलित है। अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के उपयोग से बनाए जाने के कारण नये संयंत्र के लिए कम जगह और कम मानवशक्ति की आवश्यकता पड़ी। इसके जंक्शन हाऊसों, गलियारों एवं कार्यालयों में ऊर्जासक्षम सी एफ एल लैंप्स एवं हैलोजन बल्वों का इस्तेमाल किया गया है। इस प्रकार यहाँ पर ऊर्जा संरक्षण, औद्योगिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का पूर्णत: ध्यान रखा गया है।

सिंटर की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले कारकों में सक्शन और सिंटर बेड की पारगम्यता इस्पात संयंत्र के कंट्रोल में है। सक्शन द्वारा निर्वात उत्पन्न करने के लिए वेस्ट गैस फैन का इस्तेमाल हो रहा है। सक्शन मार्ग को पूर्ण रूप से वातावरण से संपर्क रोकने हेतु डी सी वी का उपयोग किया गया है। यह सक्शन मार्ग से अवशोषित धूल कण को निर्वात के द्वारा कन्वेयरों तक पहुँचा रहा है और सक्शन क्षमता पर कोई प्रभाव भी नहीं पड़ता है। इससे बेड की पारगम्यता और सिंटर की उर्वरता दोनों ही सुदृढ़ होती हैं।

नई तकनीक: सिंटर संयंत्र-1 व 2 में प्रयुक्त प्रौद्योगिकी का तुलनात्मक अध्ययन:

1. फ्लक्स क्रशिंग एवं स्क्रीनिंग के क्रम में परिवर्तन किया गया है। आर एम एच पी से प्राप्त फ्लक्स की पहले छँटाई (स्क्रीनिंग) करते हैं। फिर उसे पिसाई इकाई (क्रशिंग यूनिट) में भेजते हैं। इससे पहले 3 मिलिमीटर आकार के अयस्कों को पिसने में समय एवं ऊर्जा व्यर्थ नहीं होते हैं। साथ ही नए स्क्रीन की छननी (मैट) भी अधिक प्रयोक्ता मैत्री है एवं इसकी छनन क्षमता भी अच्छी है।
2. डबल कोण वाल्व (डी सी वी) एक बहुत ही उम्दा तकनीक है, जिससे कई लाभ हैं। जैसे खिंचाव (सक्शन) क्षमता की प्रबलता, पर्यावरण से **ई एस पी डस्ट** का संपर्क बंद, जल खपत में कमी, व्यर्थ पदार्थों का 100% उपयोग इत्यादि। पुराने संयंत्र में रोटरी फीडर का इस्तेमाल होता है।
3. ग्रेन्युलेटर में धूल कणों को हवा एवं जल की उपस्थिति में तीव्र गति से घुमाते हैं एवं 10 एम एम आकार के ग्रीन बाल में परिवर्तित करते हैं। इससे सिंटर बेड की पारगम्यता बढ़ी है और ई एस पी डस्ट सुरक्षित सिंटर फर्नेस तक पहुँच जाती है।
4. सिंटर स्टोरेज बिल्डिंग के निर्माण से कई समस्याओं का समाधान हुआ है। इस बिल्डिंग में कन्वेयर के माध्यम से सिंटर का भंडारण करते हैं और कन्वेयर के माध्यम से ही रिक्लैम भी करते हैं। अत: पुराने संयंत्र की तुलना में एस बी एस, डब्ल्यू

ओ बी आर सी एवं खुले यार्ड की कोई आवश्यकता ही नहीं है।
5. स्कल्पर स्क्रीन व डबल रोलर क्रशर के माध्यम से सिंटर को स्क्रीन बनाने के पहले भी स्क्रीन एवं क्रश किया जाता है, जिससे बी एफ की पारगमयता बढ़ती है।
6. वृत्तीय कूलर एक रेखीय कूलर की तुलना में बहुत ही उत्तम तकनीक है। यह कम जगह में ही स्थापित हो सकती है एवं इसके वृत्तीय आकार की वजह से इसको केवल दो शीतलन पंखों से शीतलित किया जा सकता है। इसके सिंटर प्राप्त करने के सिरे पर 700^0 सेंटीग्रेड और विसर्जन के सिरे पर लगभग 100^0 सेंटीग्रेड तापमान होता है। कूलिंग फैन मोटर एवं कूलर मोटर 3 फेज इंडक्शन मोटर वी वी एफ ड्राइव से चालित होते हैं, जबकि पुराने में डी सी ड्राइव लगे हुए हैं। वृत्तीय कूलर में कार्यान्वित क्षेत्रफल कुल क्षेत्रफल का 95% है, जबकि एक रेखीय कूलर में 50% से भी कम है। अत: इसके रख रखाव में भी सुविधा और लाभ है। वृत्तीय कूलर की बनावट की वजह से इससे उत्पन्न ऊष्मा को आसानी से ब्लोअर फैन के माध्यम से उपयोग किया जा रहा है।

7. विद्युतीय उपकरणों के आधुनिकीकरण की कोई सीमा ही नहीं है। प्रत्येक कार्य को 3-फेज स्क्विरल केज इंडक्शन मोटर द्वारा संपन्न किया जा रहा है। डी सी ड्राइव के समतुल्य कार्य प्राप्त करने हेतु वी आई एफ एवं सॉफ्ट स्टार्टर के द्वारा कंट्रोल किया जा रह है। स्क्रीन को तुरंत रोकने के लिए गतिज ब्रेकिंग की व्यवस्था है। संपूर्ण विद्युतीय नियंत्रण कक्ष, केंद्रीयकृत वाताकूलित है।
8. धूल कणों की रोकथाम के लिए कई जगहों पर वाटर स्प्रे तकनीक का उपयोग किया जा रहा है।

सिंटर प्रक्रम, इसकी मूलभूत सुविधाओं, ऊर्जा एवं पर्यावरण संबंधी नीतियों तथा नए संयंत्र की नई प्रौद्योगिकी का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। यह कहा जा सकता है कि हमारे इस्पात संयंत्र ने अब तक बहुत कुछ हासिल किया है और आगे भी करना है। आर आई एन एल को विश्वस्तरीय इस्पात उद्योग का दर्जा पाने के लिए अभी भी कई क्षेत्रों में कार्य करने है।

नई पहल: आर आई एन एल गुणवत्ता, पर्यावरण तथा ऊर्जा नीतियों के पालन के लिए कटिबद्ध है। अत: इसे ध्यान में रखते हुए एस पी-1 क्षेत्र में एक रेखीय कूलर से उत्पन्न व्यर्थ ताप ऊर्जा को 20.6 एम डब्ल्यू के विद्युतीय ऊर्जा में परिवर्तित करने की दिशा में अग्रसर है। इसके लिए जापान की एन ई डी ओ (नीडो) कंपनी की तकनीक की मदद ली जा रही है।

दूसरी तरफ एस पी-1 क्षेत्र में डी सी ड्राइव को वी वी एफ एवं डिजिटल ड्राइव से विस्थापित किया जा रहा है। साथ ही डी सी मोटर एवं स्लिप्रिंग इंडमोटर के स्थान पर स्क्विरल केज इंड मोटर उपयोग में लाया जा रहा है। इस सिंटर संयंत्र में प्रयुक्त आधुनिक प्रौद्योगिकी, नवीनतम सुविधाओं एवं ऊर्जा संरक्षण की व्यापक संभावनाओं के कारण यह सफलता के आकाश को छूने में सक्षम है।

- सहायक प्रबंधक (विद्युत), सिंटर संयंत्र
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
मोबाइल: +91 8331016028

माँ तू महान्!

- श्री सीताराम शास्त्री -

ऐ माँ तू महान् है
मेरे जीवन की तू शान है
दिया जीवन मुझे खुद दु:ख सहकर
तूने पाला मुझे हमेशा चहक कर
तू समझती मुझ में अपनी जान है।।
ऐ माँ तू महान् है
न खुद खाया न सोई तू चैन से
निहारती रही मुझे हमेशा अपने नैन से
मेरा उन्नत जीवन ही तेरा अरमान् है।।
ऐ माँ तू महान् है
मुझे दुलारती-पुचकारती है तू सुबह से
मेरा सुख माँगती है तू खुदा से
मेरा महकना ही तेरा अरमान् है।।
ऐ माँ तू महान् है।
जब तक मैं न पहुँचूँ स्कूल से पढ़कर,
तू निहारती रहती है, सीढ़ियों पर चढ़कर
मेरे आँगन में पाँव धरने से आती तुझ में जान है।
ऐ माँ तू महान् है।।
माँ तूने मुझ में पंख लगाए और उड़ाना सिखाया
तेरी बताई राह पर चलकर मैंने लोगों को अपना बनाया।
तू ही मेरे जीवन की पहचान है।
ऐ माँ तू महान है।
मेरी चाहत है, तेरी सेवा करूँ
दूर विदेश से भी सुखद संदेश भेजा करूँ
मुझ पर माँ तेरे अनेकों एहसान हैं।।
ऐ माँ तू महान महान् है।
सहे तूने क्या-क्या उसे मैं जानता हूँ
तेरे हर दु:ख को भली-भांति पहचानता हूँ
तुझे सुख देना ही मेरा ईमान है।
ऐ माँ तू महान् है।।
अंत में, मैं यह कहता हूँ साथियों!
न माँ से बढ़ कर है दुनिया में कोई
वह हमेशा रहती है, अपने बच्चों में खोई
न उसके बिन जीना आसान है
ऐ माँ तू महान् है।।

- सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति
गाँव व डॉ पंजगाई जिला
बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश
दूरभाष-09418454155

कहानी

जलकुंभी

- श्रीमती अनिता रश्मि -

तालाब जलकुंभियों से भरा था। नित्य ही पवना अपने जाल की उलझी लटों को अपनी लटों की तरह संवारता, संभालता। उसे बगल की बारी में बिछाकर सुलझाने की कोशिश करता, लेकिन जैसे ही तालाब की ओर रुख करता, निराश हो जाता। कभी बहुत घबरा जाता तो धीरे से तालाब के किनारे के पानी में उतर पड़ता। अपने हाथों से खींच-खींच कर उन ढीठ जलकुंभियों को उखाड़ने-पखाड़ने की चेष्टा करता। फिर खुद ही पछाड़ खा जाल को कंधे पर लादे अपना-सा मुँह लेकर उलटे पैरों लौट आता। घर में घुसने से पूर्व बाँसों को बांध-बांध कर बनाई गई, सामने पड़ी अस्थाई डोंगी और उसके नीचे लगे बेकार पहिए उसका मुँह चिढ़ाने लगते। वह पहले तो भत पड़ जाता, साँसें निराश हो जातीं, मन-दिमाग तनाव से फटने को हो आता, फिर 'हिम्मते मरदा, मददे खुदा' की बात सोचता हुआ किसी और काम की तलाश में बाहर आ जाता। कई कई दिन यूँ ही निकल जाते। कभी-कभार जलकुंभियाँ अपना हठ त्याग देती। पवना थोड़े से पौधों को भी हटा पाता तो छोटे जाल को फैलाकर किनारे ही डेरा जमा देता। कुछ मछलियाँ धोखा खा जाल में फँस ही जातीं। उस दिन निराशा का थोड़ा सा कुहरा छँटता, पर डोंगी का चिढ़ाना जारी रहता। पवना का चिढ़ाना भी। वह खूब... खूब गाली देता डोंगी, जलकुंभी मछली को और खुद को भी -

'स्साला पवनवा और कोई काम-धंधा काहे नय सीखा? अब भोग भाग का लेखा। न ई थेथर पौधा पीछा छोड़ेगा। न ई डोंगी तालाब के छाती पर तैर पारेगा। मार मछरी, कहाँ से मारता है।'

'बना रह लकीर का फकीर! ई नय कि फेंक जाल - डोंगी और चल दे और मछुआरा के जैइसन बाहर, और सब बाहर जाकर कमाने-खानेवाला बुड़बक है? एक तू ही चालाक है?'

उसके माथे पर पसीने की बूँदें छलछला रही थीं। पवना ने तय कर लिया था, आज दस किलो तक पकड़ कर रहेगा। ई थेथर पौधा से एकदमे नय हारेगा। उसने कब से सूखे पड़े जाल को कंधे पर डाला और बाएँ हाथ से रगड़कर पसीने को झटक दिया। बूँदें दूर जा छिटकीं। उसने सर को भी झटक दिया... यूँ ही। रास्ते में ही पड़ता था रमुली का घर। उसने कंधे पर रखे जाल को ठीक किया। अपने बाल के फुग्गे पर हाथ फिराया। बेसाख्ता उसके होंठों से मुस्कुराहट का रेशमी एहसास लिपट गया। रमुली का चेहरा एक बार, बस एक बार नजर आ जाए, सब उदासी उड़नछू! बस छीनभर सही। उसने देखा, दो हाथ छप्पर की बेल को छू रहे हैं। उससे चार-पाँच पत्तियाँ तोड़ी जा रही हैं। साइत रमुली कोंहड़ा के पत्ते की चटनी बनाएगी। उसकी सबसे पसंद की चटनी, खट्टी-तीखी! रमुली दिखलाई नहीं पड़ रही थी, पर उसके दोनों हाथ खटाखट पत्ते तोड़े जा रहे थे। उसने तेजी से पैर बढ़ा दिए। आज फिर रमुली के हाथ का बना भात-चटनी खाएगा वह! खट्टी-तीखी! उसके मुँह में उस खट्टे-तीखे की याद ने पानी ला दिया। चटखारा! बिन खाये ही चटखारा!... चट...च... चटाख! स्वाद रमुली के हाथों का, याद रमुली के साथ का। तालाब के पास पहुँचते ही वह उछल पड़ा। एक पल भी नहीं लगा कुंद दिमाग को सक्रिय होने में। तालाब का झिलमिल पानी उसके सामने बिछा था। बरबस उसका खाली हाथ होंठ तक चला गया। 'ई का कमाल हो गया... धोती फाड़ कर रुमाल हो गया... एकदम अजगुत बात! परसों ही हम एकदमे हतासल हताश लौटे थे और आज एकदमे साफ।'

उसके कदम में खम आ गए। नगर निगम कई बार इस बात के लिए गाली खा चुका था कि हमारे शहर का सबसे सुलभ सुंदर तालाब को जलकुंभियों के चंगुल से छुड़ाया नहीं जा रहा है। सब घोड़ा बेचकर सोए हैं। लात का देवता है सब, बात से नहीं मानेगा। आखिर लात का देवता बात से मान ही गया। उखाड़कर किनारे रखे गए पौधे गंदगी उठानेवाली गाड़ी पर लादे जा रहे थे। पवनवा को लगा, यह उसी दो हाथ का कमाल है, जिसे उसने रस्ते में देखा था, जो उसके लिए चटनी-भात रींधेगी। वह मगन हो जाल को अपनी डोंगी पर रख, उस पर कूदकर चढ़ा और उसे खेने लगा। एकाएक उसके होंठों पर एक गीत लरज उठा, 'ऐई मांझी रे अपना किनारा तो नदिया की धारा है।'

वैसे सौ फीसदी सच कि वह किनारा का सही अर्थ नहीं समझ पाया था अब तक। पर गाता रहता था जब-तब!

तालाब के बीचोंबीच बने टापू पर पहुँच उसने कछोर

मंदिर की सीढ़ियों पर खड़े हो उन्होंने एक बार तालाब की ओर ताका। पवन जाल समेट रहा था। उन्होंने मुँह बिचका दिया, 'हूँ! येही जाल में लपेटेंगे बच्चू!' और एक-एक सीढ़ी चढ़ने लगे। सिया-राम एवं शिवजी को नहलाने का समय हो चला था। एक बार सीढ़ियों के पास रखे टोकरे में पड़े फूलों को देखा और सिया-राम में ध्यान लगाने की असफल कोशिश करने लगे। सिया में रमुली...राम में पवनवा... नहीं-नहीं। गंधा दिया बदजात ने पूरा गाँव। राम जी ऐसा सजा देंगे कि बस।

बनाकर बांधी गई धोती से चुनौटी निकाला। चुटकी में खैनी ले मुँह में भरा। जाल को घुमाया, फिर घुमाया, फिर घुमाया और ये... ले... फेंक दिया तालाब की विशाल चमकती सतह पर। लहराता हुआ जाल उसे रमुली के आँचल की तरह लगा। वह लहराता उजर अँचरा जैसे-जैसे तालाब के पानी पर बैठता जा रहा था, उसके अंदर का रांझा रमुली को लाल अँचरा पहनाकर उसमें खोता जा रहा था। एक दिन वह उसे लाल साड़ी से ढक देगा। अब समाज दे गारी कि पियार! किसी का नय सुनेगा पवनवा। मन ही मन बुदबुदा उठा वह।

आखिर उसका उमिर क्या हुआ है! हम कहते रहे अभी उकर बियाह नय करो। पर बाप-माय माना नहीं। अब बियाहों किया तो दुहाजू, टिबियाहा से, उसके मरद को टी बी एके साल में उठा लिया न...अब इसमें उस रमुली का दोख! उसके सामने सपना और अतीत एक साथ नाचने लगा। बचपन से उसके घर चटनी-भात नय खाता रहा है! अब ई पियार का दुसमन लोग नहीं माना तो मत मानो। भगवान जी के घर देर है, अंधेरिया नहीं, अपनी लाठी से सबको हाँक देते हैं। उनकर लाठी की आवाज कोई सुन भी नय सकता है। अरे! अब कौन ई जाति-फाति के दवाब में रहता है। कांता पंडिताइन और गनेसी महतो देवघर भागकर शादी कर आराम से गुजर-बसर नय कर रहे हैं का? चार-पाँच साल गिजिर-गिजिर हुआ, उ दोनों कहाँ पाताल में जा छिपा था। अब सब भूल नहीं गया ई बात को? अब ठाठ से बाबाधाम में ही रह रहा है। बमभोले के आशीर्वाद से बहुत सुखी है सब बेटा-बेटी के साथ। जिनगी एतना भारी हो गया है, कौन तो दूसर के फटल में टांग अड़ाए रख सकता है एतना दिन!

वह आश्वस्त हो उठा था, 'अब भगवान ने उसके लिए ही ई लाठी की मार दिखलाई है।'

रमुली मरद के मरने के बाद फिर से वापस गाँव में आकर बस गई। उसका हाथ उठ गया नमन को। कई दिनों से छाये अवसाद की बदली छंट गई थी। भविष्य का चाँद बदली हटाकर उसके सामने झाँकने लगा था। तालाब का जल उसकी हँसी से तरंगित हो उठा। तब उसे एहसास हुआ, जाल भारी लग रहा है। आस-पास सड़ी मछली की गंध फैली थी, मछली की गंध में उसे गजरे की महक मिल रही थी।

'हम भी भागकर गुमला के आंजनगरम जाएँगे, जहाँ पवनसुत हनुमान का जनम हुआ था। अंजनी माता हमारी रच्छा करेगी।' अक्सर वह खुद से बतियाने में मशगूल!

'काहे नय करेगी। हमहू वहीं बियाह कर छिपे रहेंगे। एक महीना, दू महीना...जब तक सबकी छटपटाहट बंद नय हो जाएगी। हमको भी सब ढूँढ़ नहीं पारेगा। पर पहले रमुली को मनाना है। फिर कुछ माल-पानी बना लें, तब न कुछ जुगाड़ करें, आंजनगरम सिर छिपाने को जगह तो देगा न?' वह सोच-विचार में, चिंता-फिकिर में डूबले रहता है। कांता और गनेसी उसके आदर्श! वह उनका नाम भी जपने लगा। किसी इलाके का खाप तो कहीं पाप... वह इन सब बातों से ऊपर होकर योजनाएँ बना रहा था।

जाल में और मछली फाँसने के लिए बैठा ही रहा। कम से कम बीस बाइस किलो... गुमला का आंजनगरम उसे आश्रय देगा। इस सोच से वह खुश हो उठा।

× × ×

पंडित जी ने स्नान-ध्यान किया और अपने कक्ष के आदमकद आइने के सामने जा खड़े हुए। उनके सामने चंदन की कटोरी थामे पंडिताइन तुरंत उपस्थित हो गई।

'लीजिए हम घिसकर रख दिये हैं।'

उन्होंने दोनों भौंहों के आधार पर अपने ललाट के बीचोंबीच नजरों से नापकर टीका लगा लिया।

'देखो यहाँ पर थर्ड आई होता है और मैंने...' उन्होंने एक नजर में पत्नी का मिजाज तौला। 'मैंने... मैंने अपना तीसरा नेत्र खोल लिया है। अब इस पवनवा के बच्चे का कोई माय का लाल नहीं बचा सकता। उ बहुत अनेती कर लिया। आज भी पंडिताइन रमुली के घर की तरफ गया था।'

'न, नहीं आपके डर से वह ऐसा नहीं करेगा।'

'उ सेर-बब्बर हो गया है। हमें पक्का खबर है। उ गरीब पंडिताइन की बेटी क्या-क्या गुल खिला रही है, हम देख रहे हैं द्विज का नाम गंधा दी।' श्यामाचरण पंडित ने मलाईदार दूध को एक ही बार में गटक लिया।

'पहले पेट पूजा, तब काम दूजा... भगवान एकदम नहीं कहते हैं कि अपनी आत्मा को कष्ट देकर पूजा-पाठ करो। आत्मा पहले, तब परमात्मा!' वे इस बात पर पक्का यकीन करते थे। अभी फिर दुहराया। 'क्या हुआ जी? साफ-साफ काहे नहीं बोलते हैं।' उनके माथे पर सूखकर पीले होते थर्ड आई को गौर से देखती पत्नी ने पूछा।

'रमुली का बाप क्या मरा। लड़की ने एकदम मन का करना शुरू कर दिया। औलाद लोग इसी के लिए होता है?' पंडिताइन ने यह किससे पूछा, उसे खुद ही नहीं पता। पति की परछाई बनी हामी भरनेवाली उस स्त्री के लिए कुछ पूछना-समझना कोई मायने रखता है, यह पूछे कौन?

रमुली की बेहयाई का गुस्सा, जेठ की गर्मी का गुस्सा, पवनवा के दुस्साहस पर बेबसी का गुस्सा! किस-किस गुस्से की गर्मी को संभाले। वे नथुने फड़काने लगे। 'उसका बाप जिंदा रहता, काटकर कहाँ लाश को छिपा देता, भनक भी नहीं लगती।'

तपती सुबह में यह तपन बर्दाश्त से बाहर। वे चंदन की कटोरी फिर खींचकर बैठ गए। कहते हैं, चंदन का लेप माथे की गर्मी को कम करता है। अब तीसरे नेत्र को नजर अंदाज कर वे पूरी ललाट को चंदन से पोतने लगे। ललाट के साथ-साथ दिल

में भी ठंडक की लहर उठी। उन्होंने इतनी देर में ही विजित पवन और रमुली को मात देने की तरकीब सोच ली थी। वे मंदिर की ओर बढ़ गए। जजमानी में मिला लाल डोरीवाला गमछा उनके कंधे पर लहरा रहा था। मन में जलन की लहर! रमुली ने उनका रिश्ता ठुकराया था। हर समय खोंसते-खखारते बलगम में खून की उल्टी करते रहनेवाला उसका टी वी से ग्रस्त पति साल लगते-लगते गुजर गया। दुबारा वह पवना का चक्कर में पड़ गई। कैशोर्य का उसका प्यार दम नहीं तोड़ सका था। इधर पंडित का गर्व और लालसा भी ठाँठें मार रहा था।

मंदिर की सीढ़ियों पर खड़े हो उन्होंने एक बार तालाब की ओर ताका। पवन जाल समेट रहा था। उन्होंने मुँह विचका दिया, 'हूँ! येही जाल में लपेटेंगे बच्चू!' और एक-एक सीढ़ी चढ़ने लगे। सिया-राम एवं शिवजी को नहलाने का समय हो चला था। एक बार सीढ़ियों के पास रखे टोकरे में पड़े फूलों को देखा और सिया-राम में ध्यान लगाने की असफल कोशिश करने लगे। सिया में रमुली...राम में पवनवा... नहीं-नहीं। गंधा दिया बदजात ने पूरा गाँव। राम जी ऐसा सजा देंगे कि बस।

पीतल के लोटा-बाल्टी में जल भरकर सनवा रख गई थी। वे एक लोटा जल सिया के माथे पर, एक लोटा जल राम के माथे पर ढार उनकी साज-सज्जा में मगन होने लगे। फूलों से दोनों को सजाते हुए सच में उनके अंदर भक्ति की लहर उठने लगी। 'ठुमक चलत रामचंद बाजत पैजनिया... ठुमक...', 'बहुत पायल बजाती है ई रमुली का...आज बाजा न बजा दिया तो हम एक बाप के बेटा नई...', 'पैजनियाँ... बाजत पैजनियाँ... ठुमक चलत रामचं...', 'ई पवनवा सार... रमुली का बाप महतारी कोय जिंदा रहता, तो जीते गाड़...।'

'अब हमको ही सबक सिखाना पड़ेगा... बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी है हम पर।' 'का... का जिम्मेदारी?' पंडिताइन भी भजन में साथ दे रही थी। 'त... तुम नय समझेगी पंडिताइन!'

× × ×

उन्होंने दबे पाँव कदम बढ़ाया। दरवाजा खुला था। अंदर से आती पकी मछली की गंध उनके नथुने को फड़का रही थी। छिपछिपा कर खाने में उन्हें भी कोई गुरेज न था। बस! जरा किसी को भनक नहीं लगनी चाहिए। मुँह से लार अब टपका कि तब टपका। कई बार चख चुके हैं यह अनोखा स्वाद! उन्होंने इधर-उधर झांककर देखा। कहीं कोई नहीं। मछली की मनमोहक गंध! उन्होंने सर को झटका दिया। झपटकर आगे बढ़े और कुंडी फटाक से लगा दी... अंदर से नहीं, बाहर से।

'अंधेर है अंधेर! आओ रे गाँववालों, देखो इनका तमाशा! पंडिताइन और ई पवनवा दरवाजा बंद कर मछली-भात उड़ा रहे हैं और पता नहीं क्या क्या गुल...'

तमाशा! मुफ्त का तमाशा! भीड़ उमड़ी पड़ रही है। 'रंगे हाथ पकड़ा है बाबाजी ने। अब खैर नहीं...'

'पंडिताइन होकर इतना बड़ा अनर्थ!'

'एक तो करैला, ऊपर से नीम भी। राम-राम घोर अनर्थ!'

'केवल जीभ पर ही नय, चरितर पर भी दाग...ई का की पंडिताइन रमुली।'

भीड़ का गुस्सा चरम पर। जितने मुँह, उससे दोगुनी बात! ललकार उठे हारे हुए पंडित जी, 'घोर कलयुग आ गया है। धरम बचाना कठिन हो रहा है। ई सब उसका ... उ कांता पंडिताइन के काटे का जहर है। कहते थे ढूँढ़कर लाओ बदमाश को और सरेआम फाँसी चढ़ा दो। कोई नहीं सुना हमारी बात। अब लो एक नहीं, पचास कांता तैयार हो जाएगी।'

उन्होंने जनेऊ उंगलियों के पोरों पर घुमाई।

'अरे! ठान लेते देवघर से ढूँढ़कर लाने में क्या देर लगती। कितना दूरे है बैद्यनाथ बाबाजी का दरबार! ई दिन तो नहीं देखना पड़ता। हर साल तो जाते ही हो बाबाधाम कॉवर लेकर। तब नहीं ढूँढ़ सकते थे?'

उनकी ललकार ने झंकार और टंकार दोनों पैदा किया। उसने जोश से भर दिया कमजोर बाजुओं को। नवजवानों के साथ बूढ़ों की बाहें भी फड़क उठीं। सब एकाएक रानी लक्ष्मी बाई या वीर शिवाजी या महाराणा प्रताप बन गए - 'मारो साले को।'

'मारकर फाड़ दो दोनों का माथा।' 'नहीं! नहीं!! मार डालो धरम भ्रष्ट कर दी।' लात-घूंसे... लाठी टांगी जो मिला, वही कम पड़ा। सब के हाथ पाक साफ थे। सबने हाथ साफ किया। पवनवा और रमुली के मुँह से एक भी बकार न फूटा।

क्या हमारी जीभ को भगवान ने अलग बनाया?

हतप्रभ! दोनों हतप्रभ! और जो सपने में नहीं सोचा था, वह इल्जाम... इससे अच्छा डूब मरते हम...

'मन में खोट है तब्बे चुप है दोनों, मारो और मारो।'

एक किशोर से बर्दाश्त नहीं हुआ तो वह अपनी साइकिल उठाकर एक कोस दूर जा पहुँचा। टूटी छानीवाला थाना सामने था अब। वह लगभग साइकिल पटकते हुए अंदर की ओर लपका। 'दरोगा बाबू, बचा लो उ दोनों को। मार देगा सब उनको।' वह बदहवास थाने के टेबल तक पहुँच गया। 'किसको, कौन, क्यों मार देगा? इतमीनान से बताओ कि का बात है।' अपनी बंद वर्दी का बटन खोलते हुए दारोगा ने पूछा। पूरी बात सुन, बाएँ हाथ पर दाएँ, हाथ का डंडा फटकारता आश्वासन का पुलिंदा थमाया - 'हम शाम तक आ जाते हैं, तुम जाओ', वे पंखे की हवा का आनंद ले रहे थे। बाहर की गर्मी... उफ!

'तब तक तो सब उनको मार डालेगा।' उसकी आवाज लरज उठी थी। रमुली ने कई बार उसे गोद में बिठाकर आम का टिकोरा खिलाया था। मूँग की दालवाली खिचड़ी भी। दूध में भिगोकर टोस्ट भी। उसकी आँखों से बहे आँसू सूखे नहीं थे। सुबकी अब भी लगी थी। उसने बाहर पटकी हुई साइकिल की ओर ताका। 'वे मर जाएँगे साब। मर जाएँगे।'

फैन की हवा खाते साहब के कानों पर बाल नहीं था। जूँ नहीं रेंगी। लेकिन आँखों में साइकिल देख चमक उभरी। फिर उन्होंने चमक पर जबरन कंट्रोल किया। बेकार है चमक, वे समझ रहे थे। बेटे ने हीरो साइकिल की जिद पकड़ ली थी। यह एक सामान्य कंपनी की अदना-सी साइकिल थी। 'उन्हें कुछ नहीं होगा। तुम बेफिक्र होकर जाओ। मैं सिपाहियों के साथ तुरंत पहुँचता हूँ।' दरोगा शांत, किशोर अशांत! 'जल्दी आना सॉब। जल्दी आप पहुँचेंगे तो कोई उनको हाथ भी नहीं लगा...'

उसने साइकिल उठाई और वापस पलट पड़ा। मन ही मन प्रार्थना करता रहा, 'मेरी दीदी को कुछ मत होने देना भगवान... पवनवा को भी बचा लेना। हे सीता मईया! हे रामजी! हे शिव-शंभु!' पैडल पर उसके पैर ऐसे पड़ रहे थे जैसे हवा में साइकिल को उड़ा ले जाएगा। उसको हँफनी लग गई थी। पर वह हवा से होड़ लेता ही रहा... वहाँ गाँव के बीचोंबीच पहुँच चीख पड़ा। वे दोनों गिरे पड़े थे। खून से लथपथ! पनरह साल का सेंगरा तक रमुली के पेट पर लात पर लात जमाए जा रहा था। एक अजीब आनंद का माहौल! चीखना-चिल्लाना... उल्लास! वह सहम गया, 'दरोगा बाबू, आओ न!'

पुलिस की वर्दी को बारंबार प्रणाम करता वह प्रार्थना में लीन होता जा रहा था। 'दरोगा बाबू, बचा ले दीदी को। हे दरोगा!... जल्दी...जल्दी...' आँख से धारदार बारिस! ढर-ढर लोर! वह पास जाना चाह रहा है। छीन लेना चाह रहा है सबके हथियार। खींचकर लाना चाह रहा है पुलिस को। लेकिन एकदम बेबस! कुछ नहीं सूझ रहा है उसको। 'हे पुलिस देवा? आप ही बचा सकते हैं दीदी को...'

वह गच्छने लगा देवी-देवताओं को पाँच-दस रुपये! दम भर पीटकर सब अलग हो चुके थे। वे दोनों लाश की तरह पड़े थे। पूरे इलाके में गर्म धूल उड़ने लगी थी। फिर सन्नाटा! घनघोर सन्नाटा! शाम गहराने लगी कि साइरन की आवाज से पूरा गाँव थर्रा उठा। पुलिसिया डंडे, गालियों की बौछार! उचित कार्रवाई के बाद दोनों को अस्पताल में एडमिट कर दिया गया। चंद सांसें बची रही थीं। कब तक बचतीं, बचतीं भी या नहीं, बची रहतीं भी तो कितना और कुछ बचा पातीं, कहना सच में कठिन!

डाक्टरों ने कहा भी, 'हम इन्हें एडमिट कर लेते हैं। बट नो होप! मेनी बोन्स, टिशू, मसल्स आर ब्रोकेन। हेड इंज्यूरी भी है। थोड़ा पहले आना था।' 'थोड़ा पहले? थोड़ा पहले कैसे आते सब?' किशोर अब भी साथ था। वह उलझ गया। आई सी यू की भीड़! न केवल मरीजों की, मरीज के कई रिश्तेदारों की भी हर बेड पर चिपके तीन-चार परिजन! आई सी यू के नाम पर कलंक! एक भी सीट खाली नहीं न महिला वार्ड, न ही पुरुष वार्ड में। आनन-फानन में एक मरीज को साइड कर उसी बेड पर पवनवा को डाला गया और स्टैंड लगाकर जेल्को चिपकाकर सलाइन की बोतल लगा दी गई। रमुली को अंदर जगह नहीं मिल पाई। उसका भी तत्काल इलाज जरूरी था। 'अभी इन्हें जनरल वार्ड में ही रखते हैं। खाली होते ही आई सी यू में शिफ्ट...'

'हाँ इलाज शुरू कर दीजिए पहले फिर...'

'यह टेम्परारी अरेंजमेंट है, बस बेड खाली होते ही...'

'कोई बात नहीं।'

रमुली को जमीन पर बिस्तर लगाकर ही सुला दिया गया। बेहोशी गहरी थी। पूरा शरीर सूजा हुआ। उसका चेहरा सूजा, शरीर डरावना, हाथ की नसों को मुश्किल से ढूँढ़कर इंजेक्शन दिया जा सका। फिर सलाइन चढ़ाया जाने लगा। उस किशोर को गरवाले आने नहीं दे रहे थे। उसने जिद ठान ली थी। उसी ने सलाइन की बोतल हाथ में थाम ली। स्टैंड भी कम था। कई स्टैंड, कई क्वार्टर की मसहरियों का सहारा बनाए गए थे। नर्सों की पोशाकों की झकाझक सफेदी इधर-उधर झलकने लगी। थोड़ी देर बाद 'आह!', एक निरीह कराह! रमुली ने पलटने की असफल कोशिश की, उसका पोर-पोर दुख रहा था। सारा शरीर नीला पड़ गया था। कहाँ-कहाँ से हड्डियाँ चटक गई थीं। वह समझ नहीं सकी। उसे यह भी अनुभव नहीं हो पा रहा था कि उसके साथ हुआ क्या? वह है कहाँ? वह नीम बेहोशी में थी।

'आपको किसने मारा है?' 'बताइए क्या हुआ था? आप पूरी घटना का ब्यौरा दीजिए।' एक पुलिसवाले के हाथ में कागज था। वह उसपर लिखने को उद्यत! कराह के बाद रमुली

की आँखें बंद होने लगी थीं। पुलिसवाला बेताब होने लगा। 'नर्स... नर्स, डाक्टर को बुलाइए। इन्हें होश में लाइए जल्दी। मुझे इनका बयान दर्ज करना है।'

उसे इनका तनिक भी अफसोस नहीं था कि एक व्यक्ति की साँसें बंद हो रही हैं। वह बस अपनी ड्यूटी पूरी करना चाहता था। 'नर्स इन्हें जिलाओ... पहले ही मीडिया ने कम फजीहत नहीं की है। अब...', उसकी हड़बड़ाहट भी रंग नहीं ला रही थी। रमुली को होश नहीं आ रहा था। उधर पवन के पास दूसरा पुलिसवाला विराजमान था। वहाँ से भी निराशा हाथ लगी। फिर आने की बात कहकर वे चले गए। पुलिसवालों की उपस्थिति से अस्पताल में आई फुर्ती सुस्ती में बदलती चली गई।

'पानी...पानी', रमुली फिर बेहोश! उन दोनों के न आगे नाथ, न पीछे पगहा था। कोई देखनेवाला नहीं। दोनों पुलिसवालों की कृपा से हॉस्पिटल तो पहुँच गए थे। पर सबके मनमाने व्यवहार की मार झेल रहे थे। रमुली अकेली पट्टियों से बंधी पड़ी थी। कहाँ कौन सी पट्टी किसलिए लगी है, खुद नर्स भी बताने की स्थिति में नहीं थी। अनाथ रमुली के मुँह, हाथ-पैर सबके ऊपर मक्खियाँ भिनभिनाने लगी थी।

रात गहराती रही, वह कराहती रही। थोड़ा एहसास जाग रहा था। कभी-कभार मक्खियों की तरह भिनभिनाते लोग! चारों ओर भिन भिन! उसे लगा, पैरों के पास कुछ है। उसने पैर खींचना चाहा। तनिक हिला भी नहीं पाई। वह मस्ती से उसके शरीर पर अठखेलियां करता आगे बढ़ता रहा। बेहोशी की गहराई में किसी के रेंगने का एहसास! वह अपने हाथ-पैर सारे अंग सिकोड़ लेना चाहती है, नहीं सिकोड़ पाती। कोई हटा दे वह भी नहीं हो पाता। वह चूहा ही था बड़ा! बहुत बड़ा! खाया, पिया, आघाया हुआ दम भर।

'हुस्स!' ... सब 'फुस्स!' 'हुस्स!'... असफल कोशिश! उसके मुँह के पास आकर नाक को कुतरने लगा। दर्द का असर रग रग में था। वह इस नए दर्द को बहुत थोड़ा ही महसूस कर पाई। चिल्लाकर रोने की इच्छा हुई... उठकर भाग जाने की इच्छा हुई। भगवान को पुकारने की भी इच्छा हुई। सब अकारथ ... व्यर्थ! भिनभिनाहट बढ़ रही थी। भिन!...भिन!! रमुली के पूरे बदन-मन पर भर रात और मक्खियाँ भिनकती रही थीं।

'हुस्स!...हुस्स!!' उसने फिर सर... फिर हाथ... फिर-फिर- फिर हाथ हिलाना-झटकना चाहा। व्यर्थ... सब प्रयास व्यर्थ! सवेरे डंडे में बँधे झाड़ू को लेकर सफाई करने स्वीपर आ पहुँचा। एक कोने से फर्श को चमकाता वह वहाँ तक गया। 'ऐई! पैर समेटो, इधर पोछा करना है।' रमुली थक गई है। रमुली बेहद थक गई है। रमुली बेसुध। 'अरे, हटाओ जल्दी। मेरे पास टेम नय है।' रमुली तब भी चुप! उसने रमुली का पैर उठाकर बेड पर करना चाहा। 'ई का? सिवरतन, ऐई सिवरतन! इधर आओ जल्दी।' 'का चिल्ला रहा है। देख नहीं रहा। हम बिजी हैं।' 'पहिले हिंया आओ।'

सिवरतन ने हाथ में थामे पैन को वहीं रखा और जमीन पर पड़ी रमुली के पास पहुँचा। पल भर में खबर दावानल बन पूरे अस्पताल में फैलने लगी- 'एक मरीज का मुँह-नाक मूसा खा गया। पूरी देह में काट दिया है।'

'है भी तो किलो - किलोभर का चूहा। एक नहीं पचासों रात गहराते ही ...'

'है कोय देखनेवाला? इयाद है एक बच्चा का पूरा पैर मूसा काटकर खा ...'

'चुप्प!...चुप्प!... चोप साले !!!' एक दबंग जिम्मेदार आवाज ने कमजोर आवाजों को दबा देना चाहा। आनन-फानन में उसके हाथ में लगे जेल्को, निडिल, जमीन पर रखे सलाइन को हटा दिया गया। जल्दी से उस पर उजली चादर डाल उसे वहाँ से तहखाने में बने शवगृह भेज दिया गया। अस्पताल प्रबंधन मामले को छिपाने-दबाने, खरीद-फरोख्त करने में लग गया।

उधर पवन ने कुछ नहीं सुना। कुछ नहीं समझा, धुंधली याद, इमली का पेड़, पेड़ के नीचे मारो... काटो...गंधा दिया... लातम...जुतम! आह!...उह!...पुलिस...साइरन!...बहुत खून... खूने-खून! लाल धरती मइया...! उजर-उजर कपड़ा... एप्रन... डाकडर... नरस... दवाई... तेज गंध... और... और?...

दोस्तों का पुस्तैनी धंधा छोड़ने का इसरार!... सपना एक छोटी दुकान आंजनगरम में... दुकान में ढेर सारा सामान... बढ़ते गिराहक... दुकान में लाल साड़ी में दप! दप! सिंदूर लगाए बैठी रमुली और वह एक साथ फिर से अच्छी कमाई... अच्छे दिन, बीते दिनों की याद दिलाता खूँटी पर लटका जाल...

अचानक पानी में जलकुंभी... जलकुंभी में फँसता-डूबता जाता वह और रमुली...

'कहाँ है रमुली? का किया सब लोग उसके साथ?' बेहोशी टूटते ही उसकी छटपटी दोगुनी! दर्द की एक तीखी लहर उसके रोम-रोम को दहलाने लगी। न सांस ले पा रहा है, न ज्यादा सोच-समझ पा रहा है। उसका सारा शरीर ऐंठ रहा है, मन भी। वह तालाब से बाहर निकल नहीं पा रहा है... फँस रहा है। फँसता जा रहा है। वह फिर बेहोश! बुझते दिये की लौ बन गया वह।

उसकी डूबती साँसों को बचाने की असफल कोशिश में जुट गए डॉक्टरों के दल ने एक स्वर में कहा - 'एडमिट करने में बहुत लेट हुआ। पेशेंट बच सकता था। यह अब चंद मिनटों का मेहमान है। वी ट्राइड अवर बेस्ट।' और वे आगे बढ़ चले।

- 401-ए , समृद्धि एलिगेंस
चौबे पथ, अनंतपुर
रांची, झारखंड-834002

लेख

संगठनात्मक विकास और व्यक्तित्व

- श्री गोपाल -

प्रकृति ने मानव के मस्तिष्क में चिंतन का भाव भरकर उसके हाथ में एक ऐसा अस्त्र थमाया है कि वह जब ठान ले तब ईश्वर को भी चुनौती दे सके। भारत में ऐसी कई कथाएँ प्रचलित हैं, जिनमें मानव ने ईश्वर को चुनौती ही नहीं, बल्कि परास्त भी किया है। इन कथाओं की प्रमाणिकता कितनी है, इसे बताना तो कठिन है, परंतु इस बात को स्वीकार करना आसान है कि मानव अपनी कल्पनाओं अथवा चिंतन के माध्यम से सर्वशक्तिमान के ऐश्वर्य को भी चुनौती देने का भाव रखता है।

सकारात्मक दृष्टि से यदि उपरोक्त कथाओं पर चर्चा की जाए तो इस मुद्दे पर एक विशद अध्ययन की संभावना बनती दीख रही है। लेकिन इस लेख के माध्यम से मानव मस्तिष्क के स्तरों व उसकी सामान्य जरूरतों के प्रति झुकाव के स्तर तथा अपने दायरे में रहकर कोई व्यक्ति अपने संगठन व संस्था के लिए कैसे उपयोगी हो सकता है, इन बातों पर विचार करना अच्छा होगा।

जब मनुष्य की इच्छाओं की बात की जाती है तो प्राय: ऐसा सुनने के लिए मिलता है कि उसकी इच्छाएं अनंत हैं और वह कभी संतुष्ट नहीं होता। यह बात लगभग सत्य भी प्रतीत होती है, लेकिन मनोवैज्ञानिकों ने बताया है कि मानव मस्तिष्क में इच्छाओं के पांच स्तर होते हैं, जिनके माध्यम से मनुष्य अभिप्रेरित होता है तथा अपने सभी क्रियाकलापों को अंजाम देता है।

पहले स्तर में मनुष्य अपने शरीर की आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु अभिप्रेरित होता है और तदनुसार उसे करने का प्रयास करता है, अर्थात वह शरीरजन्य आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करता है। इस स्तर पर मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकाताओं को ही ढूंढ़ने के लिए अभिप्रेरित रहता है और रोटी, कपड़ा एवं मकान आदि की समस्याओं से जूझता है। यह अभिप्रेरणा जानवरों में भी होती है। लेकिन इस स्तर पर विशेष आदतों एवं संवेदनाओं का विकास कम होता है।

दूसरे स्तर में मनुष्य को अपनी सुरक्षा की आवश्यकता महसूस होती है और वह ऐसा प्रयास करता है कि अपने जन्म-जन्मांतर तक के लिए अपने व अपने प्रियजनों को सभी तरह से सुरक्षित कर ले। ऐसा माना जाता है कि यह मानव मस्तिष्क द्वारा रची गई पहली आवश्यकता की अंतर्जाल है। इस स्तर पर मानव यह सोचना आरंभ कर देता है कि आज के लिए तो मेरे पास है, किंतु क्या कल के लिए मेरे पास कुछ है? अर्थात मनुष्य संसाधनों से अपने आप को समृद्ध करने लगता है, और कई पीढ़ियों तक के लिए अपने आप को सुरक्षित करने का प्रयास करता है। इस क्रम में उसकी मानसिकता एवं क्रियाकलापों में कई तरह की विशेषताएँ आ जाती है। प्राय: यहाँ से विशेष अनुभूतियाँ, संवेदनाएँ और आदतें जन्म लेती है। इन्हीं अनुभूतियों, संवेदनाओं और आदतों के अनुरूप व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण होता है। उसके आचरण का समाज में मूल्यांकन होने लगता है और क्योंकि उसके आचरण का प्रतिबिंब समाज पर भी पड़ता है तथा समाज उससे प्रभावित होता है, ये अनुभूतियाँ, संवेदनाएं और आदतें परिस्थितियों के अनुसार सकारात्मक या नकारात्मक दोनों प्रकार की होती हैं।

मनुष्य जब अपनी इच्छाओं के तीसरे स्तर में पहुँचता है, तो उसके मन में सम्मान की आकांक्षा जन्म लेती है, क्योंकि अब वह ऐसा सोचने लगता है कि वह हर तरह से सुरक्षित हो चुका है, और लोग व समाज उसे एक सफलतम व्यक्ति के रूप में देखें, अर्थात इस स्तर पर मनुष्य अपने आप को सम्मानित देखना चाहता है। उसके अंदर प्रेम, करुणा, दया, जैसी सभी मानसिक संवेदनाएँ अपना घर बनाती हैं और उसकी अभिरुचि आर्थिक उपार्जन के साथ-साथ समाजिक सम्मानोपार्जन की ओर बढ़ती जाती है। इस स्तर पर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए महत्वाकांक्षी बनता है, जिसके लिए नाना प्रकार की क्रियायें करता है।

> जब व्यक्ति 'मन से मन का आकर्षण' के स्तर को प्राप्त कर लेगा तो वह बाहर से नहीं, बल्कि स्वयं अपने आप से संचालित होने लगेगा। वह किसी अभिप्रेरणा अथवा प्रोत्साहन की प्रतीक्षा नहीं करेगा। स्वयं अपने भीतर से संचालित होने से व्यक्ति के बेहतर सामाजिक स्तर का निर्माण भी होगा। समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, अर्थात व्यक्तिगत स्तर पर उसकी इच्छाओं और आकर्षण के स्तर में बिना दिग्भ्रमण के विकास होगा।

इस स्तर पर मनुष्य के व्यक्तित्व के साथ-साथ उसकी अनुभूतियों, संवेदनाओं और आदतों का भी समानुपाती विकास होता है। उसके व्यक्तित्व से समाज में भी परिवर्तन आने लगता है। उसे देख अभिप्रेरित होने वाले लोग तो उससे संपर्क में रहने का प्रयास करते ही हैं, अपना उल्लू सीधा करने के लिए चाटुकार लोग भी उससे जुड़ने लगते हैं, जिसके फलस्वरूप वह अपनी प्रतिष्ठा प्रतिष्ठापन के मद में सही और गलत का निर्णय लेने में विचलित होने लगता है और कभी-कभी तो वह विफल भी होता है। इस स्तर पर संवेदनशीलता सुदृढ़ता से

उसके भीतर अपना घर बना लेती है। वैसे तो मनुष्य के मस्तिष्क में अहंकार दूसरे स्तर पर ही अपना स्थान बना लेता है पर वह झूठा अहंकार होता है। इस स्तर पर मनुष्य को अपने छोटे-मोटे लाभ के लिए अहंकार को त्यागना पड़ता है। लेकिन तीसरे स्तर में वह उच्च अहंकार से भी ग्रसित होने लगता है।

मानव अपनी इच्छाओं के चौथे स्तर पर आते-आते आत्मसम्मान की पराकाष्ठा से परिपूर्ण हो जाता है और स्वयं ही स्वयं को महान समझने लगता है, क्योंकि इस ऊँचाई पर आकर व्यक्ति आत्मसम्मान की भावना से ग्रसित होता है, क्योंकि उसे उपलब्धि, अधिकार, स्वतंत्रता और सामाजिक सम्मान हासिल रहता है और वह उन्हें बरकरार रखने के लिए संघर्ष करता है। इस स्तर पर व्यक्ति अतिसंवेदनशील होता है और थोड़ी सी ठेस से वह बहुत आहत होता है। ठेस बर्दाश्त करना उसके लिए बहुत बड़ी समस्या बन जाती है, अर्थात ठेस उसे बड़ा नुकसान पहुँचाने की ताकत रखने लगती है। वह अपनी उपलब्धियों के प्रति अति सचेत हो जाता है। उसे प्रतिस्पर्धा में विजयी होना आनंददायक प्रतीत होता है, परंतु अपने सामने किसी प्रतिस्पर्धी को देखना भी नहीं चाहता। इसके लिए वह कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता है। स्पर्द्धा में असफल होने पर वह आत्महत्या भी कर सकता है। एडोल्फ हिटलर का जीवन इसका एक प्रबल उदाहरण है।

जब मनुष्य इच्छाओं के पाँचवे स्तर पर पहुँचता है तो वह उसको आत्मयथार्थीकरण हो जाता है। अर्थात अब वह वास्तव में भीतर से संचालित होने लगता है। वह जीवन के उद्देश्यों को पूरा कर लेने की स्थिति में अपने आप को स्थापित कर लेता है। वह ईश्वर के साथ मिलकर कोई सह-रचना करने लगता है। बुद्ध, नानक, चैतन्य महाप्रभु एवं रामकृष्ण परमहंस आदि इस स्तर को प्राप्त किये हुए लोग हैं। कवियों, लेखकों, चित्रकारों या संगीतकारों आदि जैसे उच्च बुद्धिजीवियों को भी बिना कुछ खाए-पिए साधना करते बहुतायत देखा जाता है। अपनी साधना के दौरान वे संज्ञाशून्य भी दीखते हैं, अर्थात वे भूख-प्यास जैसी शरीरजन्य आवश्यकताओं से परे हो जाते हैं, जिसे अध्यात्म में समाधिस्थ होना माना जाता है।

इसी बात को गौतम बुद्ध अपने प्रवचनों में कुछ इस प्रकार से बताते थे, 'समाधि से दु:ख का अंत! सभी दु:खों का अंत! समाधि के बाद न कोई पीड़ा रह जाती है, न कोई दु:ख, न कोई वेदना, न क्रोध, न अंतर्पीड़ा, न घृणा, न भय, न कोई अंतर्विरोध, न ही कोई विद्रोह। और इनके साथ ही छोटी-छोटी कामनाएँ, आशाएँ, सुख, क्षणिक उत्तेजनाएँ, प्रेम, अपेक्षाएँ, इच्छाएँ भी स्वयं ही लुप्त हो जाती हैं। तब अंतर्चेतना में चलने वाली विचार श्रृखंला से छुटकारा प्राप्त हो जाता है और उसके स्थान पर एक नव चेतना उत्पन्न होती है, जो स्थितप्रज्ञ और दृढ़ होती है तथा वर्तमान को वास्तविक रूप में देखने के लिए सक्षम होती है। इस मानसिक अवस्था में आंतरिक शांति और मानसिक संतुलन चिरस्थायी होता है। भूत और भविष्य इस अवस्था को प्रभावित नहीं कर पाते। समय और भेद इस स्थिति में मिलकर एक हो जाते हैं, जो कि पूर्ण रूप से वर्तमान में स्थित होते हैं। यही वास्तविक मुक्ति है। यह मुक्ति है संसार के तमाम व्यक्तियों, नाते रिश्तों, वस्तुओं, इच्छाओं और आशाओं, स्वयं के अहंकार से। जीवन और मरण से। यह संसार के समस्त बंधनों से मुक्ति है।'

परंतु ऐसी दिव्य मुक्ति ऐसे ही संभव नहीं है। इसके लिए आवश्यकता है असीमित साहस, दृढ़ निश्चय, सहनशक्ति, इच्छाशक्ति और अनुशासन की। इसके साथ-साथ आवश्यकता है अहंकार शून्यता, विनय, समर्पण और प्रेम की। केवल चातुर्य से यह मुक्ति संभव नहीं है। इस क्षेत्र में सत्ता, दलाली, धन बल, और जान पहचान, आदि सांसारिक नुस्खे सभी व्यर्थ हैं। इसके लिए तो स्वयं के आंतरिक बल, आत्मबल और सामर्थ्य के सिवा सब कुछ बेकार है। इस स्तर पर सांसारिक दास को सब कुछ प्राप्त हो जाता है, जो स्वामी को कभी प्राप्त नहीं हो सकता। इस मुक्ति को ही सांसारिक लोग मोक्ष या निर्वाण कहते हैं और इसी व्याख्या को मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक लोग आत्मबोध या आत्मदर्शन के नाम से संबोधित करते हैं।

ऊपर की व्याख्या के अनुसार सामान्य लोग दूसरे या तीसरे स्तर पर आकर ठहर जाते हैं और चौथे पड़ाव पर कुछ प्रतिबद्ध महत्वाकांक्षी लोग ही पहुँचते हैं, सकारात्मक या नकारात्मक दोनों ही प्रवृत्तियों के हो सकते हैं। पाँचवा स्तर तो अध्यात्मिक उद्देश्य की प्राप्ति है। व्याख्या को देखने से लगता है कि जीवन पद्धति एवं ज्ञान में जैसे-जैसे बढ़ोत्तरी होती है, वैसे-वैसे मनुष्य की अनुभूतियाँ, संवेदनाएँ और आदतें विकास की ओर अग्रसर होती जाती हैं। इस विकास यात्रा में हमारी अनुभूतियों, संवेदनाओं और आदतों में नकारात्मक संवेदनाएँ जैसे छल, कपट, अंहकार

और महत्वाकांक्षा भी विकसित होती रहती हैं, जिनका हमें निवारण करते रहना होता है। लेकिन देशकाल परिस्थिति के अनुरूप मनुष्य उसे बढ़ने या घटने देता है।

मनुष्य की इच्छाओं के विभिन्न स्तरों के संबंध में चर्चा करने के पश्चात, अब उसके आकर्षण (झुकाव) के स्तर को जानना आवश्यक है। प्राय: ऐसा देखा जाता है कि कोई व्यक्ति हमेशा अर्थोपार्जन में तल्लीन रहता है। उसे अपनी सुख-सुविधाओं हेतु व्यय करने में भी हिचकता है, और समाज में उसे कंजूस जैसी उपाधियाँ प्राप्त हो जाती हैं। इसी प्रकार कोई व्यक्ति अपने स्वास्थ्य को लेकर अनावश्यक चिंतित रहने लगता है। उसे अपनी मृत्यु बहुत निकट अथवा उसका बहुत बड़ा अनिष्ट होने वाला है ऐसा प्रतीत होने लगता है, तो उसे शंकालु के रूप में देखा जाने लगता है।

उपरोक्त बातें इस बात की ओर संकेत करती हैं कि अमुक व्यक्ति के आकर्षण स्तर में असामान्य स्थिति पैदा हो गई है। आकर्षण मानव अभिप्रेरणा का मुख्य कारण है। आकर्षण के कारण ही मनुष्य किसी कार्य को करने के लिए अभिप्रेरित होता है। यदि मनुष्य को भूख नहीं लगती तो वह खाने की ओर क्यों आकर्षित होता और यदि खाना मिल गया हो तो फिर अच्छे व स्वादिष्ट भोजन की ओर क्यों उन्मुख होता है?

इसी संदर्भ में आकर्षण के मुद्दे पर मनोवैज्ञानिक तरीके से प्रकाश डालना आवश्यक है। मनोवैज्ञानिकों ने आकर्षण को चार भागों में बांट कर उसका व्यापक अध्ययन किया है। सबसे पहला स्तर 'द्रव्य से द्रव्य का आकर्षण' को माना जाता है। मान लीजिए आपके पास बहुत धन है तो आपके धन से आकर्षित होकर आपसे संबंध बनाने वाले लोग 'द्रव्य से द्रव्य का आकर्षण' के सिद्धांत से अभिप्रेरित होते हैं। उन्हें आपके बुद्धि चातुर्य या रूप-रंग आदि से कोई खास लगाव नहीं होता। जिस दिन आप धनविहीन हो जाएँगे आपसे आकर्षण समाप्त हो जाएगा। अर्थात द्रव्य गया आपका चुंबकत्व समाप्त हो गया।

इसी सिद्धांत के दूसरे स्तर में 'तन से तन का आकर्षण' आता है। यह सिद्धांत मनुष्य के दैहिक आकर्षण की स्थिति को परिभाषित करता है। इसके अनुरूप प्राय: रूप-लावण्य या बाहरी सौंदर्य से व्यक्ति किसी के प्रति आकर्षित होता है। ऐसी स्थिति में कामेच्छा को सर्वोपरि माना गया है, लेकिन कई बार इससे इतर भी उदाहरण मिल जाते हैं। जैसे किसी के परिधान को देख कोई आकर्षित होता है, तो कभी कोई किसी के नयन-नक्श को देखकर आकर्षित होता है। अध्यामिक रूप से इस आकर्षण को निम्न स्तरीय माना जाता है, लेकिन संसार के विकास में इसका बहुत हाथ होता है।

तीसरा स्तर 'मन से मन का आकर्षण' से जुड़ा है। यह ऐसा लगाव है, जिसे कभी-कभी वास्तविक लगाव के रूप में देखा जाता है। हालांकि वास्तविक लगाव या प्रेम यही है, यह कहना मुश्किल है। क्योंकि यह प्रगाढ़ तो होता है, पर जरूरी नहीं है कि चिरस्थायी हो। इस स्तर पर कभी-कभी तो लगाव के कारण वास्तविकता से भी दूर चले जाना पड़ता है और अतिरेक के कारण गलतियाँ भी हो जाती हैं। फिर भी यही स्तर जनसाधारण के लिए उत्तम स्तर है। लगभग सारी दुनियादारी इसी स्तर पर ठीक-ठाक से चलाई जा सकती है।

आकर्षण का आखिरी सिद्धांत 'आत्मा से परमात्मा का आकर्षण' की वकालत करता है। इस स्तर पर मनुष्य सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर परम तत्व में विलीन होने की स्थिति में पहुँचता है। अब मनुष्य में ईश्वर तत्व आ जाता है, अर्थात वह सांसारिक मोहमाया से मुक्त होकर पारलौकिक तत्वों में ही मग्न रहने लगता है, जो दुनियादारी से परे हो जाता है। इस श्रेणी में भगवान बुद्ध, नानक, विवेकानंद, चैतन्य महाप्रभु एवं दुनिया के अन्य कई महापुरुष आते हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व को विकसित करते हुए इस आखिरी स्तर को प्राप्त किया।

इच्छाओं और आकर्षण के विश्लेषण के पश्चात यह जानना जरूरी है कि आखिर उपरोक्त दोनों संवेदनाएँ मानव व्यक्तित्व को कैसे प्रभावित करती हैं? दोनों संवेदनाओं के प्रारंभिक स्तर पर मनुष्य का व्यक्तित्व बाह्य तत्वों से बहुत अधिक प्रभावित होता है। उसके व्यक्तित्व पर उसके आस-पास के समाज की सारी परिस्थितियाँ अपना प्रभाव जल्दी ही बना देती हैं, लेकिन जैसे-जैसे उसकी इच्छाओं और आकर्षण के स्तर में विकास होता जाता है, वैसे-वैसे उसकी उपरोक्त दोनों संवेदनाओं में भी दृढ़ता आती जाती है। इच्छाओं और आकर्षण के कारण ही मानव प्रवृत्तियों का निर्माण होता है और प्रवृत्तियों के व्यवहार में परिवर्तित होने से व्यक्ति की सामाजिक स्वीकार्यता का स्तर अर्थात व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

यहाँ सावधानी इस बात की बरतनी होती है कि मनुष्य किसी एक संवेदना के किसी एक स्तर पर अधिक तवज्जो न दे, अन्यथा उसके व्यक्तित्व के विकास में बाधा उत्पन्न हो सकती है और वह दिग्भ्रमित हो सकता है। उदाहरण के तौर पर आपने देखा होगा कि कोई व्यक्ति थोड़ी सी शोहरत या धन आ जाने पर सामाजिक मान्यताओं के विपरीत असामान्य व्यवहार करने लगता है और उसके व्यक्तित्व का सर्वनाश हो जाता है, साथ ही इस बात पर भी ध्यान देना जरूरी होता है कि मनुष्य उत्तरोत्तर स्तरों पर संवेदनशील से अतिसंवेदनशील बनता जाता है।

अक्सर हम अध्यात्मिक गुरुओं अथवा पुस्तकों के माध्यम से जानते रहते हैं कि माया (तुच्छ आकर्षण), अहंकार, व्यसन आदि जैसे तत्वों से हमें बचना चाहिए, ये अच्छे व्यक्तित्व के

निर्माण में बाधक हैं। अध्यात्मिक गुरु या पुस्तकें भी हमारी इच्छाओं व आकर्षणों के विश्लेषण सिद्धांत की ओर ही इशारा करते हैं। एक व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में जितना योगदान इन दोनों (इच्छाओं एवं आकर्षणों) संवेदनाओं का होता है, उतना शायद किसी और का नहीं होता। इन्हीं के आधार पर बाकी संवेदनाओं का जन्म होता है। इस संदर्भ में भगवान बुद्ध का कथन 'हमारे सभी दुखों का कारण हमारी इच्छाएँ होती हैं', इसी बात को प्रमाणित करती हैं।

बेहतर समाज निर्माण और संगठनों के बेहतर निष्पादन के लिए अच्छे व्यक्तित्व के लोग ही रचनात्मक भूमिका निभाते हैं। सामाजिक बुराइयों का जब हम विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि विकृत इच्छाओं और आकर्षण वाले लोगों के कारण समाज का बहुत नुकसान होता है। उदाहरण के तौर पर दिल्ली में जघन्य दुष्कर्म का मामला हो या उत्तर-प्रदेश के मुजफ्फरनगर का दंगा। इन दोनों घटनाओं के विश्लेषणों से पता चलता है कि इक्के-दुक्के लोगों की विकृत इच्छाओं से जन्मी समस्या से पूरा देश व सभ्य समाज शर्मसार हुआ और प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से देश व समाज का न जाने कितना नुकसान हुआ।

सभ्य समाज और जनसामान्य की अपेक्षा होती है कि समाज में सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहे। लेकिन व्यक्तिगत मानसिकताओं (इच्छाओं व आकर्षण से निर्मित) के कारण सामाजिक नीतियाँ या प्रणालियाँ या नियम कानून कार्यान्वित नहीं हो पाते, जिसके कारण सामाजिक विकास का लक्ष्य दूर हो जाता है।

यही बात संगठनों के मामले में भी सटीक बैठती है। यदि अपने संगठनों में उत्तरोत्तर विकास देखना है, तो संगठन से जुड़े कार्यबल की इच्छाओं और आकर्षणों के प्रति सचेत रहना होगा तथा उनकी इच्छाओं और आकर्षण में एकरूपता लाने का प्रयास करना होगा। प्राय: संगठनों में दूसरे या तीसरे (तीसरे स्तर के बहुत कम) स्तर की इच्छाओं और पहले स्तर के आकर्षण से जुड़े लोग अधिक होते हैं, जिसके कारण उनमें स्वयं के विकास की धारणा तो प्रबल होती है, लेकिन संगठन से उनका भावनात्मक जुड़ाव मात्र 'द्रव्य से द्रव्य का आकर्षण' सिद्धांत के स्तर का ही रहता है। इसी लिए प्रबंधन गुरु बार-बार इस बात पर जोर देते हैं कि संगठनों में काम करने वाले लोगों को संगठन से भावनात्मक रूप से जोड़ना चाहिए। भावनात्मक रूप से जोड़ना, अर्थात आकर्षण के स्तर को बढ़ाना होता है। जब व्यक्ति 'मन से मन का आकर्षण' के स्तर को प्राप्त कर लेगा तो वह बाहर से नहीं, बल्कि स्वयं अपने आप से संचालित होने लगेगा। वह किसी अभिप्रेरणा अथवा प्रोत्साहन की प्रतीक्षा नहीं करेगा। स्वयं अपने भीतर से संचालित होने से व्यक्ति के बेहतर सामाजिक स्तर का निर्माण भी होगा। समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, अर्थात व्यक्तिगत स्तर पर उसकी इच्छाओं और आकर्षण के स्तर में बिना दिग्भ्रमण के विकास होगा।

वास्तविकता यह है कि व्यक्ति के रचनात्मक कार्यकलाप ही उसके व्यक्तित्व में निखार लाते हैं, जिनके कारण वह अपनी अभिरुचि को प्रदर्शित कर पाता है और उस अभिरुचि के निर्माण में उसकी इच्छाओं और आकर्षण स्तर की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

वर्तमान समाज में यह आम धारणा बन गई है कि सरकारी संगठनों के लोग प्राय: ठीक से काम नहीं करते या फिर भ्रष्ट होते हैं। इस बात में कुछ सच्चाई हो सकती है। लेकिन यह भी सच है कि काम न करने की प्रवृत्ति कहीं भी हो सकती है। क्योंकि समाज या संगठन में स्वयं अभिप्रेरित लोगों की संख्या कम होती है। इसलिए यह समाज और संगठन का दायित्व होता है कि स्वयं भीतर से संचालित होने वाले सकारात्मक प्रवृत्ति के लोगों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि करें, ताकि समाज, संगठन और स्वयं व्यक्ति तीनों का समग्र रूप से विकास व अभिवृद्धि हो सके।

संगठनों में नियुक्तियों के समय अभ्यर्थियों पर प्राय: मनोवैज्ञानिक आधार पर कई प्रकार के परीक्षण किए जाते हैं। फिर उन्हें उनका काम बताकर छोड़ दिया जाता है। इससे व्यक्तिगत आजादी तो मिलती है, लेकिन कई अपरिहार्य कारणों से संगठनात्मक जुड़ाव कम होता जाता है। शुरुआती दौर में ही शिक्षण और प्रशिक्षण के माध्यम से कार्यबल की इच्छाओं और आकर्षण में वृद्धि करना चाहिए, ताकि नवनियुक्त के मन में अपनत्व का भाव चिरस्थायी हो सके और वह सकारात्मक राह से भटके बिना संगठन के उद्देश्य के लिए उपयोगी रहते हुए समाज में स्वयं को अच्छे व्यक्ति के रूप में स्थापित कर सके। उसे शिक्षित व प्रशिक्षित करके इस स्तर पर ला देना चाहिए कि वह अपने भीतर झाँकने लगे और अपने आप से प्रश्न करने लगे कि 'मैं संगठन और समाज के लिए कितना उपयोगी हूँ?'

भगवान बुद्ध भी अंर्तदृष्टि प्राप्ति के पश्चात अपने सभी प्रवचनों में लगभग एक बात जरूर कहा करते थे। वह वाक्य इस प्रकार हुआ करता था 'दुनिया के सफलतम लोगों की सफलता का राज यही है कि उन्होंने अपने जीवन में उद्देश्य प्राप्ति के लिए अपने से प्रश्न किया।'

- वरिष्ठ सहायक (अनुवाद) एवं
उप संपादक, 'सुगंध'
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम
मोबाइल: +91 9989888457

कहानी

किस्सा वाली काकी

– श्री चित्रेश –

दीवाली की अंधेरी रात...करीब आठ बजे थे। मैं अपने खेत, बाग और गाँव के देवस्थानों पर दिये जलाकर लौट रहा था। तभी अपने घर से डेढ़-दो सौ मीटर पहले महाजन की बाग और लम्मरदार के तालाब के बीच की ऊँची समतल जमीन के बगल से गुजरते हुए मेरी टार्च की रोशनी उस ढूह पर पड़ गई... यह ढूह... यानी वह स्थान जहाँ एक साफ-सुथरा छोटा-सा मिट्टी का लिपा-पुता खपरैल घर हुआ करता था। खपरैल के सामने सरपत के छप्पर का ओसारा... उसके आगे नीम के नीचे तुलसी चौरा पर दिया जलाती या फिर दोपहरी में पसीना-पसीना हुई तन्मयता से जड़ी-बूटियाँ कूटती-छानती वृद्धा... मझौला कद, गेहुँआ रंग, झुर्रियों से भरा चेहरा, सन जैसे बाल और ममता से भरी चमकदार आँखें...यह थीं काकी! गाँव में तब कई काकियाँ थीं। इनकी अलहदा पहचान के लिए हम हर एक काकी के साथ अलग-अलग विशेषण लगा देते थे। यह काकी हमारे बीच 'किस्सा वाली काकी' के नाम से जानी जाती थीं... यह सब एकबारगी मेरी स्मृति-पटल पर उभर आया... इस काकी के लिए हमारे मन में बड़ा सम्मान था और उनका घर हमारे लिए किसी देवस्थान या स्कूल से कम नहीं था। न चाहते हुए भी मुझे रुक जाना पड़ा। मन को कोई प्रेरित करने लगा – 'जैसे कभी अंधेरे में खड़ी प्राइमरी स्कूल की इमारत में दिया जलाया था, वैसे ही आज यहाँ भी...'

स्कूलवाला वाकया कुछ यूं है, मैं अपने बाग में दीवाली का दिया रोशन करके लौट रहा था कि घुप्प अंधेरे में खड़े प्राथमिक विद्यालय के सामने ठमक गया... मन में विचार आया – 'लोगों की जिंदगी में उजाला भरनेवाली संस्था अंधेरे में... यहाँ से निकले लोग देश से लेकर विदेश तक आबाद हैं। बाहर से तो कोई इस जगह दिए रखने आने से रहा। मगर मेरे जैसे दर्जन भर तो गाँव में मास्टर ही होंगे, यही एक-एक दीपक... और उस रात मैंने विद्यालय के मुख्य दरवाजे के सामने एक दीपक प्रज्ज्वलित कर दिया था...

वह स्कूल था, सार्वजनिक स्थान...! बाकी अपनी चल-अचल संपत्तियों, धार्मिक-सांस्कृतिक स्थानों पर तो दीवाली के दिये जलाये ही जाते हैं। मगर यहाँ... यह ढूह, जो काकी की घरूही का टीला है... इसपर न मेरा मालिकाना हक है और न यह सार्वजनिक श्रद्धा से जुड़ा स्थान है। इसीसे मन आगा-पीछा कर रहा था। अभी मैं दीपक रखूँ और कोई देख ले तो बात का बतंगड़ बनते देर न लगेगी। फिर सबेरे ही सवाल खड़ा हो जाएगा-'क्यों मास्टर, यह जगह आपके घर के पास है तो इसे हड़पने का इरादा बना बैठे? नहीं तो फिर किस हैसियत से दिया रखने गए?'

मगर दिल था कि मान नहीं रहा था, बार-बार आंतरिक प्रेरणा हो रही थी – 'याद करो, पैंतालीस-पचास साल पहले का समय... तब यहाँ से जुड़ी खुशियाँ और उमंग...'

इस बीच मैं दो-तीन बार टोह लेनेवाली नजर से बस्ती की तरफ झाँक चुका था...उधर लोगों ने चहार दीवारी, छत और बारजों पर दीपक सजा रखे थे। पटाखे, फुलझड़ियों, राकेट वगैरह का खूब धूम-धड़ाका और जगमगाहट भी हो रही थी। महाजन की बाग के किनारे पुराने कुएँ पर कुछ दिए टिमटिमा रहे थे। सामने मेरे अपने घर की छत और हाते पर मोमबत्तियों की झिममिलाहट थी। इधर एकदम अंधेरा और सुनसान था। इससे मन को बल मिल गया – 'कौन यहाँ देखने वाला है? चटपट एक दिया जलाकर रख दो...' कुछ झिझक के साथ मैं झाड़-झंखाड़ के बीच से धीरे-धीरे चलता हुआ ढूह के ऊपर पहुँच गया। झोले से एक दिया निकाला। बत्ती रखी और टार्च की रोशनी में शीशी का बचा-खुचा तेल दिये में पलट दिया। अगले क्षण 'खुर्र..र..र' की आवाज के साथ माचिस की तीली भुक्क से जल गई और दिये की बत्ती से लगाने पर दीपक टिमटिमा उठा...

इसके बाद चकरोड पकड़ कर सशंकित-सा मैं पूरब वाले दरवाजे से अपने हाते में घुस गया। बच्चे और भाई लोग पश्चिम वाले दरवाजे के सामने आतिशबाजी छुड़ाने में लगे थे। उधर खूब हो-हल्ला था, जगमगाहट भी! इधर सुनसान था। मैं फाइबर की एक कुर्सी लेकर हाते के निकास के पास बैठ गया। इत्मीनान से ढूह की तरफ देखा, मेरे जलाए दीपक की थरथराती लौ साफ दीख रही थी...

यह जो किस्सेवाली काकी थीं, बचपन में हम टोले के बच्चों पर उनका खासा असर था। उनकी वजह से ही नागपंचमी बीती नहीं कि हमारा दीवाली का इंतजार आरंभ हो जाता था... जबकि उन दिनों दीवाली में न धूम-धड़ाका होता था, न चमक-

> काकी पर वज्रपात हो गया। अपनी बदमिजाज लड़की से उनको पता नहीं कितना गहरा लगाव था कि वे एकदम 'अबोल' हो गई। वे सदमे से घिरी एकटक आसमान ताकती रहतीं। पूरे गाँव में उनकी पहचान जीवट वाली महिला के रूप में थी। बस्ती में किसी के यहाँ कोई आपदा आ जाती तो वे पूरे परिवार का आत्मबल मजबूत करने के लिए क्या-क्या नहीं करती थीं?

दमक रहती थी। नागपंचमी झूला और कजली लेकर आती थी। इसमें गुड़िया पीटने का खेल और दंगल का आयोजन भी होता था।

होली में रंग-अबीर की धूम रहती। इन पर्वों पर पूड़ी-कचौड़ी, गुझिया जैसे पकवान खाने को मिलते थे। जन्माष्टमी में गाँव के मंदिर में भव्य पूजा-पाठ का आयोजन और कृष्ण की बाल लीला का आयोजन हमें आकर्षित करता था। दशहरे पर पड़ोस के गाँव में मेला लगता और वहाँ खूब बड़े रावण का दहन होता, स्कूल पूरे नौ रोज के लिए बंद होता था। इसलिए हम इसका इंतजार करते थे।

मगर दीवाली के साथ ऐसा कुछ न था। सवेरे गाँव का कुम्हार मिट्टी के दिये और कुछ खिलौने दे जाता था। चीनी गलाकर लकड़ी के साँचे में ढालके बनाई गई पशु-पक्षियों की आकृतिवाली 'चिरई' नाम की मिठाई भी आती थी। यह लाई-चूरा के साथ खाई जाती थी। मुझे यह बिलकुल नापसंद थी। इस त्योहार पर बनने वाला खाना चावल, रोटी और देशी सूरन की सब्जी! यह सब्जी कैसी भी जतन से बनाई जाती, लेकिन जीभ और गलफरो में खुजलाहट पैदा करने से बाज न आती। लिहाजा इसके नाम से ही मुझे चिढ़ लगती थी।

शाम के वक्त बड़े बाबूजी दिये धोकर आँगन में रखते, तेल में बत्तियाँ भिगाते और करीब डेढ़ सौ दियों में बत्ती सजाते थे। पहले वे पाँच दीपक आँगन में जलाते, फिर काका और बड़े भैया लोग दिये लेकर दूर-दराज तक फैले खेतों और बाग की तरफ निकल जाते थे। हम बच्चे लोग आसपास के पेड़, पशुशाला, घर और देवस्थान पर दिये रखते थे। यह शायद ही एक डेढ़ मिनट टिमटिमाते रहे होंगे। देखते-देखते उजाले के नाम पर दरवाजे के सामने जलती लालटेन बचती। सारा परिवेश घुप्प अंधेरे और खामोशी की जकड़न से घिर जाता था।

तब गाँव-घर के सयानों की हिदायत रहती थी कि दीवाली की रात पढ़ाई-लिखाई जरूर कर लेनी चाहिए। हम किताब-कापी खोलकर बैठते जरूर, किंतु पढ़ाई तब हो, जब मन लगे। हम जैसे-तैसे एक-दो सवाल हल करके पढ़ने का शगुन पूरा करते और चुपचाप काकी के ओसारे में पहुँच जाते। काकी मचिया पर बैठी हुक्की गुड़गुड़ा रही होती। उन दिनों गाँव में धूम्रपान के लिए महिलाएँ हुक्कियों का प्रयोग करती थीं। धीरे-धीरे काकी के यहाँ श्रीराम, त्रिवेणी, ठाकुर प्रसाद, शोभाराम वगैरह दस-बारह हमउम्र लड़के आ जुटते। जैसे ही हम में से कोई आता, उन्हें 'पायलागी' करता, वे आशीर्वाद देकर तुरंत पूछतीं-'का बचवा, दियाली के बाद भाई-बाबू का पैर छुए! कुछ पढ़ाई-सिखाई किए?'

'हाँ, काकी', हम सरपट जवाब देते।

वे मचिया खिसका के आराम से दीवाल का टेक लगा लेतीं। हम पुआल का बीड़ा, बोरा, ईंट जो भी मिलता, उसी पर काकी को घेर कर बैठ लेते। काकी का अगला सवाल होता-'हाँ तो बचवा, अब बताओ आए कैसे?'

'किस्सा सुनने।' - हमारा समवेत स्वर में जवाब होता।

वे इत्मीनन से हुक्की गुड़गुड़ाती रहतीं, जब हुक्की के चिलम की तमाखू जल चुकती तो हुक्की कोने से टिका देतीं। कहतीं - 'कैसा किस्सा सुनाऊँ, आपबीती या जगबीती!'

'काकी चाहे जो सुनाएँ, लेकिन देर न करें।' - हमारे बीच से कोई मनुहार करता।

बताना क्या था? काकी के पास दस-पाँच नहीं, पूरा किस्सों का खजाना था। एक से बढ़कर एक परियों की कहानियाँ! राजा-रानी, साहुकार-किसान, जंगली जानवरों, राक्षसों और भूत-प्रेत की गाथाएँ, कई किस्से तो वे गाकर सुनाती थीं, अकबर-बीरबल, गोनू झा, गोपाल भाड़, सरबतिया नाई की बुद्धि के चमत्कार भरे कारनामे! ढेरों किस्से तो चोर, डाकुओं और ठगों के थे। इन किस्सों के चोर-डाकू समाज के सताए लोग होते थे। यह बेईमानी और भ्रष्टाचार की कमाई करनेवालों को चेतावनी देकर लूटने जाते थे। ठगों से तो राजा और निलहे अंग्रेज बहादुर भी डरते थे। यह मानवीय, न्याय प्रिय और सिद्धांतवादी होते थे। यह गरीबों और लाचारों के मददगार थे। इसलिए हमें अच्छे लगते थे। परियाँ दयालु और परोपकारी होती थीं। परेशान लड़के-

लड़कियाँ इनकी मदद पाकर निहाल होते थे। राक्षस दुष्ट थे, तो तमाम शक्ति और सुरक्षा के उपाय के बाद भी पराजित होना इनकी नियति थी। इनकी जान चाहे कैसे भी इस डाल से उस डाल पर फुदकने वाले पक्षी में होती, जांबाज राजकुमार के हाथ उसकी गर्दन तक पहुँच ही जाते थे। इसके अलावा पूत बुलाकी के किस्से, जिसमें एक अचरज भरी घटना पहले होती, फिर उसके कार्य-कारण संबंध की विवेचना काकी इतने मजेदार ढंग से करती थीं कि हमारी सुध-बुध खो जाती थी।

काकी अगर कहानी सुनाने का मामला ज्यादा झुलातीं, तो हम उतावली में टोकते -'काकी'। 'हाँ बचवा, बताओ तो कैसा किस्सा सुनाऊँ?' काकी फिर से पूछतीं।

अंततः हमारी तरफ से ही किस्सा तय होता था। अक्सर हम 'राज-रानी' वाला किस्सा सुनते। ये कहानियाँ हमारी खास पसंद हुआ करती थीं। इनके राजा न्यायप्रिय, बहादुर, प्रजापालक और बुद्धिमान होते थे या फिर घमंडी, मूर्ख और शेखीबाज! दूसरी तरह के राजा लकड़हारा, मछुआरा और डोम जैसे साधारण लोगों से पराजित होते और आधा राज्य तो जीतनेवाले को देते ही! बहन भी ब्याहते तब कहीं जाकर छुट्टी पाते... काकी कहानी शुरू करने से पहले 'हुंकारा' देने के लिए एक लड़के को मुकर्रर करतीं। ज्यादातर इसका जिम्मा श्रीराम पर होता था। इसके बाद वे शुरू हो जातीं - 'एक राजा था। उसके राजकुमार का नाम था - हिम्मतराय! एक दिन वह भौजाई से बोला - 'एक गिलास पानी तो देना।' उसके हुकुम पर भौजाई तुनक जाती है-'तुम तो ऐसे हुकुम चला रहे हो, जैसे मटर-गश्ती करके नहीं, बल्कि फूलकुमारी को ब्याह के लौटे हो!'

हिम्मतराय को बात चुभ जाती है। वह संकल्प लेता है - 'अब इस महल का अन्न-जल तभी ग्रहण करूँगा, जब फूलकुमारी को ब्याह कर लौटूँगा।' वह घुड़साल से एक अच्छा-सा घोड़ा लेकर सवार हो जाता है। घोड़ा सरपट दौड़ने लगता है...शहर, गाँव, खेत, फिर बाग सब पीछे छूटता जाता है...घोड़ा आगे और आगे बढ़ता है...इसी के साथ हमारी जिज्ञासाएँ भी कुलांचें भर रही होतीं...कौन है फूलकुमारी? कहाँ होगी? कैसे पहुँचेगा हिम्मतराय उस तक?

टिमटिमाती ढिबरी के उजाले में हम काकी को घेरे कहानी सुन रहे होते। कहानी के हरेक वाक्य के अंत में श्रीराम एक सधा हुआ 'हूँ' का हुँकार लगाता रहता...शाम के वक्त राजकुमार एक चौराहे पर पहुँचता, वहाँ चेतावनी टंगी होती - 'मुसाफिर होशियार, पूरब जाओ, पश्चिम और उत्तर जाओ। मगर दक्षिण की राह हर्गिज न पकड़ो। खतरा है...'

और हिम्मतराय का साहस देखिए, वह अपना घोड़ा वर्जित दिशा में मोड़ देता है...हमारी जिज्ञासा और घनीभूत हो जाती, बल्कि इसमें भय और रोमांच भी आ जुड़ता था। काकी के ओसारे से थोड़ा आगे महाजन के घने बाग का धुप्प अंधेरा, गन्ने के खेतों की सरसराहट और कहानी के ऐसे मोड़ पर काकी की आवाज में पैदा होनेवाली थरथराहट कहानी के भय को और गाढ़ा कर देती थी। हम चुपचाप थोड़ा-सा खिसककर काकी से चिपक-से जाते थे...करीब-करीब इसी समय, जब हम भय, रहस्य और रोमांच से जकड़े 'आगे क्या होगा' की फिक्र में डूबे होते, तभी काकी कहानी रोक देती थीं। जानवरों की हौदी में भूसा डालतीं, हुक्की की चिलम झाड़कर उसमें ताजा तंबाकू और आग रखती, फिर अपनी मचिया पर आकर आराम से गुड़गुड़ाने लगतीं, हमें कहानी की जल्दी होती। हम मचलते - 'हाँ, तो काकी अब आगे...' 'पहले यह बताओ, तुम झूठ क्यों बोले कि पढ़ाई पूरी करके किस्सा सुनने आए हो?' - पता नहीं कैसे वे हमारी कमजोरियाँ भाँप लेती थीं। किसने ठीक से दातुन नहीं किया? कौन माँ-बाप का कहा-सुना नहीं मानता, झूठ बोलता है - यह सब उनको पता होता था। आगे ऐसा न करने की कसम लेकर ही वे कहानी आगे बढ़ाती थीं। हम उनसे झूठा वादा नहीं करते थे। क्योंकि हमें पता रहता, अगर हमने ऐसा किया तो अगला उनका चहेता बनने के लिए कनफुसकी लगाने से बाज नहीं आएगा। काकी का हम पर ऐसा असर था कि जीवन में अनुशासन स्वयं पैदा हो गया था। हम समय से नहाते, धोते, किताब-कापी व्यवस्थित, पढ़ाई-सिखाई ढर्रे से, अध्यापक खुश, माँ-बाप निश्चिंत... हम बगैर ट्यूशन और गाइड के भी फस्ट और सेकंड क्लास पास होते। हमारी किस्सा-गोष्ठी भी आबाद रहती थी।

काकी की किस्सागोई गजब की थी। उन्हें पता था, कहानी के किस मोड़ पर स्वर को कैसे साधना है। शेर की बात करती तो गुर्राहट के साथ, लोमड़ी बोलती तो सिफलाते हुए...जैसा पात्र वैसी बोली। कहानी में खुशी का माहौल होता तो बोली में चहक होती, गमी के मौके पर आवाज मंद होकर भर्रा जाती। खासियत यह कि स्वर करीब-करीब सामान्य ही रहता - न अधिक तेज न धीमा! बस बोलने की शैली से राजा की अधिकार संपन्नता और सब कुछ होते हुए भी साहूकार की परतंत्रता उनके मुँह से जीवंत हो उठती थी।

काकी हमें अच्छी लगती थी, उनका छोटा-सा घर अच्छा लगता, सामने लगे आधा दर्जन नीम और आम के वृक्ष अच्छे लगते थे। उनका तुलसी चौरा, सफेद गाय, छोटे बैलों की जोड़ी और पिछवाड़ेवाले मछुआ-कटहल भी आँखों को सुख देते थे। असल में जिसे हम पसंद करते हैं, उसका सब कुछ हमें अच्छा लगता है। मगर काकी की इकालौती लड़की सुमित्रा हमें फूटी आँख नहीं भाती थी। सुमित्रा ससुराल में रहती थी। होली के आसपास उसका आदमी उसे यहाँ छोड़ जाता था। वह बड़ी

गुस्सैल और कर्कशा थी। काकी के पास हम लोगों को देखकर ऐसी नाक-भौं सिकोड़ती कि क्या कहा जाए! दो-चार दिन बीतते-बीतते वह हमारे सामने ही काकी को फजीहत करनेवाले अंदाज में समझाने लगती-'भाई, ये बेकार की बैठक बाजी हमें पसंद नहीं। नींद हराम हो जाती है। लेकिन हमारी मर्जी से किसी को क्या लेना-देना...।'

अंततः एकाध हफ्ते में हमारी किस्सा-गोष्ठी का अंत हो जाता। काकी कहतीं - 'बचवा लोगों, अब इंतिहान नजदीक हैं। पूरा ध्यान पढ़ाई-लिखाई में लगाओ। किस्सा-कहानी अब बंद...' काकी की बात टालना हमें आता ही नहीं था। हमारा किस्सा सुनने जाना बंद हो जाता था। अपनी मित्र-मंडली में सुमित्रा को खूब कोसते - 'इस चुड़ैल को मौत भी नहीं आती...'

हम बच्चे तो बच्चे, गाँव के बड़े-बूढ़े भी सुमित्रा से कुढ़ते थे। दरअसल काकी गाँव के वाशिंदों के लिए वैध और दायी की हैसियत रखती थीं। पता नहीं कहाँ-कहाँ से खोजकर लाई गई जड़ी-बूटियों और जंगली फलों-फूलों के चूरन, अर्क, चटनी, वटी वगैरह उनके पास हुआ करते थे। लोगों की बीमारी-अजारी में वे यह सब मुफ्त देती थीं। किसी के यहाँ बाल-बच्चे के जन्म का मौका होता तो वहाँ भी उनका बुलावा आता था। बदले में गाँववाले खेतीबारी में उनका दिल खोलकर मदद करते थे। मगर सुमित्रा के रहते कोई दवा लेने या गर्भवती बहू-बेटी की जचगी कराने के लिए उनको बुलाने आता तो उसके पिछौड़ होते ही वह काकी को कोसने लगती-'भाई, क्यों करती हो यह सब? मिलना-मिलाना एक नहीं, बेमतलब हलकान होती हो।' उस जमाने में शादी-शुदा लड़की के मुँह लगने या कड़ी बात कहने की परंपरा नहीं थी, इसलिए लोग जहर का घूंट पीकर अनसुनीकर देते। वह काकी के पास बरसात से थोड़ा पहले तक रुकती थी। यह गाँव का बहुत व्यस्त समय होता था। इसी बीच फसलें तैयार होतीं। खलिहान सजते। मड़ाई होती। शादियाँ भी इसी मौसम में पड़तीं। हमारी परीक्षाएँ होतीं। आनेवाली बरसात को ध्यान में रखते हुए लोग छान-छप्पर दुरुस्त करते थे। यानी गाँव का ठहरा-ठहरा समय खूब गतिमान हो उठता था। इस दरम्यान सुमित्रा काकी के साथ घर-गृहस्थी में हाथ बँटाती थीं। फिर एक दिन ऐसा आता, जब सुमित्रा काकी से किसी बात पर खूब लड़ती। बाद में चार-छह रोज में उसका आदमी बैलगाड़ी लेकर आता और उसे लिवा जाता था।

इसके बाद टोले में जो चर्चा होती, उससे पता चलता कि हर साल सुमित्रा काकी से अनाज, गुड़ वगैरह बिकवाकर पैसा मुट्ठी में करती हैं और लड़-झगड़कर ससुराल की राह पकड़ लेती है। गाँव की बड़ी-बूढ़ियों का मत था - 'ऐसा लड़का-लड़की भगवान सात दुश्मन को भी न दें।'

पता नहीं सब की बद्दुआ का असर था, या और कोई और बात...एक दिन उड़ती हुई खबर आई-'सुमित्रा को कलरा हुआ, दवा-दारू के बाद भी बीमारी के दूसरे दिन वह इस दुनिया में नहीं रही।'

काकी पर वज्रपात हो गया। अपनी बदमिजाज लड़की से उनको पता नहीं कितना गहरा लगाव था कि वे एकदम 'अबोल' हो गई। वे सदमे से घिरी एकटक आसमान ताकती रहतीं। पूरे गाँव में उनकी पहचान जीवट वाली महिला के रूप में थी। बस्ती में किसी के यहाँ कोई आपदा आ जाती तो वे पूरे परिवार का आत्मबल मजबूत करने के लिए क्या-क्या नहीं करती थीं?

उनका इस तरह सुन्न-सा होकर हाथ-पैर ढीला कर देना, हम बच्चों के लिए भी आश्चर्य की बात थी। उनकी कोई भी कहानी ऐसे अचानक ठप्प नहीं होती थी। एक कहानी से दूसरी और उससे तीसरी कहानी निकल आती थी। उनकी कहानियों के किरदार विपरीत परिस्थितियों में भी लड़ते थे। कभी हार नहीं मानते थे। मगर काकी...एक सप्ताह अवसाद से घिरी रहीं और फिर उन्हें लकवा मार गया। कुल बीस दिन के अंदर ही बैदकी के नुस्खों और किस्से कहानियों की गठरी लादे वे भगवान के यहाँ चली गई।

काकी का क्रिया-कर्म धूमधाम से हुआ था। उनके दामाद ने खुले हाथों खर्च किया था। बाद में चार-पाँच चक्कर में वह घर का माल-असबाब, खपड़ा-नरिया, मकान में लगी लकड़ी वगैरह अपनी बैलगाड़ी से ढो ले गया। आम, नीम, महुआ और कटहल के पेड़ लकड़कट को बेच दिए। गाँव के कम ही लोग जान पाए कि कब उसने काकी की जमीन अपने नाम करा लिया? बाद में पता चला कि उसने गाँव के एक संपन्न व्यक्ति के हाथों जमीन का ऊँचे दामों में बैनामा कर दिया। एक साल तो काकी के उजड़े घर की दीवारें खड़ी रहीं। लेकिन अगली बारिश में एक दीवार दह गई थी। इधर पिछले चालीस साल के अंदर काकी की घरूही की निशानी के रूप में झाड़-झंखाड़ से भरा सिर्फ एक ढूह बचा रह गया है...

अचानक ही स्मृतियों का यह क्रम छिन्न-भिन्न होने लगता है... सामने यानी पश्चिमी दरवाजे पर बड़ी मैट जलाई गई थी... उसके धूम-धड़ाके के साथ बच्चों का हो-हल्ला...जिससे मैं अतीत से वर्तमान में आ जाता हूँ... मेरा ध्यान उधर चला जाता है। मैं मुस्कुराने लगता हूँ... थोड़ी देर बाद मैं पुनः ढूह की तरफ निगाह दौड़ाता हूँ... वहाँ मेरा दीपक एकदम मद्धिम पड़ने लगा था - मन में दबी काकी की याद नुमा!

- पो.आ.जासापारा
गोसाईगंज
सुलतानपुर-228119 (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल: +91 9450143544

कविता

मैं चाहता हूँ

- श्री कमल कुमार बहिदार -

खुलेपन में रोज रोज
जिन्हें मैं चाहता हूँ
महसूस करना
सुनना और
देखना
उनमें हैं।
सूरज का उगना
सूरज का चमकना
सूरज के किरणों में
कमल का खिलना
सूरज का ढलना।

चाँद का उदय होना
चाँदनी बिखेरना
चाँदनी में कुमुदिनी का खिलना
चाँद का बादलों के साथ
लुकाछिपी खेलना
तारों का टिमटिमाना
चाँद का आसमां में
धीरे-धीरे छुप जाना
प्रभात का फूटना।

सौर ग्रहों की परिक्रमा से
ओम शब्द का ध्वनित होना
ध्रुवों पर बर्फ का न पिघलना
समुद्र का जलस्तर न बढ़ना
भूकंप का न आना
ज्वालामुखी का न फटना
जगत का छिन्न-भिन्न न होना।

ग्रीष्म का तपना
बादल का गरजना
आसमाँ में स्वच्छ बादलों का
उमड़ना, घुमड़ना
पानी का बरसना
शीत का थमकर रहना
धुँधलका छाये रहना
ओस का टपकना

शरद पूर्णिमा का चमचमाना
वसंत का आना।
हवा का बहना
मंद-मंद हवाओं में
पेड़ व
झाड़ियों का झूमना
इनके पत्तियों का गीत गाना
खेतों की हरियाली में
दूर निगाहों तक
बगुलों का झुण्ड में उड़ना
हरे-भरे खेत खलिहानों में
धान के पौधे व
दूब का लहलहाना
कांस वनों का हनहनाना
मस्त हवा में
चिड़ियों का कलाबाजी करना

झरनों का झर-झर करना
नदी-नालों का इठलाना
झीलों के तरंगों का छप-छपाना
समुद्री लहरों का शोर मचाना
मछलियों का बेफिक्र तैरना
मेंढ़कों का टर्राना
और फुदकना
झींगुरों का झंकारना
तालाब व पोखर में
बत्तखों का अटखेलियाँ करना
बगुलों का ध्यान लगाना
भौरों व
मधुमक्खियों का
कमलों पर गुंजन करना

प्रकृति के सुरम्य वादियों में
वनस्पतियों का मचलना
रंग-बिरंगे फूलों पर
तितलियों का मँडराना
बाग-बगीचों,
वन-उपवनों का

हरीतिमा लेना
पेड़-पौधों का
फलों से लद जाना
जंगलों में पशु-पक्षियों का
स्वतंत्र बेफिक्र थिरकना
घाटी व गुफाओं में
सिंहों का दहाड़ना
घने जंगलों में
हाथियों का चिंघाड़ना
सारे जहाँ के गुलिस्ताँ में
फूलों का महकना
चिड़ियों का चहकना
अमराइयों में
कोयल का कूकना
खुशबू का बहना
नई कोंपलों से लदी
घाटियों का उमड़ना।।

गाँवों का आबाद होना
फिजाओं में,
सोंधी महक का घुलना।
किसानों का सुख में हँसना
शोषण से मुक्त,
मजदूरों का मुस्कुराना।
समाज के सताये दलितों का
निभर्य जीवन जीना।
गाँव के बच्चों को
स्वच्छ परिधानों में
पाठशाला जाना।
उनका हँसना,
खिलखिलाना
बहू-बेटियों को
ससुराल में,
सुखी जीवन बिताना
बुजुर्गों का आदर होना

गोधूलि बेला में

लौटती गायों का रंभाना
भेड़-बकरियों का मिमियाना
बड़े सवेरे मुर्गे का बांग देना।

जनता और सरकार द्वारा
अब, और
कृषियोग्य भूमि पर
प्रकृति को रौंदने वाले
कल-कारखाने न लगना
प्रकृति की अनुपम कृति पर
प्रकृति विरोधी कार्य का न होना।
जनमानस के उर में बसे
मंदिरों में
घंटियों का बजना
मस्जिदों में
अजान बुलंद होना
गुरुद्वारों में
अरदास का खनकना
गिरजाघरों में
अराधना का गुंजना
पंडित, मौलवी,
पादरी व संतों का
विश्व शांति के लिए
साधना करना
शोषकों द्वारा शोषित
दलितों के हक को लौटाना
सताये लोगों को
स्नेह, प्यार से गले लगाना

धर्म और मजहब के नाम पर हिंसा छोड़
लोगों का लोगों से गले मिलना।
इंसान का इंसानियत के सामने
नतस्तक होकर झुकना .....

इन सब को मैं चाहता हूँ

सुनना व देखना
इंसान की इंसानियत को
बार बार प्रणाम करना
स्नेह, प्यार व भाईचारे का अनुभव कराना।
भावनाएँ जगाकर
मैं चाहता हूँ
देश व दुनिया को
छिन्न-भिन्न होने से बचाना...

- लालटंकी के पास
वहिदार पारा, रायगढ़
मोबाइल: +91 9300777351

कार्य-कलाप

इस स्तंभ में पाठकों को प्राय: राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित गतिविधियों की जानकारी दी जाती है। राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड में ये गतिविधि आदि जैसे कार्यक्रम शामिल हैं। जुलाई-सितंबर, 2013 की तिमाही के दौरान इस दिशा में किये गये विविध कार्यक्रमों का विवरण नीचे प्रस्तुत है।

इस्पात मंत्रालय के प्राधिकारियों द्वारा दिल्ली स्थित क्षेत्रीय एवं शाखा बिक्री कार्यालय का निरीक्षण

इस्पात मंत्रालय के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्रीमती संतोष सहगल एवं प्राधिकारी श्री नरेंद्र कुमार पांडेय ने दि.30 जुलाई, 2013 को संगठन के दिल्ली स्थित क्षेत्रीय एवं शाखा बिक्री कार्यालयों में हिंदी कार्यान्वयन का जायजा लिया। निरीक्षण दल द्वारा 30 जून को समाप्त तिमाही के दौरान हिंदी के प्रयोग की समीक्षा की गयी और कार्यालय के प्रयासों की सराहना की गई तथा बेहतर कार्यान्वयन हेतु कुछ दिशानिर्देश दिये गये। इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रबंधक (उत्तर) श्री पीयूष तिवारी, वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री बी कुंडु, सहायक महा प्रबंधक (विपणन) श्री संजय गर्ग, सहायक महा प्रबंधक (विपणन) श्री ए एस मित्तल उपस्थित थे।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्वावधान में दो दिवसीय कार्यशाला

भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा 22 व 23 अगस्त, 2013 को मानव संसाधन विकास केंद्र में 'इंजीनियरिंग एवं इस्पात शब्दावली' से संबंधित दो दिवसीय विशेष कार्यशाला आयोजित की गई। 22 अगस्त को कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि महोदय एवं कार्यपालक निदेशक (सामग्री प्रबंधन) श्री एस के गुप्ता ने कहा कि आर आई एन एल उत्पादनपरक संगठन है, जहाँ हिंदी के प्रयोग हेतु विविध तकनीकी व वैज्ञानिक शब्दों की जानकारी आवश्यक होती है। ऐसे में यह तकनीकी कार्यशाला प्रतिभागियों के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगी। कार्यक्रम के विशेष अतिथि महोदय एवं वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय के अध्यक्ष श्री केसरी लाल वर्मा ने इस अवसर पर 'सुगंध' के अंक का विमोचन किया। महा प्रबंधक (प्रशिक्षण व मानव संसाधन विकास) एवं राजभाषा अधिकारी श्री ए राधाकृष्ण ने प्रतिभागियों से हिंदी के प्रचलित तकनीकी शब्दों के प्रयोग की अपील की।

तत्पश्चात आयोग के सेवानिवृत्त सहायक निदेशक श्री एस सी एल शर्मा ने वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली पर अपना बीज व्याख्यान दिया। तदुपरांत प्रतिभागियों को धातुकर्मी, यांत्रिकी, विद्युत, परियोजना, यंत्रीकरण, दूरसंचार, सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी शब्दावली की जानकारी दी गयी। साथ ही तकनीकी अनुवाद में उत्पन्न होनेवाली समस्याओं व उनके निदान का भी जिक्र किया गया। सहायक महा प्रबंधक (विपणन) श्री ललन कुमार, बैंगलूर से आए हुए एच ए एल के सेवानिवृत्त उप महा प्रबंधक डॉ शंकर प्रसाद, आर आई एन एल के सहायक महा प्रबंधक (यांत्रिकी) श्री सुमन कुमार झा, सहायक महा प्रबंधक (विद्युत) श्री राजेश कुमार, शब्दावली आयोग के सेवानिवृत्त उप निदेशक श्री एस सी सक्सेना, आर आई एन एल के सहायक महा प्रबंधक (परियोजना) श्री नीरज हंस, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के सहायक प्रबंधक श्री अभिजीत, हिंदी कक्ष के सहायक प्रबंधक श्रीमती वी सुगुणा एवं वरिष्ठ सहायक (अनुवाद) श्री गोपाल कार्यक्रम के वक्ता थे। शब्दावली आयोग के वैज्ञानिक अधिकारी श्री शिव कुमार चौधरी ने प्रतिभागियों को आयोग एवं शब्द निर्माण प्रक्रिया का विवरण दिया। कार्यक्रम में आर आई एन एल से 40 एवं बाहरी संगठनों से 11 प्रतिभागी उपस्थित थे। दूसरे दिन शाम को 4.00 बजे आयोजित समापन समारोह में सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किये गये।

जग्गय्यपेटा चूनापत्थर खान में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

जग्गय्यपेटा चूनापत्थर खान में 3 व 4 सितंबर, 2013 को हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में प्रतिभागियों को राजभाषा नीति के विविध प्रावधान, हिंदी व्याकरण, हिंदी में अनुवाद आदि का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम में कुल 23 कर्मचारियों ने भाग लिया। साथ ही कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं, जिनमें कुल 15 कर्मचारियों ने भाग

यहाँ योजनाबद्ध तरीके से चलाई जाती हैं, जिसके तहत कर्मचारियों को प्रशिक्षण, विभागों में हिंदी कार्य का निरीक्षण, कार्यशाला व पत्रिका का प्रकाशन

लिया। इस अवसर पर कार्यालय में हिंदी के कार्यान्वयन का निरीक्षण भी किया गया और संबद्ध प्राधिकारियों को कार्यालयीन काम में हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु आवश्यक सुझाव दिये गये। 4 सितंबर, को आयोजित समापन कार्यक्रम में सहायक महा प्रबंधक (खान) श्री जी वी सुब्बाराव ने प्रशिक्षण प्राप्त कार्मचारियों से कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को सुनिश्चित करने की अपील की। तत्पश्चात प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये गये। कार्यक्रम का संचालन प्रबंधक (हिंदी) श्रीमती जी रमादेवी और कनिष्ठ सहायक (हिंदी) डॉ जे के एन नाथन ने किया।

संगठन में हिंदी सप्ताह समारोह

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड कें प्रशिक्षण व विकास केंद्र के सम्मेलन कक्ष में 14 सितंबर, 2013 को 'हिंदी सप्ताह' समारोह का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं महा प्रबंधक (प्रशिक्षण व मानव संसाधन विकास) व राजभाषा अधिकारी श्री ए राधाकृष्ण ने प्रतिभागियों को सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु प्रेरित किया। इस अवसर पर संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री ए पी चौधरी के संदेश का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में हिंदी समन्वयकों के साथ-साथ प्रशिक्षण व विकास केंद्र के कर्मचारी भी उपस्थित थे। ई एस व एफ विभाग के वरिष्ठ प्रबंधक (फाउंड्री) श्री के कृष्ण प्रसाद ने कार्यक्रम का संचालन किया और संगठन में हिंदी से संबंधित विविध गतिविधियों का उल्लेख करते हुए एक प्रस्तुतीकरण भी दिया। इसके उपरांत सप्ताह के दौरान कर्मचारियों व छात्रों के लिए कई प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इनमें कर्मचारियों व बच्चों की भागीदारी बहुत ही सराहनीय रही।

दि.21 सितंबर, 2013 को समापन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें विशाखपट्टणम के पूर्व तट रेलवे के मंडल रेल प्रबंधक एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री अनिल कुमार मुख्य अतिथि थे। श्री कुमार ने आर आई एन एल में हिंदी के बढ़ते प्रयोग एवं कर्मचारियों की निष्ठा के प्रति संतुष्टि व्यक्त की। उन्होंने विशाखपट्टणम के शेष संगठनों को भी आर आई एन एल की गतिविधियों से सीख लेने की अपील की। इस अवसर पर सहायक महा प्रबंधक (विपणन) श्री ललन कुमार ने प्रतिभागियों को हिंदी कार्यान्वयन हेतु प्रेरित करते हुए 'सुगंध' पत्रिका हेतु तकनीकी लेखों के माध्यम से योगदान देने की अपील की। तत्पश्चात प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये। प्रबंधक (हिंदी) श्रीमती जी रमादेवी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 113वीं बैठक संपन्न

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 113वीं बैठक 30 सितंबर, 2013 को आयोजित की गई। यह बैठक निदेशक (प्रचालन) श्री उमेश चंद्र की अध्यक्षता में संपन्न हुई। अन्य निदेशकगण एवं प्रमुख विभागाध्यक्षों की उपस्थिति में पिछली तिमाही के दौरान संगठन के विविध विभागों में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की गई। साथ ही हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में दिसंबर, 2013 के दौरान 'हास्य कवि सम्मेलन' के आयोजन तथा फरवरी, 2014 के दौरान अखिल भारतीय संगोष्ठी के आयोजन के निर्णय लिये गये। इसके अतिरिक्त पिछली बैठक में प्रस्तावित पाँच पहलों के अंतर्गत संगठन में अपनायी जा रही नई प्रौद्योगिकियों से संबंधित तकनीकी पुस्तक के प्रकाशन हेतु संकर्म, निगमित कार्यनीति प्रबंधन एवं खान विभागों के प्राधिकारियों के साथ एक कार्य दल के गठन का निर्णय भी लिया गया। बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों ने राजभाषा के कार्यान्वयन की दिशा में सहयोग पहुँचाने का आश्वासन दिया।

मानक

संगीत सरिता

(की-बोर्ड सीखने की प्रविधि)

'सुगंध' के प्रस्तुत अंक में आशिकी-2 फिल्म का 'तुम ही हो' गाने का नोटेशन दिया जा रहा है। यह 'राग असावरी' पर आधारित गीत है। इसी राग को कर्नाटक संगीत के अंतर्गत 'नटभैरवी' के नाम से जाना जाता है। हिंदी फिल्म 'दो बदन' का 'लो आ गई फिर उनकी याद, वो नहीं आये' गीत इसी राग पर आधारित है। इस गीत में ग, म, ध, नि कोमल स्वर हैं।

आरोह: स रे म, प ध स

अवरोह: स नि स, प ध म प, रे ग रे स

पकड़: रे, म, प, स, (नि)ध, प रे, म, प, नि, ध, प

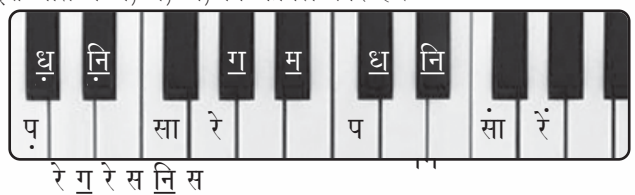

पा सं नि नि ध ध प म ग म ध प प पा मा म ग मा म ग रे ग रे स नि़ स
हम तेरे विन अब रह नहीं सकते तेरे बिना क्या वजूद मेरा

प प सं नि नि ध ध प म ग म ध प प पा मा म ग मा म ग रे ग रे स नि़ स
तुझसे जुदा गर हो जायेंगे तो खुद से ही हो जायेंगे जुदा

ग म पा म ग मा ग म पा म ग मा रे म गा रे स रे स नि़ सा
क्योंकि तुम ही हो अब तुम ही हो जिंदगी अब तुम ही हो

रे ग म पा म ग मा ग म पा म ग मा रे रे रे म गा रे स रे स नि़ सा
ओ... चैन भी मेरा दर्द भी मेरी आशिकी अब तुम ही हो

पा सं नि नि ध ध प म ग म ध प प पा मा म ग मा म ग रे ग रे स नि़ स
तेरा मेरा रिश्ता है कैसा इक पल दूर गँवारा नहीं

पा सं नि नि ध ध प म ग म ध प प पा मा म ग मा म ग रे ग रे स नि़ स
तेरे लिए हर रोज ही जीते तुझको दिया मेरा वक्त सभी

नि़ स स रे रे स रे रे ध ध प प म पा प सं नि सं सं प प म म ग म गा रे...
कोई लम्हा मेरा न हो तेरे बिना हर साँस पे नाम तेरा

ग म पा म ग मा ग म प नि ध प म ग मा रे म गा रे स रे स नि़ सा
क्योंकि तुम ही हो अब तुम ही हो जिंदगी अब तुम ही हो

रे ग मा पा म ग मा ग म पा म ग मा रे रे रे म गा रे स रे स नि़ सा
ओ... चैन भी मेरा दर्द भी मेरी आशिकी अब तुम ही हो

प़ ध़ नि़ सा नि़ सा रे रे रे रे रे ग गा रे स रे स नि़ सा
तुम ही हो तुम ही हो अर्ज भी मेरा मर्ज भी

ध़ नि़ प़ प़ ध़ नि़ सा नि़ सा रे रे रे रे रे ग गा रे स रे स नि़ सा
ओ... चैन भी मेरा दर्द भी मेरी आशिकी अब तुम ही हो

सां सां नि नि सां सां रे रे नि नि पा पा प ध नि सां सां रे रे नि नि पा
तेरे लिए ही जिया मैं खुद को जो यूँ दे दिया मैं

ध ध प धा ध नि ध प मा म म प ध प ध ध प धा ध नि ध प मा म म प ध पा
तेरी वफा ने मुझको संभाला सारे गमों को दिल से निकाला

नि़ स स रे रे स रे रे ध ध प प म पा प सं नि सं सं प प म म ग म गा रे...
तेरे साथ मेरा है नसीब जुड़ा तुझे पाके अधूरा न रहा हूँ ...

ग म पा म ग मा ग म प नि ध प म ग मा रे म गा रे स रे स नि़ सा
क्योंकि तुम ही हो अब तुम ही हो जिंदगी अब तुम ही हो

रे ग मा पा म ग मा ग म प नि ध प म ग मा रे रे रे म गा रे स रे स नि़ सा
ओ... चैन भी मेरा दर्द भी मेरी आशिकी अब तुम ही हो

प नि सां नि प नी प नि सां नि प धा मा नि पा म ग मा प म ग रे गा
क्योंकि तुम ही हो अब तुम ही हो जिंदगी अब तुम ही हो

मा पा नी सां नि प नी प नि सां नि प धा रे रे रे म गा रे स रे स नि़ सा
ओ... चैन भी मेरा दर्द भी मेरी आशिकी अब तुम ही हो

विशाखपट्टणम के एसेंट कालेज में जूनियर इंटर पढ़ रही सुश्री वी नंदिता के सौजन्य से

लेख

राष्ट्रीय चेतना जगानेवाले महत्वपूर्ण गीत

- श्रीमती रीतिका -

देश की आजादी के लिए चलाए गए आंदोलन में राष्ट्रीय चेतना जगानेवाले गीतों और लोकगीतों की महती भूमिका रही है। ये गीत और इनके कलमकारों ने अंग्रेजी हूकुमत के कृत्यों से रूबरू कराने और साथ ही भारतीय जनमानस के मन में राष्ट्रभक्ति का संचार करने में बड़ी ही निष्ठा दिखायी। साथ ही लोगों के मन में बलिदान का ऐसा जज्बा जगाया कि नौजवान दीवाने हो उठे और सिर पर कफन बांधकर गुलाम भारत माँ की मुक्ति के लिए निकल पड़े। वैसे तो **1857** में ही सिपाही विद्रोह के माध्यम से राष्ट्रीय भावना जग गई थी और उस समय का झंडा गीत कुछ इस प्रकार का था:

'हम हैं इसके मालिक, यह है हिंदुस्ताँ हमारा।
पाक वतन है कौम का, हमको जन्नत से प्यारा।।'

कल्याण सिंह कुड़रा ने इसी भाव को निम्नवत उद्धृत किया है:

'कहत कल्याण, बान राखी परमेसुर ने,
बांको कर साको सुरलोक को सिधाई है।
सूर को सराहैं जो गुनीन गुन गावैं हाल,
बाई की लराई की जहान में लड़ाई है।।'

आजादी के रणबांकुरे वीर कुंअर सिंह की वीरता का बखान करते हुए कवि राम ने उत्तर-प्रदेश और बिहार में कुछ इस प्रकार से जन जागरण किया:

'जैसे मृगराज गजराजन के झुंडन पे
प्रबल प्रचंड सुंड खंडर उदंड है,
जैसे बाज लपकि लपेटि के लवान-दल
दलमल डारत प्रचारत विहंड है,
कहै 'राम' कवि जैसे गरुड़ गरव गहि
अहिकुल दंडि-दंडि मेटत घमंड है,
तैसे ही कुंअर सिंह कीरति अमर मंडि।'

इसी प्रकार सन् **1861** में 'ईश्वरचंद गुप्त' ने बंगाल को जगाने के लिए बांग्ला में गीत लिखा -

'जननी भारत भूमि! ऊपर क न थकि तुमि,
धर्म-रूप-भूषाहीनय तोमार कुमार जत,
सकालेई हटे तट, मिछो केन मर भार भये।।'

'सत्येंद्रनाथ ठाकुर' ने पराधीनता की पीड़ा व्यक्त करते हुए लिखा -

'को थारे गाओ भारतेर जय!
दिनेरदिन सबे दिन भारत हय पराधीन।
नीरव भारत के न भारतीय वीणा।
सोनार प्रतिमा शोके ते मलीना।।'

इस संदर्भ में भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र की वेदना कुछ इस तरह थी:

'कहाँ करुणानिधि के सब सोये?
जागत नेकु न जदपि बहुत विधि भारतवासी रोये।।'

विवेकानंद कविता में अपनी भावना इस प्रकार व्यक्त करते हैं:

'सदा घोर संग्राम छेड़ना, उनकी पूजा के उपचार।
वीर न हो भयभीत, भले ही आय पराजय सौ-सौ बार।
चूर-चूर हो स्वार्थ, साध, सब मान, हृदय होवे शमशान।
नीचे उस पर श्यामा लेकर घन रण में निज भीम-कृपाण।।'

इस संदर्भ में रवींद्रनाथ ठाकुर का यह गीत उल्लेखनीय है:

'बांगलार माटी, बांगलार जल,
बांगलार वायुर, बांगलार फल।
पुण्य होइक, पुण्य होउक, पुण्य होउक।।'

सोहनलाल द्विवेदी अपनी कविता में कहते हैं -

'वंदना के इन सुरों में, एक सुर मेरा मिला लो।
वंदिनी माँ को न भूलो, राग में हो मगन झूलो।
अर्चना के रक्तकण में, एक कण मेरा मिला लो।
जब हृदय के तार बोलें, श्रृंखला के बंद खोलें।
हों जहाँ बलिदान अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।।'

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने फरवरी-मार्च, **1903** में अपनी पत्रिका में लिखा:

'यह जो भारत भूमि हमारी, जन्मभूमि हम सबकी प्यारी।
एक गेह सम विस्तृत भारी, प्रजा कुटुंब तुल्य है सारी।
जन्मभूमि बलिहारी है, सुरपुर से भी प्यारी है।
पानी की कुछ कमी नहीं है, हरियाली लहराती है।
फल और फूल होते हैं रम्य रात छवि छाती है।
मलयानिल मृदु-मृदु बहती है, शीतलता अधिकाती है।
सुखदायिनी वरदायिनी तेरी मूर्ति अति भारी है।।'

पंडित गिरिधर शर्मा ने इसी भाव को कुछ इस प्रकार लिखा है:

'सुजला सुफला मही यहाँ की, शस्य श्यामला मही यहाँ की।
मलयज शीतल मही यहाँ की, विविध मनोहर मही यहाँ की।।'

यही बात मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में इस प्रकार कही गई है:

'नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है,
सूर्यचंद्र युगमुकुट मेखला रत्नाकर है।
नदियाँ प्रेम प्रवाह, सूर्य-तारे मंडन हैं,
बंदी विविध विहंग, शेषफन सिंहासन है।
करते अभिषेक पयोद हैं बलिहारी इस वेश की।
हे मातृभूमि! तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की।।'

और सियाराम शरण गुप्त ने अपनी भावनाओं को कुछ इस प्रकार से उकेरा है:

'जय जनक जननी जननी! जय भुवन मानस हारिणी।
जय अनिल-कंपित मनोहर, श्याम-अंचल धारिणी।
व्योम-चुंबी भाल हिमगिरि है, तुषार किरीट है।
जय जयति लक्ष्मी स्वरूपा, दैन्य दु:ख निवारिणी।।'

रामनरेश त्रिपाठी ने भी अपनी भावना को लोगों के समक्ष रखा:

'विविध सुमन समूह चित्रित, शस्य श्यामल वसन सज्जित
मलय-मारुत से सुगंधित, रत्नगर्भा जननि! मंगलकरणी संकट हरणी।।'

परशुराम चतुर्वेदी ने तो अपनी कविता के माध्यम से प्रश्न किया है:

'होगा ऐसा कौण अभागा नर तनु धारी।
जिसे न हो निज मातृभूमि प्राणों से प्यारी।।'

श्रीधर पाठक ने एक छंद में कहा है:

'प्रणमामि सुभग सुदेश भारत सतत मम मन रंजनम्।
मम देश मम सुख धाम मम तन-प्राण धन, जन जीवनम्।
मम-तात-मात सुतादि प्रिय, निज बंधु गृह-गुरु-मंदिरम्।
सुर-असुर-नर-नागादि अगणित जाति जनपद सुंदरम्।।'

इसी संदर्भ में श्री बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने लिखा है:

'जय जय भारत भूमि भवानी।
जाकी सुयश पताका जग में दसहूँ दिशि फहरानी।
सब सुख सामग्री पूरित ऋतु सकल समान सोहानी।
जाकी शोभा लखि अलका अरु अमरपुरी खिसियानी।
धर्म सूर्य जहँ उग्यो, नीति जहँ गयी प्रथम पहियानी।।'

बालकृष्ण शर्मा नवीन ने भी मातृभूमि के लिए गीत लिखा:

'विंध्य सतपुड़ा नागा खसिया, ये दो औघट घाट महाय
भारत में पूरब-पश्चिम के, ये दो भूमि-कपाट महाय
तुंग-शिखर चिर अटल हिमाचल, है पर्वत सम्राट यहाँ
यह गिरिवर बन गया युगों से विजय-निशान हमारा है।
भारतवर्ष हमारा है, यह हिंदुस्ताँ हमारा है।।'

रामवतार त्यागी की यह कविता तो मंत्र बन गई थी:

'मन समर्पित, तन समर्पित और यह जीवन समर्पित
चाहता हूँ देश की, धरती! तुझे कुछ और भी दूँ।।'

अवधि के कवि बंशीधर शुक्ल ने लोकगीत लिखकर जोश फूँका -

'सर बांध कफनियाँ हो शहीदों की टोली निकली।
पापी डायर के फायर से भूमि हुई सब लाल,
जलियाँ वाले बाग के अंदर जूझे मदन गोपाल
करेजे में से गोली निकली, सर बांध कफनिया हो।।'

गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' ने लिखा -

'मनाते हो घर घर खिलाफत का मातम।
अभी दिल में ताजा है पंजाब का जख्म।
तुम्हें दीखता है खुदा और आलम।
यही जख्मों का है एक मरहम।
अरे बाबा! अब तो सहयोग कर दो।
असहयोग कर दो, असहयोग कर दो।।'

अशफाक ने निर्भीक शब्दों ने तो नौजवाने को आग का शोला बना दिया था:

'मौत एक बार जब आना है तो डरना क्या है?
हम इसे ही समझे कि मरना क्या है?
वतन हमारा रहे शादकाम और आबाद,
हमारा क्या है अगर हम रहे, रहे, न रहे।।'

राजेंद्र लाहिड़ी ने बलिदान की वजह बतायी थी:

'सूख जाए न कहीं पौधा ये आजादी का,
खून से अपने इसे इसलिए तर करते हैं।।'

ठाकुर रोशनसिंह ने स्वयं अपने खत में यह बात दोहरायी-

'जिंदगी जिंदा-दिली की जान ऐ रोशन!
वरना कितने ही हुए और फना होते हैं।।'

गोविंदचरण कार ने जेल जाते हुए कहा था:

'कुछ सोच न कर, ले कटती हैं अब कड़ियाँ तेरी गुलामी की,
हमसे यह हो सकता ही नहीं, सूरत देखें नाकामी की।।'

मुकुंदीलाल ने बड़े निश्चिंत होकर यह शेर कहा था:

'अहसासे-गम नहीं, हमें परवाहे-गम नहीं।
हमने समझ लिया है कि दुनिया में हम नहीं।।'

रामदुलारे वाजपेयी ने तो अपनी इस गजल में सच्ची बात कह दी-

'खौफ-आफत से कहाँ दिल में रिया आएगी,
बात सच्ची है तो वह लब से सदा आएगी,
दिल से निकलेगी न मरकर भी वतन की उल्फत,
मेरी मिट्टी से भी खुशबू-ए-वफा आएगी।।'

रामप्रसाद बिस्मिल ने ब्रिटिश सरकार को कुछ ऐसी चुनौती दी:

'कहते हैं अलविदा अब हम अपने जहाँ को,
जाकर खुदा के घर से तो आया न जाएगा।
हमने जो लगायी है आग इंकलाब की,
उस आग को किसी से बुझाया न जाएगा।।'

वही बात सोहनलाल द्विवेदी ने कुछ ऐसे कहा:

'हम मातृभूमि के सैनिक हैं, आजादी के मतवाले हैं
बलिवेदी पर हँस-हँस करके, निज शीश चढ़ानेवाले हैं।।'

देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में सभी भाषाओं और राज्यों के भारतीय कवियों और लेखकों ने अपनी लेखनी से सहयोग दिया, जिससे बहुत से नौजावान और अन्य आयुवर्ग के लोग, महिलाएँ और बच्चे अभिप्रेरित होकर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे। इन कलमकारों की भूमिका पर प्राय: कम ही लिखा गया है और कम तवज्जो दी गई है। लेकिन यह सच है कि जनसामान्य को उद्वेलित करने में कवि व लेखक बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं।

- सिटी पब्लिक स्कूल
56, सरदारपुरा, ललितपुर
उत्तर प्रदेश-284403

कहानी

सीट

- श्री शैलेन्द्र तिवारी -

शाम धरती पर उतर आयी है। घरों में बिजली के बल्ब रोशन हो चुके हैं। सड़कों की स्ट्रीट लाइट भी जल गयी हैं। विकास थके कदमों से अपने घर लौट रहा है। दिन भर नौकरी की तलाश में दौड़ते हुए वह थक गया है। उसे आज भी नौकरी नहीं मिली। न ही जल्दी कहीं नौकरी मिलने की उम्मीद नजर आ रही है। थकान के साथ उसके चेहरे पर निराशा के भाव हैं।

एक वर्ष से ऊपर हो गया, उसे नौकरी की तलाश में भटकते हुए। शाम को वह जब घर पहुँचता है, माँ और पिता जी आशा भरी नजरों से उसकी तरफ देखते हैं। उसे चुप देखकर पूछते हैं, 'बेटा कहीं नौकरी मिली?' वह निराश और दुखी मन से कहता, 'नहीं।' तब माँ और पिता जी उसे ढाढ़स देते और कहते, 'कोई बात नहीं बेटा। आज नहीं तो कल नौकरी जरूर मिलेगी।' माँ और पिता की बातें सुनकर उसे बड़ी राहत मिलती थी।

समय बीतता रहा। बीतते समय के साथ माँ और पिता जी के विचारों में परिवर्तन आया। अब माँ और पिता जी उसकी बातों से चिढ़ने लगे थे। वे तीखे स्वरों का प्रयोग करने लगे थे। 'दुनिया को नौकरी मिल गयी। लेकिन तुझे नौकरी नहीं मिली। लगता है तेरा मन ही नौकरी करने को नहीं करता है।'

इस तरह की बातें सुनकर उसका मन आहत हो उठता है। पर वह क्या करे? बस बेबसी से हाथ मलता रह जाता है। कभी-कभी पिता जी उसे देखते ही भड़क जाते और कहते, 'अब मेरे बस का नहीं है कि कमाकर पूरे घर को बिठाकर खिलाऊँ। फिर अब मेरी नौकरी के कितने दिन रह गये हैं। दो या तीन साल। उसके बाद रिटायर हो जाऊँगा। देखना, सारे लोग भूखे मरेंगे।'

तब माँ भी पास आकर सख्त स्वर में कहती, 'अब तू जल्दी से कोई नौकरी कर ले। तेरा खर्चा चलाना अब हमारे बस में नहीं है।' इस तरह की बातें सुनकर उसका मन आहत हो उठता है। वह कोई उत्तर नहीं दे पाता है। बस खामोशी से सुनता रहता है।

एक दिन उसने निश्चय किया। अब वह शाम को घर देर से आया करेगा। माँ और पिता की आहत और अपमान भरी बातें सुनने का समय कम रहेगा। कुछ तो राहत मिलेगी। अब वह घर देर से लौटता है। सचमुच बेकारी उसके लिए बहुत बड़ी समस्या बन गयी है। पहले माँ और पिता ही उलाहना देते थे। अब तो पड़ोसी भी उसे देखकर उलाहना भरी बातें करते हैं, 'विकास को अभी तक नौकरी नहीं मिली। सुनकर उलाहना ही लगता है। पता नहीं, कैसी नौकरी ढूँढ़ रहा है', ताना सा लगता। आजकल के लड़कों को क्या कहें। बड़े ऊँचे-ऊँचे ख्वाब पाल रखे होते हैं। विकास भी कोई बड़ी नौकरी ढूँढ़ रहा होगा।' अपमान..... तिरस्कार। 'लगता तो यही है।' 'लगता है...वह कोई नौकरी करना ही नहीं चाहता।'

हर कोई अपमान पर उतारू। जैसे सारा दोष उसी का है। सबने उसे ही निकम्मा समझ लिया है। पास-पड़ोस के लोगों की ऐसी बातें सुनकर वह परेशान हो जाता है। उन लोगों से वह कोई वाद-विवाद नहीं करना चाहता है। इसमें कोई फायदा भी तो नहीं है। जब कभी उनकी बातें बरदाश्त के बाहर हो जाती हैं। तब वह सीधे अपने कमरे के एकांत में बैठकर क्रोध शांत कर लेता है। वैसे अब वह भरसक प्रयास

> प्रमोद ने कहा, 'अच्छा हुआ विकास हमारे पिता जी की मृत्यु हो गयी। उनकी मृत्यु से मुझे काफी फायदा होगा। अब नौकरी के लिए दर-दर भटकना नहीं पड़ेगा। उनकी मृत्यु से खाली हुई सीट पर मुझे नौकरी मिल जायेगी। ...है ना फायदे की बात?' वह अभी भी मित्र की तरफ देख रहा था। मित्र की बात उसे जरा भी अच्छी नहीं लगी थी। भले ही उसके पिता जी की मृत्यु के बाद उस खाली सीट पर उसे नौकरी मिल जायेगी। परंतु पिता जी की मृत्यु का उसे दुख तो होना ही था।

करता है, किसी के सामने न पड़े।

गली के मोड़ पर उसका अपना मकान है, छोटा सा, साठ गज का। जब यहाँ नयी बस्ती बस रही थी। पिता ने सस्ते रेट पर वह प्लाट लिया था। धीरे-धीरे उस प्लाट पर मकान भी बनवा लिया। पहले यहाँ की गलियाँ कच्ची थीं। बरसात में पानी भरा रहता था। तब इस गली से गुजरना कितना मुश्किल होता था। पानी सूखते ही पूरी गली में कीचड़ हो जाता था। तब यहाँ रहना कितना मुश्किल लगता था। तब सब स्वयं को ही कोसते थे।

'नाहक ही यहां प्लाट लेकर मकान बनवाया। किराये के मकान में ही ठीक थे।' कुछ लोग तो सरकार को भी कोसते थे 'पता नहीं सरकार की निगाह कब यहाँ पड़ेगी? कब सोचेगी यहाँ के लोगों के बारे में?' सुनकर सामनेवाला कह पड़ता, 'जब चुनाव का समय आयेगा, तभी उनका ध्यान हमारी तरफ जायेगा। वह भी सिर्फ वोट के लिए। बाकी क्या सोचना उन्हें। आराम से अपने सरकारी आवास में बैठकर जिंदगी का मजा उड़ा रहे हैं। हमारी किसे चिंता है? फिर हमारी चिंता क्यों करें? हम कौन होते हैं उनके? हम बेवकूफ ही हैं, जो उन्हें वोट देते हैं।'

लेकिन अब। करीब एक वर्ष हो गया। गली में खडंजा बिछ गया है। कीचड़ की समस्या खत्म हो गयी है। पहले से बेहतर हो गयी हैं गलियाँ। अब उम्मीद हो चुकी है कि कभी न कभी ये गलियाँ पक्की भी हो जायेंगी।

सोचता हुआ वह अपने मकान के सामने पहुँच गया। उसने देखा घर के अंदर अंधेरा है। खिड़की के शीशों से भी रोशनी नहीं आ रही है। गली के सभी घरों में रोशनी है। फिर ...उसके ही घर में अंधेरा क्यों?

निगाह दरवाजे पर गयी। वहाँ ताला झूल रहा है। 'आखिर कहाँ गये घर के लोग?' वह दरवाजे के सामने खड़ा सोच रहा है। तभी बगल के मकान का दरवाजा खुला। एक अधेड़ उम्र की औरत निकलकर पास आयी। विकास बेटा आ गये। उसने उस औरत की तरफ देखा। पूछने से पहले ही वह औरत बोल पड़ी।

'बेटा, तुम्हारे पिता का एक्सीडेंट हो गया है। वे सरकारी हॉस्पिटल में भर्ती हैं। तुम्हारी माँ, भाई-बहन सभी वही गये हैं।'

'पिताजी का एक्सीडेंट', वह बुदबुदाया। उसके चेहरे पर चिंता की रेखायें उभर आयीं। मन में घबराहट होने लगी। वह इतना थका था कि चलने की हिम्मत नहीं हो रही थी। फिर भी हॉस्पिटल जाने के लिए दौड़ पड़ा।

दौड़ते हुए वह सीधे बस स्टॉप पर पहुँचा। कुछ लोग पहले ही वहाँ खड़े बस के आने का इंतजार कर रहे थे। वह भी उन लोगों के साथ खड़ा बस का इंतजार करने लगा। वह बार-बार बस के आने की दिशा की तरफ देखता था। अब एक-एक पल उसे भारी लग रहा था। तभी उसने पास खड़े एक आदमी से पूछा था, 'भाई साहब, हॉस्पिटल की तरफ जाने वाली कोई बस....'

आदमी ने बात काटते हुए कहा, 'भाई, जबसे हम खड़े हैं, अभी तक कोई बस नहीं आयी। हम भी उसी बस के आने का इंतजार कर रहे हैं।'

वह चुप हो गया। बेचैन निगाहों से उसने फिर उधर देखा, जिधर से बस को आना था। कुछ देर बाद बस आयी। बस में अच्छी खासी भीड़ थी। चढ़ पाना मुश्किल लग रहा था।

फिर भी .... कोशिश करके वह बस में चढ़ा। किसी तरह अंदर पहुँचने में कामयाब हुआ। बस चल पड़ी। भीड़ के बीच खड़े होकर उसे अपने पिता जी की चिंता सताने लगी। उसके पिता जी का एक्सीडेंट हुआ है। पता नहीं कितनी चोट पहुँची होगी। पता नहीं कैसे होंगे? ...पिता जी को अगर कुछ हो गया तो?...नहीं... नहीं । उन्हें कुछ नहीं होगा। उसके घर में एकमात्र कमानेवाले उसके पिताजी ही हैं। अगर उन्हें कुछ हो गया तो?...उसे याद आया। उसका एक मित्र है, प्रमोद। छः महीना पहले ही उसके पिताजी को हार्ट-अटैक हुआ था। लाख प्रयास के बाद भी डॉक्टर उन्हें बचा न सके।

मित्र के पिता की आकस्मिक मृत्यु पर उसने दुख जताया था। उसकी बात सुनकर प्रमोद हल्का मुस्कराया था और कहा, 'विकास! मुझे अपने पिता की मृत्यु का जरा भी दुख नहीं है।' 'क्या कह रहे हो प्रमोद', वह विस्फारित नेत्रों से अपने मित्र की तरफ देखने लगा। कैसा व्यक्ति है? अपने पिता जी की मृत्यु का

इसे जरा भी दुख नहीं है।

प्रमोद ने कहा, 'अच्छा हुआ विकास हमारे पिता जी की मृत्यु हो गयी। उनकी मृत्यु से मुझे काफी फायदा होगा। अब नौकरी के लिए दर-दर भटकना नहीं पड़ेगा। उनकी मृत्यु से खाली हुई सीट पर मुझे नौकरी मिल जायेगी। ...है ना फायदे की बात?' वह अभी भी मित्र की तरफ देख रहा था। मित्र की बात उसे जरा भी अच्छी नहीं लगी थी। भले ही उसके पिता जी की मृत्यु के बाद उस खाली सीट पर उसे नौकरी मिल जायेगी। परंतु पिता जी की मृत्यु का उसे दुख तो होना ही था।

मित्र के घर से लौटते हुए वह सोच रहा था। कितना बदल गया है समय और कितने बदल गये हैं लोग। वह महसूस कर रहा था कि बदलते समय के साथ ढेर सारी मान्यताएँ भी बदल गयी हैं। व्यक्तिगत स्वार्थ ने समाज को कहाँ ला खड़ा किया है? अब लोग सिर्फ अपने सुख के लिए सोचने लगे हैं। मतलब अब वह भी ईश्वर से यही प्रार्थना करे कि पिताजी मर जायें, ताकि उनकी सीट रिक्त हो जाये और उनकी जगह उसे नौकरी मिल जाये।

बस अपनी रफ्तार से दौड़ रही थी। पहले की अपेक्षा भीड़ कुछ कम हुई है। दिन भर नौकरी के चक्कर में दौड़ते-दौड़ते वह वैसे ही थक गया है। फिर भीड़ में खड़े-खड़े उसके पाँव बुरी तरह दर्द कर रहे हैं। वह सोच रहा है कोई सीट खाली हो जाती तो...?

जब भी बस की एक सीट खाली होती तब कई लोग बैठने के लिए झपटते हैं। ऐसे में उसकी निगाह एक आदमी पर गयी थी। उसे लगा, उस आदमी का स्टॉप आ रहा है और वह उतरने के लिए खड़ा होना चाहता है। अब जरूर उसकी सीट खाली होगी। उसे यह मौका गँवाना नहीं चाहिए, सोचते हुए वह तेजी से लपका और कामयाब हुआ। उसे बैठने के लिए सीट मिल गयी।

बस की सीट पर इत्मीनान से बैठने के बाद उसने उन लोगों की तरफ देखा जो सीट के लिए लपके थे। मगर वे लोग सीट न पाकर खिसियाये खड़े थे। सीट पाते ही वे लोग उसे छोटे नजर आने लगे थे। उसके चेहरे पर अहंकार की रेखायें खिंच आयी थी।

अब वह पुन: अपने पिता जी के बारे में सोचने लगा। उसके पिता जी का एक्सीडेंट हो गया है। पता नहीं उनकी हालत कैसी होगी? वह जल्दी से जल्दी हास्पिटल पहुँचकर पिता जी की हालत जान लेना चाहता है। वह सोचता है, अगर पिता जी का एक्सीडेंट भयानक हुआ तब? तब शायद वे न बच सकें। अगर उसके पिता जी की मृत्यु हो गयी तब? तब प्रमोद की तरह वह भी उनकी जगह नौकरी पा जायेगा। हाँ मृतक के आश्रित होने के कारण उस खाली सीट पर उसे नौकरी मिल जायेगी।

तब नौकरी की तलाश में उसे कहीं भी भटकना नहीं पड़ेगा। फिर उसे बेवजह ऑफिसों के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे। इंटरव्यू में पूछे जानेवाले वाहियात प्रश्नों के उत्तर नहीं देने होंगे। 'साले' मन ही मन उसने गाली दी, नौकरी तो देते नहीं। सिर्फ सवाल ही करते हैं। वह भी फालतू के सवाल। उनके वाहियात सवालों का जवाब देते-देते, अब वह इतना ऊब गया है...थक गया है...तंग आ गया है। ढेर सारी बातें पूछने के बाद अंत में कहते, मेरे यहाँ अभी जगह नहीं है। इसीलिए किसी भी आफिस में जाने की इच्छा नहीं होती।

जगह नहीं है, सुनकर उसे मन ही मन बहुत क्रोध आता था। मन ही मन उसे खूब गालियाँ देता था। फिर बुदबुदाता, पहले ही कह देते कि जगह नहीं है। बेकार का समय खराब किया। किसी-किसी ऑफिस में जगह भी होती तो अनुभव की मांग होती। मालिक कहता मुझे अनुभवी व्यक्ति चाहिए। एक जगह उसने हिम्मत करके कहा था कि 'सर! नौकरी मिलेगी तभी तो अनुभव होगा। अभी तो मैं पढ़ाई खत्म करके निकला हूँ।'

'समझ रहा हूँ। लेकिन इन बातों से मुझे क्या लेना-देना। बस, मुझे अनुभवी व्यक्ति चाहिए। बिना अनुभव के मैं नौकरी पर नहीं रख सकता।' यह सुन वह छटपटाकर रह गया था। उसने सख्त निगाहों से उस आदमी की तरफ देखा था। जी में आया कि आगे बढ़कर इस आदमी का टेंटुआ दबा दे।

उठकर वहाँ से वह चल पड़ा था। बैठने से कोई फायदा भी नहीं था। धीरे-धीरे चलते हुए बुझे मन से वह ऑफिस के बाहर आ गया था। अगला स्टॉप हॉस्पिटल का है। वह उठा और आगे बढ़कर बस के अगले दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया। बस रुकी थी। कुछ और भी लोग उतरे थे। वह भी उतरा। बस से उतर कर वह सीधे हॉस्पिटल की तरफ चल पड़ा।

हॉस्पिटल के गेट से प्रवेश करते हुए वह सोच रहा था, 'काश! इस एक्सीडेंट से उसके पिता जी न बचें, ताकि उनकी मृत्यु से खाली सीट पर उसे...।' हॉस्पिटल के बरामदे में चलते हुए अब वह ईश्वर से मन ही मन पिता के स्वास्थ की कामना की बजाय मृत्यु की कामना कर रहा था।

657/2, सिविल लाइन-1
शिवाजी नगर, पी डब्ल्यू डी के निकट
सुलतानपुर-228001
मोबाइल: +91 9616887292

व्यंग्य

प्रेम रोग

- श्री रामनारायण सिंह 'मधुर' -

प्रेम रोग जिसे लगता है, वह दीन से भी जाता है और दुनिया से भी। बड़ा भयंकर रोग है - मलेरिया और फाइलेरिया से भी खतरनाक। इसका ताप जब चढ़ता है तो चढ़ता ही जाता है। उतरने का नाम नहीं लेता। उतरता भी है तो रोगी को मृतवत कर। कैंसर और एड्स का पता वर्षों बाद चलता है, पर प्रेम रोग का पता तुरंत चला जाता है। अब रमेश को ही देखो, अच्छा-भला था। ठीक समय पर जागा था, टहलने गया था और आते ही चादर तान फिर सो गया। घर वाले परेशान, क्या हो गया? माता ने पूछा, 'तबीयत खराब है क्या बेटा?' रमेश ने कोई उत्तर नहीं दिया, करवट बदल ली। पिता को पता चला, पूछा, 'क्या हो गया लाड़ले को। डॉक्टर को बुलाऊँ क्या?'

रमेश उस करवट से इस करवट घूम गया। डॉक्टर, वैद्य, हकीम आए, पर सब लाचार लौट गये। फिर आया उसका दोस्त उन्मेश। उन्मेश तो बस उन्मेश ही ठहरा, आते ही पीठ पर एक मुक्का मारा और चादर फेंकी, 'क्या स्वांग रच रखा है... हुआ क्या है तुम्हें? यह माजरा क्या है?' जोर से पूछा। 'बकबक मत कर, मुझे चुपचाप सोने दे।' रमेश बकबका उठा। 'क्यों, क्रिकेट खेलने नहीं चलोगे? तुम तो क्रिकेट खेलने के शौकीन हो। सारे मित्र तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।' 'यार, अब मैं क्रिकेट खेलने लायक नहीं रहा। मेरे दिल-क्रिकेट के सारे विकेट गिर चुके हैं।'

'अबे, जरा खुलासा कर न!' 'उन्मेश! आज जब मैं सुबह-सुबह भ्रमण के लिए निकला तो रास्ते में साइकिल चलती एक लड़की मुझे मुँह चिढ़ाते हुए निकल गई। प्यारे, मैं उसके मुँह चिढ़ाने की अदा पर फिदा हो गया। तब से मुझे कुछ भी अच्छा ही नहीं लग रहा है, बार-बार उसका ही चेहरा सामने आ रहा है। अब मेरे जीवन का क्या अर्थ है, सब कुछ व्यर्थ लगता है।' 'गए रमेश! तुम मारे गये। तुम्हें तो प्रेमरोग लगा गया। यह मर्ज लाइलाज है। मिया गालिब ने भी कहा है, 'आखिर इस मर्ज की दवा क्या है? देखा तुम्हारे जैसे चतुर खिलाड़ी कैसे बन गये अनाड़ी।'

दोस्त अब 'गर्दिश में गुब्बारे नजर आते हैं, दिन में ही तारे नजर आते हैं। लगता है कि बच नहीं पाऊँगा। बेमौत ही मर जाऊँगा। तुम मुझे जीवित देखना चाहते हो तो उससे एक बार मिला दो। तरस रही आँखें, बरस रही आँखें प्रियतम तेरे दीदार के लिए' कहते-कहते रमेश छाती पीट-पीटकर रोने लगा। घर के लोग इकट्ठे हो गये। कुहराम मच गया। रमेश का पूरा परिवार हाहाकार कर उठा। पास-पड़ोस, टोले-महल्ले वाले सब दौड़े-भागे आये, कि क्या हो गया रमेश को?'

80 वर्ष की तमंचा बुआ भी आ पहुँची। उन्हें सुनाई भी कम पड़ता था और दिखाई भी। बुआ समझी रमेश मर गया। छाती पीट रोने लगी 'हाय-हाय रे रमेश, कहाँ गया रे मुझे छोड़ कर, अब कौन राह बताएगा? मैं क्यों न मर गई?' ऐसा कुहराम मचाया कि रमेश भी हक्का-बक्का हो गया। बड़ी मुश्किल से 10 लोगों ने मिलकर उन्हें चुप कराया। उन्मेश ने जब वास्तविक स्थिति से सबको अवगत कराया तो सबके मुँह से केवल इतना ही निकला, 'बेचारा रमेश।'

जब एक-एक कर सब चले गये तो उन्मेश ने रमेश से कहा, 'बेवकूफ, तुमने पटिया का पहाड़ बना रखा है। मैं तुम्हारी प्रेमिका को जानता हूँ। मेरे पड़ोस में ही रहती है। साइकिल पर जब चलती है, तब मुँह बनाकर चलती है। यह उसकी आदत है। तुम्हें अगर इस आदत की इबादत करनी है तो कर, कल मरना है तो आज मर। चल उठ, उसके पास मैं तुम्हें ले चलता हूँ।' रमेश की जान में जान आ गई। मुँह धोया, क्रीम-पाउडर पोता। टाई बांधी, सूट पहना और चल पड़ा। उन्मेश ने अपने मुहल्ले के एक घर का दरवाजा खटखटाया, 'बुल्लू! देखो तुमसे मिलने कौन आया है?' 'बुल्लू', यानी बल्लरी ने दरवाजा खोला और उन्मेश से पूछा, 'कौन आया है?'

उन्मेश ने रमेश की ओर इशारा किया। रमेश एकटक, अपलक, ललक से बल्लरी को घूर रहा था। बल्लरी ने अदा से मुँह बना लिया और बोली, 'कौन है यह फंटूश? मैं इसे नहीं जानती। इसकी आँखें हैं या बटन, जो बंद होना नहीं जानतीं। इस मेंढ़क को यहाँ क्यों लाये हो? क्या इसे जुकाम हो गया है?'

उन्मेश ने रमेश को चिकोटी काटी। हकलाते, मिमियाते रमेश बोला, 'मैं... मैं... मैं...।' 'मेमने की तरह क्या मे... मे... मे... लगा रखी है। जो कहना है, जल्दी कहो। अखाड़े से मेरे पापा आते ही होंगे। मुझसे बात करते देखेंगे तो तुम्हें उठाकर पटक देंगे, बड़े गुस्से वाले हैं।' रमेश के मुँह से बड़ी मुश्किल से निकला, 'मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।' 'क्या कहता है बे, तू मुझसे प्यार करेगा, लंगूर की औलाद। आइने में अपनी चिलमची सी शक्ल देखी है। भाग यहाँ से कम्बख्त कहीं का...।'

आ पहुँचे तभी चिथरू पहलवान, यानी बल्लरी के पिताजी। बोले, 'कौन है, क्या बात हो रही है?' बल्लरी ने रमेश की ओर इशारा करते हुए कहा, 'यह कह रहा है कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ। 'क्या कहा...? मेरी बेटी से प्यार करने आया है' और एक ऐसा झापड़ रमेश के गाल पर रसीद किया कि वह गिरते-पड़े गाल सहलाते वहाँ से भाग खड़ा हुआ। घर पहुँचते-पहुँचते गाल सूज गया, एक दाँत जड़ से उखड़ गया, बुखार चढ़ गया और यह बुखार प्रेम के चढ़ाव का नहीं, उतार का था।

- 21, मानसनगर
दुर्गाकुंड
वाराणसी-221005

सफलतम सेवा प्रदाता यातायात विभाग

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड - विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र देश की 'नवरत्न' उपाधि प्राप्त एक विशालकाय कंपनी है। जैसाकि आप जानते हैं, इस्पात का उत्पादन एक जटिल प्रक्रिया है और इसके लिए बहुत प्रचुर मात्रा में कच्चेमाल की आवश्यकता होती है। वैसे तो कंपनी का यातायात विभाग कंपनी में आंतरिक स्तर पर ढुलाई का काम करता है। साथ ही भारतीय रेल के साथ समन्वय करके इस कच्चेमाल को निर्धारित जगहों पर रखवाता है तथा उसका प्रहस्तन करता है। कंपनी का यातायात विभाग उपरोक्त कार्य की जिम्मेदारी सक्रियता से निभाता है।

यातायात विभाग अपने कार्यकलाप बेहतर ढंग से निभाने के लिए विभाग को छः अनुभागों में बांट रखा है और उन अनुभागों (स्टेशन/यार्ड) के कार्य का निर्धारण भी निम्नवत किया है:

1) कच्चामाल लदाई यार्ड (रॉ मेटेरियल अपलोडिंग यार्ड)
2) कोक ओवेन एवं कोयला रसायन संयंत्र यार्ड (कोक ओवेन एवं कोल केमिकल प्लांट यार्ड)
3) धमनभट्ठी यार्ड (ब्लास्ट फर्नेस यार्ड)
4) अपरिष्कृत लौह यार्ड/धातुमल भंडारण यार्ड (पिग स्टोरेज यार्ड/स्लैग यार्ड स्टेशन)
5) मिश्रित वस्तु एकत्रीकरण यार्ड (मिक्स गुड्स मार्शलिंग यार्ड)
6) रोलिंग मिल्स उत्पाद छँटाई यार्ड (रोलिंग मिल्स प्रोडक्ट सार्टिंग यार्ड)

वी एस पी की यह विशेषता है कि इसने अपने भीतर

चारों ओर रेलवे लाइन बिछाया है, जो एक अच्छी संकल्पना है, जिससे रेलवे वैगनों की उपलब्धता की अवधि में सुधार होता है और रेलवे एवं वी एस पी दोनों को एक ही पटरी के उपयोग की दिक्कतों से निजात मिलती है। इससे कच्चेमाल के सभी रैकों को प्री-टिपलर लाइन पर सीधे पहुँचाने में सुविधा होती है।

यातायात विभाग का मुख्य काम संयंत्र के भीतर रेलमार्ग के माध्यम से धमनभट्ठी से इस्पात गलन शाला व मिक्सर तथा पिग कॉस्टिंग मशीन में तप्तधातु पहुँचाना, सिंटर संयंत्र के धात्विक व्यर्थ (उड़नशील धूलकणों व मिलों से निकले उत्पादों के शिरों) ढोना, पिग कॉस्टिंग मशीनों से कच्चेलोहे को पिग स्टोरेज यार्ड में पहुँचाना तथा भारतीय रेल से खाली रैक लेना एवं उन्हें लदान के लिए विभिन्न जगहों पर वितरित करना एवं उनमें परिसज्जित इस्पात उत्पादों/उप उत्पादों की लदाई एवं वजन करने के पश्चात भारतीय रेल के सुपुर्द करना होता है।

मूल सुविधाएँ:

1) रोलिंग स्टॉक:

क्रम सं.	विवरण	संख्या
01	लोकोमोटिव	31
02	वैगन	
अ)	पिग वैगन	33
आ)	वी ओ बी एस वैगन	11
इ)	फ्लैट वैगन	13
ई)	बॉक्स वैगन	10
उ)	वी वी जेड सी वैगन (परीक्षण वैगन)	01

2) री-रेलमेंट के लिए उपलब्ध उपस्कर:

क्रम सं.	विवरण	संख्या
01	225 टन क्षमता के रेल क्रेन	01
02	225 टन क्षमता के रेल क्रेन	01
03	लुकास पॉवर पैक उपस्कर	01 सेट

3) संकेतन व यार्ड संचार प्रणाली:

1) यार्ड के संचालन हेतु सॉलिड स्टेट इंटरलॉकिंग प्रणाली

2) लोकोमोटिव दल और नियंत्रण कक्ष के बीच संपर्क स्थापित करने के लिए मोबाइल रेडिया ट्रैकिंग प्रणाली (एम आर टी एस)।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र ने अपनी यातायात सुविधा को तर्कसंगत रूप से उपयोगी बनाने के लिए संयंत्र के भीतर के परिसर में 135 किलोमीटर का रेल पटरियों का एक तंत्र विकसित किया है।

जैसाकि आपको विदित है कि राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र में प्रथम चरण का विस्तारण कार्य लगभग पूरा हो चुका है। कई इकाइयों से उत्पादन आरंभ हो चुका है तथा अन्य कई इकाइयाँ उत्पादन के लिए तैयार हैं। साथ ही पुराने कन्वर्टरों व धमनभट्ठियों के आधुनिकीकरण से भी संयंत्र की उत्पादन क्षमता में प्रतिवर्ष 1 मिलियन टन की बढ़ोत्तरी

होगी, अर्थात प्रथम चरण के विस्तारण व पुराने संयंत्र के पुनरोद्धार के पश्चात कंपनी की कुल उत्पादन क्षमता 7.6 मिलियन हो जाएगी। इसके लिए यातायात विभाग की क्षमता में भी विस्तार किया जा रहा है, जिसमें कुछ रेल पटरियों का बिछाया जाना तथा कुछ आवश्यक उपस्करों को खरीदना अति आवश्यक है। विस्तारण की चुनौतियों का सामना करने के लिए निम्निलिखित सुविधाएँ लगाई जा रही हैं।

क्रम सं	विवरण	मात्रा
01	अतिरिक्त रेल पटरी (आधुनिक संकेतक प्रणाली 'एस एस आई' सहित)	35 किलोमीटर (धमनभट्ठी यार्ड, आर एम यू वाइ एवं आर एम पी एस वाई)
02	लोकोमोटिव्स आधुनिक माइक्रोप्रोसेसर आधारित नियंत्रण प्रणाली सहित	08 अदद
03	मोबाइल वॉयरलेससंचार प्रणाली	91 एम आर टी एस सेट

इस प्रकार यातायात विभाग संयंत्र में आने वाले कच्चेमाल व बाहर भेजे जाने वाले कंपनी के उत्पादों के आवागमन को सुचारु ढंग से संचालित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका बखूबी निभा रहा है।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र में प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 'सप्ताह' मनाया गया। इस अवसर पर कर्मचारियों के अलावा उनके आश्रितों एवं उक्कुनगरम व परित: क्षेत्रों में स्थित सभी स्कूलों के बच्चों के लिए दो श्रेणियों में 'निबंध लेखन प्रतियोगिता' आयोजित की गई। इसमें प्राप्त उत्कृष्ट लेखों को 'सुगंध' के प्रस्तुत अंक में दिया जा रहा है।

खराब अर्थव्यवस्था के कारक

- सुश्री अलका झा -

भारत एक प्रगतिशील देश है। एक जमाने में इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था। आज हमारा देश विश्व मंच पर एक विकासशील देश के रूप में जाना जाता है। दुनिया के अन्य विकसित देशों, जैसे अमेरीका, चीन, जापान, रूस आदि की निगाहें हम पर हैं और वे कभी-कभी हमारी प्रगति में बाधक बनते हैं। लेकिन इससे हमारा कोई नुकसान नहीं होनेवाला है। इसके लिए अन्य तत्व उत्तरदायी हैं। आज भले ही हमारी अर्थव्यवस्था आज कुछ चरमराती दीख रही है, लेकिन हम उस मोड़ पर नहीं पहुँचे हैं कि हमें आसानी से कोई नकार सके।

हमारे समक्ष आज जो चुनौतियाँ आ खड़ी हैं, उनमें से प्रथम उत्तरदायी तत्व है अंतर्राष्ट्रीय स्थिति है। विश्व-बाजार की स्थिति ही अनियंत्रित हो गई है, जिसने भारत के साथ-साथ कई देशों को बुरी तरह प्रभावित किया है। कच्चे तेल का अंतर्राष्ट्रीय बाजार इतने उथल-पुथल के साथ करवटें ले रहा है कि हमारे समक्ष आर्थिक असंतुलन की चुनौती आ जाती है। रोजमर्रा का सामान बहुत महँगा हो गया है, वहीं इलेक्ट्रॉनिक्स के सामान इतने सस्ते हो गये हैं कि लोग इनकी गुणवत्ता पर ध्यान ही दे रहे हैं, सिर्फ खरीदते हैं उपयोग करते हैं और फेंक देते हैं। इससे हमारे देश के उत्पादन प्रभावित होते हैं। हमारे उत्पादन में होनेवाली उन्नति का दर घट जाता है। फिर भी हमारी अर्थव्यवस्था अभी भी संतुलित है। हमारा सकल घरेलू उत्पाद (G.D.P.) दर अच्छा चल रहा है। इन चुनौतियों का सामना करने में हम सक्षम हैं।

इसका दूसरा उत्तरदायी तत्व है देश के पूँजीपति और जमाखोर हैं। मुझे यह कहने में कतई संकोच नहीं होता है कि देश के पूँजीपति और जमाखोर राजनीतिज्ञों के साथ सांठ-गांठ बना बैठे हैं। एक प्रजातांत्रिक देश की राजनीति कोई कारोबारी चलाए यह ठीक नहीं है। वह जिस दिन चाहे, उस दिन चीजों के दाम बढ़ते हैं और उसके चाहने से दाम घटते हैं। कुछ पूँजीपति घराने देश की अर्थव्यवस्था और औद्योगिक उत्पादन पर अपना वर्चस्व बनाए हुए हैं। जो सरकारी कंपनियों को उठने ही नहीं देते और राजनेताओं तथा अधिकारियों को थोक के हिसाब से फायदे देते हैं। ये पूँजीपति देश के चुनाव से लेकर सरकार चलाने तक की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इससे हमारी अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ बढ़ती हैं और आम जनता पिस जाती है। आज साइकिल से लेकर हवाई जहाज निर्माण पर पूँजीपतियों का नियंत्रण है। आवश्यकता इस बात की है कि सरकार इसके अंदर अपनी पैठ कायम करें। इसकी लगाम अपने हाथों में ले। उन पर नकेल डालें, उनका दायरा सीमित करें, तब हमारा उत्पादन गुणवत्ता के साथ बाजार में उतरेगा और हमारी चुनौतियाँ कम होंगी।

अर्थव्यवस्था के समक्ष तीसरी चुनौती है राजनीतिक गुणवत्ता है। देश के राजनेताओं में बहुत से लोग कम पढ़े-लिखे और दागदार हैं। इनकी विकृत मानसिकता के कारण देश बरबाद हो रहा है। ये अपनी तिजोरी भरने में दिन-रात लगे रहते हैं। कॉमनवेल्थ गेम हो या टू जी स्पेक्ट्रम घोटाला हो या कोयला घोटाला हो, देश का राजस्व बहुत बरबाद हुआ है। देश का धन अवैध रूप से न जाने कितनों के पास जमा है, अवैध धन यदि वापस मिल जाए तो एक साल तक देश का खर्च चल सकता है। साथ ही न जाने कितना काला धन विदेशों में जमा है, जो देश की आर्थिक व्यवस्था को बिगाड़ता है। अब तो लोग स्वार्थवश कानून में बदलाव लाकर अपना स्वार्थ साधते हैं। लेकिन अब आवश्यकता है इन सबकी सोच में बदलाव लाने की।

चौथा उत्तरदायी तत्व है हमारे संचार माध्यम अर्थात मीडिया है। ये इतना दुष्प्रचार करते हैं कि हमारे देश की जगहँसाई होती है। हमारी कार्यप्रणाली, सुधार प्रक्रिया के कदम को सभी जान जाते हैं और प्रगति में कोई रोड़ा आ जाता है। निर्यात करने में प्राप्त डॉलर की तुलना में रुपये का स्तर गिरता जाता है, जो विदेशी नीति का परिणाम है। इन पर सरकारी अंकुश जरूरी है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि 121 करोड़ से अधिक आबादी वाले भारत के नागरिकों को जागरूक होना होगा। हम भी अनावश्यक खर्च पर अंकुश लगायें, जिससे हमारा बाजार नियंत्रित हो। पिछले साल धनतेरस के अवसर पर मात्र दिल्ली में एक दिन में 80,000 चार-पहिया वाहनों की बिक्री हुई। इससे पता चलता है कि निजी कंपनियाँ किस तरह से फूल फल रही हैं और और सरकारी कंपनियाँ किन चुनौतियों का सामना कर रही हैं। अत: हमें व्यक्ति से व्यक्ति तक सजगता बढ़ानी होगी और इस उक्ति को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ना होगा -

'कुपथ-कुपथ जो रथ दौड़ाता, पथ निर्देशक वह है,
लाज लजाती जिसकी कृति से, धृति उपदेशक वह है।।'

- नौवीं कक्षा, केंद्रीय विद्यालय
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम

बाल-सुगन्ध

भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष चुनौतियाँ

- मास्टर टी उमा महेश्वर राव -

'देश को देखकर एक ही ख्याल आता है
उस ख्याल में जुबॉ पर एक ही सवाल आता है
तेरी सर जमीं पर कौन सा वो दिन होगा
जब कोई न छोटा या बड़ा होगा।।'

भारत विश्व की नौवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। भौगोलिक आकार के संदर्भ में यह विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा देश है और जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा देश है। हाल के वर्षों में भारत गरीबी और बेरोजगारी के बावजूद विश्व में तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था वाला देश बना है।

ऐतिहासिक रूप से भारत की अर्थव्यवस्था एक विकासशील अर्थव्यवस्था रही है, इसका विश्व के अन्य देशों से मजबूत व्यापारिक संबंध रहे हैं। वर्ष **1947** में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था की पुनर्निर्माण प्रक्रिया प्रारंभ हुई। इस उद्देश्य से विभिन्न प्रकार की नीतियों और योजनाओं का निर्माण हुआ तथा पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से इन्हें कार्यान्वित भी किया गया।

वर्तमान में भारत की अर्थव्यवस्था हिचकोले खा रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था की तस्वीर अगले पचास सालों तक गुलाबी बनी रहेगी। मगर अधिकतर लोगों के चेहरे पर कोई रंगत नहीं होगी। देश के विकास की यह तस्वीर ओ ई सी डी ने उकेरी है। अमीर देशों के इस संगठन ने अपने ताजा प्रतिवेदन में यह दावा किया है कि भारत की अर्थव्यवस्था वर्ष **2011** से **2060** तक विश्व में सबसे तेज रफ्तार से विकास करेगी। यह सिक्के का चमकदार पक्ष है। इसका दु:खद पहलू यह है कि तब भी यहाँ की आबादी आमदनी के लिहाज से दुनिया में निचले पायदान पर

होगी। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन आई सी डी के प्रतिवेदन के मुताबिक इन पचास वर्षों के दौरान देश की सालाना औसत विकास दर **4.9** फीसदी होगी। संतोषजनक बात यह है कि भारतीय अर्थव्यवस्था की यह रफ्तार चीन की रफ्तार के मुकाबले ज्यादा होगी। इस अवधि में चीन के विकास की दर **3.7** फीसदी रहेगी। इस दौरान भारत का प्रतिव्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद भी बढ़कर सात गुना हो जाएगा। इन सबके बावजूद वर्ष **2060** में भारतीयों की औसत आमदनी विश्व में इंडोनेशिया से भी कम होगी।

ये सब आंकड़े तो जैसे आम आदमी के सिर से ऊपर उड़ते ही जा रहे हैं और वह मुँह बाये खड़ा है। अगर आम आदमी की भाषा में कहा जाय तो भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति को देखना होगा। वर्ष **2011** बड़ी-बड़ी घोषणाओं के साथ शुरु हुआ। पूरे वर्ष में भारत की आर्थिक स्थिति पर नजर डाली जाय तो बिना लाग-लपेट के पता चलता है कि यह कुल मिलाकर घोषणाओं का वर्ष रहा, न कि विकास का। पूरे वर्ष देश में महंगाई ने आतंक मचाये रखा। माँग व आपूर्ति के असंतुलन से भारतीय अर्थव्यवस्था में असंतुलन ऐसा घर कर दिया कि सार्वजनिक व निजी दोनों क्षेत्र की कंपनियाँ भारी घाटे में पहुँच गईं और कर्ज के बोझ से हालात खराब हो गये। बिजली उत्पादन कंपनियाँ, किंगफिशर एयरलाइंस इसके उदाहरण हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रत्येक क्षेत्र कर्ज में डूबा है। देश के सार्वजनिक क्षेत्र पर राष्ट्रीय आय का **66** फीसदी कर्ज का बोझ है, तो अन्य क्षेत्र पर लगभग राष्ट्रीय आय का **50-60** फीसदी कर्ज है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि आगामी वर्ष भारत के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण होंगे। कुल मिलाकर देखा जाए तो यह वर्ष देश को आर्थिक संतुष्टि नहीं दे पाया और साथ ही देश के नीति निर्माताओं के लिए अर्थव्यवस्था को सही राह पर लाने हेतु चुनौतियाँ छोड़ गया। पर एक सवाल उठाना अब भी लाजिमी होगा कि अनुमानों से देश नहीं चल सकता -

'नाते-रिश्ते सब हैं पीछे, सबसे आगे है यह पैसा
खूब हँसाता, खूब रुलाता, सबको नाच नचाता पैसा।
सबको नाच नचाता पैसा।।'

- नौवीं कक्षा
श्री अरविंदो आइडियल हाई स्कूल
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम

उदारीकरण: एक अच्छी पहल

- मास्टर विपिन कुमार -

वर्तमान सदी में हमारे विचारों में स्वतंत्रता व खुली मानसिकता स्पष्ट झलकती है। ऐसी स्थिति में जो व्यक्ति आर्थिक उदारीकरण का विरोध कर रहे हैं, वे या तो अपनी रूढ़िवादी मानसिकता का परिचय दे रहे हैं अथवा इस नीति से पूर्णतया परिचित नहीं हैं। उदारीकरण का विरोध केवल उन्हीं लोगों द्वारा किया जा रहा है, जो विश्व के अन्य देशों से प्रतिस्पर्द्धा करने में अक्षम हैं। वे लोग अपनी स्वार्थ-सिद्धि के कारण ही इसे विवाद का मुद्दा बना रहे हैं। आज उदारीकरण हमारे लिए विकल्प नहीं है, वरन् भारतीय अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए अति आवश्यक कड़ी है।

आर्थिक उदारीकरण का आशय :

उदारीकरण का अर्थ है कि सरकारी नियंत्रण से मुक्ति। आर्थिक उदारीकरण का अर्थ यह नहीं है कि कोई भी विदेशी कंपनी हमारे देश में आकर संसाधनों का उपयोग करें, बल्कि उदारीकरण के अंतर्गत हम अपने इच्छानुसार अपना लाभ देखते हुए विदेशी कंपनियों को अपने देश में उद्योग स्थापित करने के लिए आमंत्रित करें।

उदारीकरण की आवश्यकता :

सन् **1947** में हमारे देश ने आजादी प्राप्त की। उसके बाद भारत के आर्थिक विकास के लिए विभिन्न योजनाएँ बनाई गईं। लेकिन देश निरंतर आर्थिक समस्याओं के दुष्चक्र में फँसता चला गया। सन् **1990-91** में भारत के समक्ष एक ही वित्तीय संकट की स्थिति उत्पन्न हुई थी। किसी भी देश का आर्थिक विकास पूँजी के अभाव में संभव नहीं। अर्थव्यवस्था के स्वस्थ विकास के लिए विदेशी पूँजी निवेशक आवश्यक ही नहीं, अपरिहार्य होते हैं। वित्तीय संकट की इस स्थिति से उबरने के लिए भारत के पास एक ही विकल्प मौजूद था, और वह था उदारीकरण, अर्थात अन्य देशों के संबंध में उदारता की नीति अपनाकर उन्हें अपने देश में पूँजी निवेश के लिए आमंत्रित करना, ताकि भारत अपने वित्तीय संकट की समस्या से निजात पा सके और देश की अर्थव्यवस्था सुचारु रूप से चल सके। आज कोई भी देश आर्थिक विकास की दौड़ में शामिल हुए बिना अपना संपूर्ण विकास नहीं कर सकता। यदि वह सबसे अलग हटकर अपने चहुँमुखी विकास की बात करता है तो यह महज एक कल्पना मात्र है, वास्तविकता में ऐसा संभव नहीं। इन सभी तथ्यों को स्वीकारते हुए ही भारत ने गेट समझौते पर हस्ताक्षर किया। भारत जैसे विकासशील देश प्रशुल्क दरों एवं व्यापार सामान्य समझौते का पूरा लाभ तभी उठा सकते हैं, जब वे अपनी प्रतिस्पर्द्धात्मक शक्ति का विकास करें। इसके लिए भारत ने उदारीकरण का मार्ग चुना। उदारीकरण से आर्थिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा बढ़ती है तथा प्रतिस्पर्द्धा से वस्तुओं के मूल्य में कमी तथा गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

उदारीकरण नीति का देश के आर्थिक विकास पर प्रभाव:

यद्यपि उदारीकरण की आर्थिक नीति भारत में अधिक पुरानी नहीं है, लेकिन विगत कुछ वर्षों में इसके परिणाम उत्साहजनक रहे हैं। आर्थिक विकास की दर पहले की तुलना में बढ़ी है एवं हमारे निर्यातों में भी वृद्धि हुई है। उदारीकरण के फलस्वरूप हमने अपने देश में विदेशी तकनीक का आयात कर अपनी तकनीकी व्यवस्था में सुधार किया है।

जहाँ पहले बाजार में किसी वस्तु के एक या दो विकल्प ही मौजूद थे, वहीं आज हमारे पास विभिन्न वस्तुओं के विभिन्न विकल्प मौजूद हैं। विश्व बैंक ने भारत के आर्थिक सुधार एवं उदारीकरण कार्यक्रम की प्रशंसा की है। जब सन् **1990-91** में भारत के समक्ष वित्तीय संकट पैदा हो गया था, तब उदारीकरण की नीति अपनाने के बाद भारत में विदेशी मुद्रा भंडार में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम के मतानुसार यदि भारत अपनी वित्तीय उदारीकरण नीति जारी रखता है तो वह प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय शक्ति बन सकता है। भारत लगभग एक अरब डालर का विदेशी पूँजी निवेश आकर्षित कर सकता है।

उदारीकरण के विपक्ष में तर्क :

उदारीकरण की आलोचना करनेवाले लोगों का यह मानना है कि उदारीकरण की नीति अपनाकर हम अपने देश को एक बार फिर गुलामी के मार्ग पर ले जा रहे हैं। यह नीति साम्यवाद को नहीं पूँजीवाद व उपनिवेशवाद को बढ़ावा देती है। उदारीकरण द्वारा धनी व पूँजीपति वर्ग का ही उद्धार संभव है, गरीब वर्ग का नहीं। उदारीकरण की नीति द्वारा हमारे देश के छोटे तथा घरेलू उद्योग नष्ट हो जायेंगे और उनका स्थान बड़ी-बड़ी कंपनियाँ ले लेंगी। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में बेरोजगारी एवं निर्धनता को बढ़ावा मिलेगा। मशीनीकरण के फलस्वरूप हजारों लोग बेरोजगार हो जायेंगे।

अत: कहा जा सकता है कि आर्थिक उदारीकरण एक दुधारी तलवार की तरह है, जहाँ इसका विवेकपूर्ण उपयोग उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है, वहीं इसका अनुचित प्रयोग देश की अवनति का कारक बन सकता है। हमें एशियाई देशों से सबक लेते हुए इस नीति को ऐसे लागू करना चाहिए कि भारतीय उद्योग कड़े संघर्ष के बाद अपना विकास कर सके।

- ग्यारहवीं कक्षा, केंद्रीय विद्यालय
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम

अध्यात्म

क्रोध

क्रोध के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'चिंतामणि' में कहा है कि 'क्रोध दु:ख के चेतन कारण से साक्षात्कार या अनुमान से उत्पन्न होता है। क्योंकि साक्षात्कार के समय दु:ख और उसके कारण का परिज्ञान आवश्यक है। क्रोध करने वाला जिस ओर से दु:ख आता है उसी ओर देखता है, अपनी ओर नहीं। जिसने दु:ख पहुँचाया हो उसका नाश हो या उसे दु:ख पहुँचे, यही क्रुद्ध व्यक्ति का लक्ष्य होता है। न तो वह यह देखता है कि मैंने भी कुछ किया है या नहीं, न इस बात का ध्यान रहता है कि क्रोध के वेग में मैं जो कुछ करूँगा उसका परिणाम क्या होगा? यह क्रोध का अंधापन है।'

आचार्य शुक्ल आगे कहते हैं कि 'क्रोध की उग्र चेष्टाओं का लक्ष्य हानि या पीड़ा पहुँचाने के पहले आलंबन में भय का संचार कराना रहता है। जिस पर क्रोध किया जाता है और वह डर जाता है तथा नम्र होकर पश्चाताप करता है, तो क्षमा का अवसर सामने आता है।'

क्रोध एक सहज मानसिक प्रवृत्ति है, इससे दूसरों का कितना नुकसान होता है इसका मापन तो कठिन है, पर क्रोध करने वाले को क्रोध की तीव्रता के अनुरूप कभी-कभी भारी नुकसान पहुँचता है। वह कभी-कभी मानसिक व शारीरिक रूप से अनियंत्रित हो जाता है, जिससे उसका भारी नुकसान होता है। इसीलिए जन कल्याण के लिए भगवान बुद्ध ने क्रोधी मनुष्य की सात आकांक्षाओं का उल्लेख किया है, जिनसे उसे प्रसन्नता होती है। यथा:

1) क्रुद्ध व्यक्ति चाहता है कि उसका शत्रु कुरूप हो जाए,
2) शत्रु पीड़ा पाए, 3) शत्रु विपन्न हो जाए,
4) शत्रु गरीब रहे, 5) शत्रु की ख्याति न फैले,
6) शत्रु मित्रहीन रहे, 7) शत्रु को सद्गति न मिले।

क्रोध का प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर ऐसा रहता है कि किसी बात का अर्थ ठीक से समझ में नहीं आता। क्रोधी हमेशा अंधकार में रहता है। वह बेशर्म हो सकता है और किसी को भी कुछ भी कह सकता है। क्रोधी का नुकसान अधिक होता है, इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है कि 'जो लोग क्रोध का त्याग कर देते हैं वे निर्वाण प्राप्त करते हैं।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से क्रोध एक भावना है। क्रोध के समय शारीरिक स्तर पर कई बदलाव दीखते हैं। क्रोध के समय हृदय की गति बढ़ जाती है और शरीर का रक्तचाप बढ़ जाता है। प्रो. महावीर सरन जैन के अनुसार 'क्रोध और अहंकार एक दूसरे के पूरक हैं। क्रोधी मनुष्य की मानसिक शांति नष्ट हो जाती है। उसकी विवेकपूर्ण कार्य करने की स्थिति समाप्त हो जाती है।'

गीता में भी कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा है कि 'क्रोध से अविवेक व मोह होता है, मोह से स्मृति का भ्रम होता है तथा बुद्धि का नाश होने से व्यक्ति कहीं का नहीं रह जाता।' यह सत्य है कि क्रोध स्वयं का अधिक नुकसान करता है। लेकिन इसे भी नकारा नहीं जा सकता कि यह मनुष्य के मनोभावों का एक अभिन्न संवेग है। कभी-कभी तो जो काम प्रेम, अनुनय-विनय आदि से नहीं होता है, वह क्रोध से हो जाता है। लेकिन इसे मानव प्रवृत्ति की उत्तम प्रकृति नहीं माना जाता। क्रोध न करना या उसे नियंत्रित करना ही श्रेष्ठतम है। इसीलिए बाइबिल में कहा गया है कि 'मूर्ख मनुष्य क्रोध को जोर-जोर से व्यक्त करता है, किंतु बुद्धिमान शांति से उसे वश में करने का प्रयास करता है।'

महान दार्शनिक बेंजामिन फ्रेंकलिन ने भी कहा है कि 'क्रोध कभी भी बिना कारण नहीं होता, लेकिन कदाचित ही यह कारण सार्थक होता है।' जब क्रोध का कारण सार्थक नहीं है और यह स्वयं को ही अधिक नुकसान पहुँचाता है, तो इससे बचना ही श्रेयस्कर है। इसीलिए अध्यात्मिक गुरु, योगाचार्य, प्रबंध विशेषज्ञ व स्वास्थ्य वेत्ता हमेशा क्रोध से बचने के लिए कहते हैं। लेकिन क्रोध से बचना बहुत ही कठिन है। फिर भी कुछ उपायों पर ध्यान देकर इससे बचा जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि क्रोध के समय व्यक्ति विवेकहीन हो जाता है, अत: क्रोध की अवस्था उत्पन्न होने से पहले ही विवेक बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। यह व्यक्ति को वर्तमान में बनाए रखता है। महात्मा गांधी ने भी क्रोध से बचने का उपाय सुझाया है। उनके मुताबिक 'क्रोध को जीतने में मौन सबसे अधिक सहायक है।' विशेषज्ञ मानते हैं कि क्रोध का विश्लेषण करके उसे कहीं लिखना और समय-समय पर उसे पढ़ने से क्रोध की तीव्रता घटती है। योगाचार्य भी क्रोध से बचने के नुस्खे बताते हैं। उनके मुताबिक क्रोध की कोई विशेष औषधि नहीं है, लेकिन कुछ योगाभ्यासों से क्रोध पर काबू पाया जा सकता है। जैसे कि क्रोध आने की स्थिति में लंबी-लंबी सांसे लें। इससे क्रोध नियंत्रित होता है अथवा कोई हास्य का अवसर ढूँढ़ें, इससे चेतनावस्था में लौटने में सहायता मिलती है। साथ ही क्रोध की प्रवृत्ति में कमी लाने के लिए ध्यान लगाएँ तो क्रोध की तीव्रता में गिरावट आएगी। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भरसक ऐसी परिस्थितियों से अपने आप को दूर रखें जिनसे आपको क्रोध आता हो। क्रोध से बचाव ही क्रोध का उपचार है।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र में सितंबर, 2013 के दौरान 'हिंदी दिवस' एवं 'सप्ताह' मनाया गया। इस अवसर पर कर्मचारियों के लिए 'कहानी लेखन प्रतियोगिता' आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कहानी को 'सुगंध' के इस अंक में स्थान दिया जा रहा है।

आविष्कार-2

- श्री अमित कुमार -

पिछले भाग में आपने पढ़ा था कि गाँव का एक लड़का 'रोबो' भारत सरकार से मेधा छात्रवृत्ति पाकर आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अनुवांशिकी अभियंत्रणा में शोध कर रहा था। उसके शोध ने मानव जीन में परिवर्तन कर मानव को स्वयं अपना खाना तैयार करने लायक बना दिया है। मानव अब पेड़-पौधों की भांति स्वयं खाना बनाने में सक्षम बन गया है। इस अविष्कार से पूँजीवादी देशों को परेशानी बढ़ गई है। वे सोचने लगे हैं, कि अगर मानव आत्मनिर्भर हो जाएगा तो दुनिया से गरीबी मिट जाएगी। गरीबी मिटने से उनका वर्चस्व पर खतरा आ जाएगा। 'रोबो' को मानव जीन के प्रतिबंधित क्षेत्रों में शोध करने के लिए गिरफ्तार कर लिया जाता है। उसके शोध के अनुपालन पर रोक लगा दी जाती है। 'रोबो' के आविष्कार की चर्चा दुनिया भर में हो रही थी। जिस खोज से दुनिया की भूख मिट सकती हो, उसे प्रतिबंधित कैसे किया जा सकता है? पूरे विश्व में रोबो की गिरफ्तारी की चर्चा हो रही थी।

धीरे-धीरे पूरा विश्व 'रोबो' के आविष्कार के समर्थन में खड़ा होने लगा। देशों की सीमाएँ भी लोगों को अलग नहीं कर पा रही थी। हर जगह सिर्फ 'रोबो' की बात हो रही थी। आज कोई भारतीय या पाकिस्तानी नहीं, ब्रिटिश या फ्रांसीसी नहीं, शिया या सुन्नी नहीं, कैथोलिक या प्रोटेस्टेंट नहीं, सब एक थे। पूरा विश्व सिर्फ दो गुटो में बंट गया था, मानवीय तथा अमानवीय। 'रोबो' के आविष्कार ने पूरे विश्व को जोड़ दिया था। आज 'वसुधैव कुटुंबकम' का नारा सच दीख रहा था। पूँजीवादी देशों में भी विद्रोह होने लगा था। अंतत: मानवता की जीत होती है। 'रोबो' आजाद किया गया। उसके शोध को मानव जाति के उत्थान में समर्पित किया गया। ... इससे आगे.....

पुलिस जीप में 'रोबो' जेल से लौटकर पुन: आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रांगण में आता है। सारे छात्र 'रोबो', 'रोबो' चिल्ला रहे थे। 'रोबो' पुलिस जीप से बाहर निकलता है।

रोबो कहता है, 'मेरे प्यारे साथियों! आज का दिन मानव इतिहास का स्वर्णिम दिन है, अब पूरा विश्व जाति, धर्म, संप्रदाय, रंगभेद से ऊपर उठ चुका है। आज हम सब सिर्फ मानवता के लिए खड़े हुए हैं। परंतु यह एकजुटता क्षणभंगुर न हो, इसका ख्याल रखना। नापाक ताकतें फिर कोशिश करेंगी, पर तुम सावधान रहना। मेरे प्यारे दोस्तों! आज से मानव संपूर्ण आजादी महसूस कर पाएगा।'

तभी रोबो का मित्र मैक पूछता है, 'यार रोबो! अब तो तुम भारत जाकर देश का नाम रोशन करोगे। अब हमारा देश विश्व में सबसे मजबूत बनेगा। यह आविष्कार हमारे देश का कायाकल्प कर देगा।'

रोबो कहता है, 'मैक! मेरा आविष्कार किसी देश को नहीं, बल्कि मानवता को समर्पित है। आज हम इस मोड़ पर फिर अपने-अपने देश की बात करेंगे तो यह इस आविष्कार का अपमान होगा। मेरे दोस्त! ये देश, राज्य, महादेश...ये सारी सीमाएँ...ये दीवारें...मानव द्वारा बनाई गई हैं। इसलिए मेरा यह आविष्कार किसी सीमा से रोका नहीं जा सकता है। यह पूरे विश्व को समर्पित है। रोबो की सहपाठी जुलियट आवाज लगाती है, 'रोबो! तो क्या तुम अपने आविष्कार के लिए कापीराइट या पेटेंट नहीं दाखिल करोगे?'

रोबो कहता है, 'हाँ, जुलियट! यह आविष्कार बिलकुल मुफ्त होगा। इस पर किसी प्रकार का बंधन नहीं होगा। यह तो समाज के प्रति हमारा दायित्व है कि इस तरह के आविष्कार को हम बिना किसी बंधन के मानव उत्थान के लिए समर्पित कर दें।'

सारे लोग जोरदार ताली बजाकर अपनी सहमति का इजहार करते हैं। रोबो, मैक तथा जुलियट अपने अपने छात्रावास की ओर प्रस्थान करते हैं।

इस आविष्कार को मानव पर आजमाने से पहले जानवर पर परीक्षण की सलाह आक्सफोर्ड के जजों की टीम देती है। काफी कोशिशों के बाद दवा इंजेक्शन के रूप में बनाई जाती है। आज दवा का परीक्षण होना है। इंजेक्शन बंदर को दी जाती है। धीरे-धीरे बंदर की कोशिकाओं में परिवर्तन होना शुरू होता है। अब बंदर को पौधों की भांति धूप में रखकर उसका सारा परीक्षण किया जाता है। टेस्ट सफल रहता है तथा रोबो के आविष्कार को मानव पर परीक्षण की अनुमति मिल जाती है।

विश्व भर की दवा कंपनियाँ रोबो को पेटेंट के लिए मनाने की कोशिश में जुट गईं। राजनयिकों एवं राष्ट्रध्यक्षों से भी मदद लिया जाना शुरू हो गया। भारत सरकार पर भी कूटनीतिक दबाव बना। बात जब इससे भी नहीं बनी तो मीडिया का सहारा

लेकर अफवाह फैलाया गया कि इस दवा का मानव जीन पर कुप्रभाव भी हो सकता है। इस कुप्रभाव की पुष्टि होने में कम से कम बीस वर्षों तक परीक्षण की जरूरत है। अफवाह ने जल्दी ही तूल पकड़ लिया। इस दवा के परीक्षण हेतु कोई तैयार न था।

शाम को रोबो की टीम प्रयोगशाला में चुपचाप बैठी थी। मैक कहता है, 'रोबो! अब क्या होगा? क्या हमें अगले बीस वर्षों तक इस दवा को मानव पर परीक्षण के लिए रोकना होगा? क्या हम इस दवा का परीक्षण सिर्फ जानवरों पर करते रहेंगे? क्या मानव जाति को भूख और गरीबी से आजादी के लिए अभी और इंतजार करना पड़ेगा? रोबो चुप था। जुलियट बोली 'रोबो! क्या पूँजीवादी देशों की ये चालें सफल हो जाएँगी? क्या यह हमारा संघर्ष सिर्फ परीक्षण के नाम पर असफल हो जाएगा?

रोबो ने चुप्पी तोड़ा 'दोस्तों! आज मानव ही मानव के विकास का सबसे बड़ा दुश्मन बन गया है। मैंने कहा था कि नापाक ताकतें फिर से कोशिश करेंगी। बड़ी विडंबना है कि एक तरफ हमें मानव के ऊपर परीक्षण के लिए हरी झंडी दिखा दी गई है तथा दूसरी ओर यह अफवाह फैला दी गई है कि इस दवा के कुप्रभाव को जानने में बीस वर्षों का समय लगेगा। परंतु मुझे यह आविष्कार मानव हित में समर्पित करने से कोई नहीं रोक सकता है। अगर सफल रहा तो इस आविष्कार को गवाह बनाकर मानव सभ्यता को नए मुकाम पर ले जाऊँगा और अगर असफल रहा तो भी मानव इतिहास में यह आविष्कार असमानता को पाटने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कोशिश समझी जाएगी। दोस्तों! इंजेक्शन तैयार करो। परीक्षण मेरे ऊपर ही होगा।

दवा रोबो को दी जाती है। धीरे-धीरे रोबो की मेटबॉलिक एक्टिविटी बदलने लगती है। उसकी कोशिकाओं में बदलाव दीखना आरंभ होता है और रोबो स्वयं खाना तैयार करने में सक्षम हो जाता है। रोबो पर हुए प्रयोग को मीडिया के माध्यम से लोगों तक पहुँचाया जाता है। वैज्ञानिक तबका रोबो के समर्थन में खड़ा होता है। पूँजीवादी देश प्रयोग के बीस वर्ष तक अवलोकन के दलील पर कायम रहते हैं। वे चाहते हैं कि किसी भी तरह यह आविष्कार आम लोगों से जितनी दूर रह सके, रखा जाए। सभी देशों के राजनयिकों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में रोबो के आविष्कार पर निर्णय होना था। रोबो और उसकी टीम को अपनी बात रखने का मौका दिया गया।

रोबो ने सम्मेलन में कहा 'साथियों! आज मानवता उस मोड़ पर खड़ी है, जहाँ आपका मन उसके उत्थान या पतन दोनों का निर्णय लेगा। आज जरूरत है कि आप अपनी पहचान...नाम... देश...संगठन... से ऊपर उठकर सिर्फ मानव कल्याण के बारे में सोचें। सारी भिन्नताओं से ऊपर उठकर यह सोचें कि सबसे पहले हम मनुष्य हैं। आज प्रमाणित कर दीजिए कि मानव प्रकृति की सबसे उत्कृष्ट कृति है।' पूरी सभा चुप थी। अंत में यह निर्णय लिया गया कि जहाँ लोग भूख से मर रहे हैं, वहाँ यह दवा पहले वितरित की जाए। रोबो की टीम खुशी से झूम उठी। अंततः अफ्रीका तथा एशिया के गरीब देशों में इंजेक्शन लगना शुरु हुआ। पहली बार ऐसा था कि गरीब देशों के लाभ वाले काम पर अमीर देशों द्वारा कोई शर्त नहीं रखी गयी थी। धीरे-धीरे सारे लोगों को दवा दे दी गई। अब लोगों में एक अलग ही अपनापन महसूस हो रहा था। सभी खुशी से झूम रहे थे। लोगों की दिनचर्या में थोड़ा परिवर्तन आ गया था। अब वे सूर्य की रोशनी में स्वयं को सेंकते थे। धीरे-धीरे खेती का स्वरूप बदलने लगा। अब खाद्य फसलें कम मात्रा में लगाई जा रही थीं। जो लोग कृषि से जुड़े थे, वे दूसरे काम करने के लिए भी उपलब्ध हो चुके थे।

भारत के लिए यह एक चमत्कार था। इसकी 60% आबादी जो कृषि में लगी थी, अब दूसरे कार्य हेतु आजाद थी। दूसरी ओर बुद्धिजीवी लोग चिंतित हो रहे थे कि इतने लोग जो काम करने से आजाद हो गए हैं, अब आगे क्या करेंगे? सरकार पर पहले भूख मिटाने का भार था, परंतु अब उसपर इन लोगों को रोजगार से जोड़ने का भार भी आ गया। एक समस्या तो मिटी, परंतु दूसरी उससे भी दमदार खड़ी हो गई। इसी बीच 6 महीने बीत गए। धीरे-धीरे ध्रुव पर हिमखंड की मात्रा बढ़ने लगी। उत्तरी ध्रुव पर समुद्र बर्फ बन गया। मौसम समय के अनुकूल न रहा। इस बदलाव से वैज्ञानिक परेशान हो उठे। शोध से पता चला कि मौसम में असंतुलन पैदा हो गया है। वायुमंडल में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा कम और ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ गई है। अर्थात धरती ठंडी हो रही है। वैज्ञानिकों ने इसे ग्लोबल कूलिंग का नाम दिया। ऑक्सीजन बढ़ने का मुख्य कारण मनुष्य का पौधों की भांति खाना बनाने की प्रक्रिया थी।

रोबो के नेतृत्व में वैज्ञानिक इस समस्या से निजात पाने में लग गए। आज मानव इतिहास की इतनी बड़ी उपलब्धि बलिदान माँग रही थी। काफी शोध के बाद एक ऐसे समुद्री सूक्ष्मजीव को ढूँढ़ निकाला गया, जो आक्सीजन को कार्बन डाइआक्साइड में परिवर्तित करने में सक्षम था। जीन मुटेशन थेरपी से उसकी क्षमता को बढ़ाया गया। अब इस समुद्री सूक्ष्मजीव का कंट्रोल्ड कल्टिवेशन किया गया। धीरे-धीरे मौसम फिर से अपने पुराने अंदाज में लौटने लगा। लोग फिर से खुशी से झूमने लगे थे।

- कनिष्ठ प्रबंधक (अनुसंधान व विकास)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम
मोबाइल: +919701347035

भारत सरकार के प्रशिक्षण संस्थानों में हिन्दी माध्यम की आवश्यकता

- डॉ कृष्ण कुमार ग्रोवर -

सेवा में भर्ती के बाद व्यावसायिक प्रशिक्षण से अधिकारी कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्वों के निर्वहण योग्य बनते हैं। केंद्र सरकार की मशीनरी के लिए अच्छे, कुशल और योग्य प्रशासकों, डाक्टरों, इंजीनियरों, तकनीशियनों आदि की आवश्यकता पड़ती है। चूँकि संघ की राजभाषा हिंदी है और यह अपेक्षित है कि अधिकारी यहाँ हिंदी में काम करें। इसलिए यदि वे पहले से हिंदी नहीं जानते हों तो यह भी आवश्यक है कि प्रशिक्षण के माध्यम से वे हिंदी का ज्ञान प्राप्त करें और हिंदी के माध्यम से ही उन्हें अन्य विषयों का प्रशिक्षण दिया जाए।

वैसे तो **26.01.1950** से ही हिंदी देश की राजभाषा बन गई थी और उसे देश की स्वतंत्रता से पहले ही अनौपचारिक रूप से राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया था। किंतु वास्तविकता यह है कि संविधान में 'राष्ट्रभाषा' के स्थान पर 'राजभाषा' शब्द अपनाया गया और उसके बाद हिंदी को सरकार में लागू करने के लिए कोई कारगर प्रयास नहीं किए गए। भर्ती परीक्षाओं में तो हिंदी का नामोनिशान तक नहीं था। यह जानकर आश्चर्य होता है कि आई.ए.एस. की प्रतियोगी परीक्षा में भी वर्ष **1961** तक परीक्षार्थियों द्वारा जो **2** वैकल्पिक विषय रखे जा रहे थे, उनमें भी हिंदी नहीं थी, जबकि अनेक अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं का विकल्प परीक्षार्थियों को उपलब्ध था, यथा संस्कृत, फारसी, अरबी, चीनी, जापानी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी आदि।

यह विडंबना ही है कि देश की राजभाषा को इस योग्य नहीं समझा गया था। **1962** में पहली बार हिंदी को आई .ए.एस. की परीक्षा के लिए वैकल्पिक विषय के रूप में शामिल किया गया। किंतु यह भी एक अधूरा प्रयास है, क्योंकि अभी भी कुछ परीक्षाओं में यथा भारतीय वन सेवा, इंजीनियरी सेवा आदि में परीक्षा माध्यम के रूप में केवल अंग्रेजी की अनिवार्यता बनी हुई है और केंद्रीय सिविल सेवा परीक्षा हिंदी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से उत्तीर्ण करने पर भी परिवीक्षाधीन अधिकारियों का प्रशिक्षण मुख्य रूप से अंग्रेजी में ही हो रहा है, जो कि उन्हें विवश होकर ग्रहण करना पड़ रहा है।

इस ओर भारत सरकार का ध्यान समय-समय पर आकर्षित किया गया है। गृह मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष **1978-79** के लिए जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम में केवल 'क' क्षेत्र के लिए हिंदी में प्रशिक्षण देने की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया था। इसे बाद के वर्षों के कार्यक्रमों में भी दोहराया जाता रहा। किंतु इसका कोई विशेष अनुपालन हुआ हो ऐसा नहीं लगता।

इसके बाद राजभाषा विभाग ने **11.11.1987** को आदेश जारी किया कि **1.1.1989** तक सभी प्रकार की प्रशिक्षण सामग्री हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार करा ली जाए और प्रशिक्षणार्थियों को उनकी माँग के अनुसार हिंदी या अंग्रेजी में उपलब्ध कराई जाए। यदि प्रशिक्षण के दौरान या उसके अंत में कोई परीक्षा ली जाती हो तो उसमें दोनों भाषाओं में प्रश्न पत्र रहें और प्रशिक्षणार्थियों को उत्तर देने के लिए हिंदी या अंग्रेजी भाषा के प्रयोग की छूट दी जाए, यदि पाठ्यक्रम में केवल 'क' तथा 'ख' क्षेत्र से प्रशिक्षणार्थी आते हैं तो वहाँ सामान्यतया हिंदी में प्रशिक्षण दिया जाए आदि। अनेक वर्षों तक विभाग के वार्षिक कार्यक्रमों में इस आदेश को दोहराया गया। किंतु इसका कितना अनुपालन हुआ, इसपर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

राजभाषा अधिनियम की धारा **4** के अंतर्गत **1976** में गठित संसदीय राजभाषा समिति का ध्यान भी इस ओर विशेष रूप से गया, क्योंकि यह महसूस किया गया कि यदि भर्ती के बाद सेवाकालीन प्रशिक्षण शुरु में ही हिंदी माध्यम से दे दिया जाय तो अधिकारियों के लिए अपना काम-काज हिंदी में करना सुविधाजनक होगा और उनके लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन करने की आवश्यकता नहीं होगी। समिति ने एक प्रश्नावली निर्धारित की और देश की केंद्र सरकार तथा इसके संबद्ध अधीनस्थ कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि के सभी प्रशिक्षण संस्थानों, जिनकी संख्या **450** से अधिक है, के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त की। समिति के प्रतिवेदन के तीसरे खंड में प्रत्येक प्रशिक्षण संस्थान के बारे में विस्तारपूर्वक विवरण दिया गया है। समिति की **5** सदस्यीय साक्ष्य और आलेख उप समिति ने यह जानने के लिए कि विभिन्न विभागों, उपक्रमों, बैंकों आदि के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित महत्वपूर्ण प्रशिक्षण संस्थानों में हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण देने की वास्तविक स्थिति क्या है और इस संबंध में संभावनाएँ क्या हैं तथा आमतौर पर भर्ती होने के बाद विभिन्न स्तरों पर कर्मचारियों के लिए किस प्रकार की प्रशिक्षण सुविधाएँ

> संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण कार्यक्रम निर्बाध गति से चल रहे हैं। किंतु यदि समिति की कोई उप समिति प्रशिक्षण संस्थानों का विशेष रूप से दौरा करे, जैसे कि वर्ष **1987** और **1988** में किया गया था, तो उससे भी लाभ होगा और प्राधिकारियों की भावी पीढ़ी को हिंदी माध्यम से ही प्रशिक्षण प्राप्त करने का उपयुक्त मौका मिलेगा और इसके अच्छे परिणाम भी प्राप्त होंगे।

उपलब्ध कराई जाती हैं, चुने हुए **106** प्रशिक्षण संस्थानों में अधिकारियों से विस्तारपूर्वक चर्चा करने के लिए **21.08.1987** से लेकर **27.10.1988** तक दौरे किए। इसके अतिरिक्त पूरी समिति ने राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख प्रशिक्षण संस्थानों के निदेशकों और उनके नियंत्रक मंत्रालयों के सचिवों के साथ दिल्ली में विस्तारपूर्व क विचार-विमर्श भी किया। देखने में आया है कि प्रशिक्षण कार्य में हिंदी का प्रयोग बहुत कम हो रहा है। प्रशिक्षण का माध्यम केवल अंग्रेजी ही हो, ऐसा कोई भी लिखित आदेश न तो किसी प्रशिक्षण संस्थान के पास था और न ही किसी मंत्रालय ने ऐसा किया था। इस संबंध में निम्नलिखित मुख्य कठिनाइयाँ समिति के ध्यान में आई थीं:

1. पाठ्य सामग्री और प्रशिक्षण संबंधी नोट्स का अभाव।
2. प्रशिक्षण के लिए कोड/मैनुअल का अभाव, तथा
3. प्रशिक्षकों के अभ्यास की कमी के कारण हिंदी में भाषण देने की असमर्थता।

समिति के प्रतिवेदन के तीसरे खंड के अध्याय **16** और **17** में इस विषय पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है। समिति ने प्रतिवेदन के पहले खंड में की गई इस सिफारिश को भी दोहराया है कि प्रशिक्षण संबंधी पाठ्य-सामग्री का अनुवाद हो तथा मूलरूप से भी विभिन्न विषयों पर हिंदी में पुस्तकें लिखी जाएं, ताकि वे प्रशिक्षण में काम आ सकें। इसके अतिरिक्त अनुवाद और मूल पुस्तक लेखन हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजनाओं को और अधिक आकर्षक तथा उदार बनाया जाना चाहिए। प्रशिक्षकों को भी आवश्यकतानुसार हिंदी का ज्ञान तथा हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण देने का अभ्यास कराया जाए। समिति की इन सभी सिफारिशों को स्वीकार करते हुए राष्ट्रपति जी का आदेश दि.**04.11.1991** को जारी कर दिया गया। इस आदेश में स्पष्ट रूप से कहा गया था कि 'क' और 'ख' क्षेत्रों में स्थित प्रशिक्षण संस्थानों में सभी प्रकार के प्रशिक्षण, चाहे वह अल्पावधि के हों या दीर्घावधि के, हिंदी माध्यम से ही संपन्न हों और यदि इन संस्थानों में आनेवाले कर्मचारियों को हिंदी का अपेक्षित ज्ञान न हो तो उन्हें वहाँ प्रशिक्षण के लिए हिंदी का ज्ञान प्राप्त करने के बाद ही भेजा जाए और ऐसे कर्मचारियों के लिए सेवा की शुरुआत में ही हिंदी के शिक्षण की व्यवस्था की जाए। यह भी आदेश दिया गया कि सभी प्रशिक्षण संस्थानों में चाहे वे किसी भी क्षेत्र में हों, जहाँ दीर्घावधि के पाठ्यक्रम चल रहे हों, वहाँ हिंदी को भी एक विषय के रूप में पढ़ाया जाए तथा इन प्रशिक्षण संस्थानों में वर्तमान व्यवस्था के लिए अपेक्षित अतिरिक्त पदों हेतु वित्तीय स्वीकृति अविलंब दे दी जाय।

राष्ट्रपति जी के उक्त आदेश के बाद विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों में हिंदी माध्यम को अपनाने के बारे में कुछ समय तक गंभीरतापूर्वक प्रयत्न किए गए। सभी बैंकों ने अपनी प्रशिक्षण सामग्री हिंदी में भी तैयार करने की पूरी कोशिश की और 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में स्थित कर्मचारियों के लिए हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण की शुरुआत की गई। कई बैंकों ने तो 'ग' क्षेत्र में भी हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण देने की कोशिश की। सरकार के कुछ विभागों और उपक्रमों के प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण देने की कोशिश की गई। **1994-95** में राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में राष्ट्रपति जी के उपरोक्त आदेश के संदर्भ में प्रशिक्षण माध्यम के रूप में हिंदी को अपनाने पर बल दिया जाने लगा। प्रतीत होता था कि कार्य ठीक दिशा में प्रगति पर है। इन आदेशों का पालन कहाँ तक हो रहा है, यह देखने के लिए दूरदर्शन की टीम ने दिल्ली तथा इसके आस-पास के कुछ प्रशिक्षण संस्थानों में जाकर उनके प्राचार्यों, प्रशिक्षकों तथा प्रशिक्षणार्थियों के साथ बातचीत की और उनके पुस्तकालय भी देखे। निष्कर्ष यह था कि हिंदी में प्रशिक्षण देने में कोई विशेष कठिनाई नहीं है, तथापि इस दिशा में और अधिक प्रयास की आवश्यकता है।

किंतु खेद है कि दि.**04.11.1991** को राष्ट्रपति जी द्वारा दिए गए आदेश का अभी भी पूर्णरूपेण पालन नहीं हो पाया है। यदि प्रशिक्षणार्थियों को सेवा के आरंभ में ही हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण दे दिया जाए तो बाद में हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित करने की आवश्यकता ही नहीं होगी। मई, **1998** में मसूरी में **2** दिन की एक संगोष्ठी लाल बहादुर शास्त्री प्रशासन अकादमी द्वारा आयोजित की गई थी। उसके बारे में दि.**23.05.1998** को दैनिक जनसत्ता में जो समाचार छपा था, वह इस प्रकार था -

आई.ए.एस. प्रशिक्षणार्थियों को अंग्रेजी में प्रशिक्षण किस के आदेश पर?

'मसूरी **22** मई। संसदीय राजभाषा समिति के पूर्व सचिव श्री कृष्ण कुमार ग्रोवर ने यह पूछकर सनसनी फैला दी कि मसूरी में आई.ए.एस. प्रशिक्षणार्थियों को अंग्रेजी में प्रशिक्षण का आदेश किसने और कब दिया? उन्होंने बताया कि ऐसा कोई आदेश है ही नहीं। उन्होंने यह भी बताया कि संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिशों के बाद राष्ट्रपति आदेश दे चुके हैं कि ऐसे संस्थानों में प्रशिक्षण हिंदी माध्यम से हो, पर राष्ट्रपति के आदेश लागू नहीं हुए।' श्री ग्रोवर यहाँ लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में दो दिन की अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी में बोल रहे थे।

श्री ग्रोवर ने कहा कि आई.ए.एस. अधिकारियों को प्रशिक्षण लेने के बाद अपना काम भारतीय भाषा में ही करना है। उनके लिए यह तभी आसान होगा, जब ये अधिकारी हिंदी और भारतीय भाषाओं में प्रशिक्षण लें। श्री ग्रोवर ने कई देशों का हवाला दिया, जिन्होंने अपनी आजादी के बाद अपनी भाषा को एक झटके में अनिवार्य बना दिया।'

इस समाचार ने कुछ समय के लिए तो राजभाषा नीति के

अनुपालन में रुचि रखनेवाले प्रबुद्ध वर्ग को झकझोर दिया। नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी की पत्रिका 'नागरी पत्रिका' के **15.06.1998** के अंक में सुधाकर पाण्डेय ने एक जोरदार और प्रभावशाली संपादकीय भी लिखा और ऐसा प्रतीत होने लगा कि भारत सरकार इस दिशा में क्रियाशील है। वर्ष **1997** में राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत किए गए अपने प्रतिवेदन के छठे खंड में संसदीय राजभाषा समिति ने अपने द्वारा पहले की गई सिफारिशों पर राष्ट्रपति जी के आदेशों के अनुपालन की समीक्षा भी की थी। इस सिलसिले में समिति की टिप्पणी थी कि, 'अभी भी प्रशिक्षण केंद्रों में प्रशिक्षण अंग्रेजी माध्यम से ही दिया जा रहा है। ऐसे केंद्रों में प्रशिक्षण सामग्री पूर्णतया हिंदी/द्विभाषी रूप में उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाए।'

किन्तु आश्चर्य तो इस बात पर है कि राष्ट्रपति के आदेश और उनके अनुपालन संबंधी संसदीय राजभाषा समिति द्वारा की गई समीक्षा के बावजूद इस दिशा में किए जा रहे परिणाम सुखद नहीं रहे हैं। राष्ट्रपति जी के आदेशानुसार 'क' और 'ख' क्षेत्रों में हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण देने की बात दोहराने के साथ राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए वर्ष **2001-02** के तथा उसके बाद के सभी कार्यक्रमों में यह भी जोड़ दिया गया है कि 'भारतीय प्रशासनिक सेवा और अन्य अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों के लिए लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान हिंदी भाषा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाता है, ताकि काम-काज में वह इसका प्रयोग कर सकें। सभी मंत्रालयों/विभाग/कार्यालय आदि अपनी केंद्रीय सेवाओं के प्रशिक्षण संस्थानों में राजभाषा हिंदी में प्रशिक्षण की व्यवस्था उसी स्तर पर करें, जिस स्तर पर लाल बहादुर शास्त्री प्रशासन अकादमी द्वारा करायी जाती है। लेकिन यह कौन सा स्तर है, इसका कहीं उल्लेख नहीं है।

राजभाषा विभाग के वार्षिक प्रतिवेदन और वार्षिक मूल्यांकन प्रतिवेदन में कहीं भी इस बात का उल्लेख नहीं मिलता कि प्रशिक्षण माध्यम के रूप में हिंदी का प्रचलन कहाँ तक है। एक विशेष बात इस संबंध में नोट करने की यह भी है कि जिस मसूरी की अकादमी का हवाला बार-बार राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में दिया जा रहा है, वहाँ पर राजभाषा विभाग के ही वर्ष **2003-04** के वार्षिक मूल्यांकन प्रतिवेदन के अनुसार कुल **123** में से **21** कोड और मैनुअल अभी भी केवल अंग्रेजी में हैं। इन कोड और मैनुअलों का तो प्रशिक्षण कार्यक्रम में भरपूर उपयोग किया जाता है। संसदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदन के पहले खंड में की गई सिफारिशों के आधार पर राष्ट्रपति जी के दो आदेश दि.**30.12.1988** को जारी हुए थे। उनमें कहा गया था कि सभी कोड, मैनुअल का अनुवाद कार्य वर्ष **1991** के अंत तक पूरा कर लिया जाना चाहिए। स्पष्ट है कि इस मामले में काफी शिथिलता बरती जा रही है। लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी द्वारा अपनाई जा रही पद्धति का असर अन्य विभागों के प्रशिक्षण संस्थानों पर भी पड़ता है, क्योंकि उसे एक आदर्श संस्थान माना जाता है।

संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण कार्यक्रम निर्बाध गति से चल रहे हैं। किंतु यदि समिति की कोई उप समिति प्रशिक्षण संस्थानों का विशेष रूप से दौरा करे, जैसे कि वर्ष **1987** और **1988** में किया गया था, तो उससे भी लाभ होगा और प्राधिकारियों की भावी पीढ़ी को हिंदी माध्यम से ही प्रशिक्षण प्राप्त करने का उपयुक्त मौका मिलेगा और इसके अच्छे परिणाम भी प्राप्त होंगे। वर्तमान में तो समिति अपनी निरीक्षण प्रश्नावली के माध्यम से इस संबंध में कुछ सूचनाएँ ले रही है, किंतु निरीक्षणाधीन कार्यालयों के मुख्यालयों के लिए पूरक प्रश्नावली में मुख्यालय के प्रशिक्षण संस्थानों के बारे में कोई प्रश्न नहीं है। आमतौर पर निरीक्षण कार्यालय की कोशिश होती है कि वह अंग्रेजी माध्यम के पाठ्यक्रमों को भी मिली-जुली भाषा के कार्यक्रमों में दिखाए और प्रशिक्षकों के हिंदी में पढ़ाने के अभ्यास की कमी या पाठ्यसामग्री के अभाव के इसका कारण बनाया जाए, जो सरासर गलत है। राजभाषा विभाग ने **11.11.1987** को जो आदेश जारी किए थे, उनमें मिली-जुली भाषा का उल्लेख था। किंतु राष्ट्रपति जी के **4.11.1991** के आदेश ने तो स्थिति बदल दी। इसमें मिली-जुली भाषा का कहीं उल्लेख नहीं है। वास्तव में अब नियमों में तो मिली-जुली भाषा से प्रशिक्षण का कोई प्रावधान ही नहीं है।

यह चिंतनीय है कि राष्ट्रपति जी के आदेशों का अनुपालन नहीं हो रहा है। जबकि समय-समय पर दिए गए राष्ट्रपति जी के आदेशों का विशेष महत्व होना चाहिए। देश में किसी भी दल की सरकार इससे राष्ट्रपति द्वारा दिए गए आदेशों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वे सभी सरकारों पर लागू रहेंगे। संविधान के अनुच्छेद **74** और **75** के अनुसार राष्ट्रपति जी को सलाह देने के लिए एक मंत्रिपरिषद है, जिसके मुखिया प्रधानमंत्री होते हैं और राष्ट्रपति ऐसी सलाह के अनुसार कार्य करते हैं। अनुच्छेद **53** के अनुसार संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित है और वे इसका प्रयोग संविधान के अनुसार स्वयं या अपने अधीनस्थ कर्मचारियों द्वारा करते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट है कि राष्ट्रपति जी द्वारा राजभाषा हिंदी के संबंध में दिए गए आदेशों का अनुपालन अनिवार्य है और अंततः राष्ट्रहित में है। अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण माध्यम के रूप में हिन्दी के प्रयोग को इसी दृष्टिकोण से ही देखा जाना चाहिए।

- पूर्व सचिव, संसदीय राजभाषा समिति
टैगोर गार्डन, नई दिल्ली

मानक

आओ भाषा सीखें

(राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के प्रबंधक (हिंदी) श्रीमती जे रमादेवी के सौजन्य से)

सरकारी संगठनों में हिंदी दिवस के अवसर पर कर्मचारियों एवं उनके आश्रितों के लिए कई प्रतियोगिताएँ आयोजित होती हैं और उन्हें अपने दैनिक कार्य में हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। 'सुगंध' के इस अंक में इस शीर्षक के अधीन हम हिंदी न जानने के कारण उत्पन्न होनेवाली कुछ समस्याओं का जिक्र कर रहे हैं। आशा है कि पाठकगण हमारे इस प्रयास से संतुष्ट होंगे।

सुधा : अरे स्वाती! कैसी हो? और हाँ तुम्हारी उत्तर भारत की यात्रा कैसी रही?

సుధా : అరే స్వాతి! కైసీ హో? ఔర్ హాఁ తుమ్హారీ ఉత్తర్ భారత్ కీ యాత్రా కైసీ రహీ?

సుధా : అరే స్వాతి! ఎలా ఉన్నావు? ఇంకా నీ నార్త్ ఇండియా ట్రిప్ ఎలా జరిగింది?

सुधा : अरे स्वाती! एला उन्नावु? इंका नी नार्थ इंडिया ट्रिप एला जरिगिंदि?

स्वाती : यार! बढ़िया रही। हमने खूब मस्ती की। लेकिन भाषा न जानने के कारण थोड़ी सी दिक्कत हुई।

స్వాతి : యార్! బఢియా రహీ. హమ్‌నే ఖూబ్ మస్తీ కీ. లేకిన్ భాషా న జాన్‌నే కే కారణ్ థోడీ సీ దిక్కత్ హుయీ.

స్వాతి : చాలా బాగా జరిగింది. మేము చాలా ఎంజాయ్ చేశాం. కాని భాష రానందువలన కొంత ఇబ్బంది కలిగింది.

स्वाती : चाला बागा जरिगिदि। मेमु चाला एंजाय चेसाम्। कानि भाषा रानंदुवलन कोंत इब्बंदि कलिगिंदि।

सुधा : वह कैसे?

సుధా : వహ్ కైసే?

సుధా : అదెలా?

सुधा : अदेला?

स्वाती : मेरा बेटा पहले ही कह रहा था कि उधर जाते समय हिंदी जाननेवाले किसी को साथ ले लेते तो अच्छा रहता।

స్వాతి : మేరా బేటా పహ్‌లే హీ కహ్ రహా థా కి ఉధర్ జాతే సమయ్ హిందీ జాన్‌నేవాలే కిసీ కో సాథ్ లే లేతే తో అచ్ఛా రహ్‌తా.

స్వాతి : నా కొడుకు అక్కడ తిరిగేటప్పుడు హిందీ తెలిసిన వాళ్ళు ఎవరైనా కూడా ఉంటే బాగుంటుందని అంటూనే ఉన్నాడు.

स्वाती : ना कोडुकु अक्कड तिरिगेटप्पुडु हिंदी तेलिसिन वाल्लु एवरैना कूडा उंटे बागुंटुंदनि अंटूने उन्नाडु।

सुधा : क्या बात कर रही हो, तुम तो हिंदी जानती हो?

సుధా : క్యా బాత్ కర్ రహీ హో, తుమ్ తో హిందీ జాన్‌తీ హో?

సుధా : అరే, నీకు హిందీ వచ్చు కదా?

सुधा : अरे, नीकु हिंदी वच्चु कदा?

स्वाती : मैं हिंदी समझ लेती हूँ। लेकिन जवाब नहीं दे पाती न।

స్వాతి : మైఁ హిందీ సమఝ్ లేతీ హూఁ. లేకిన్ జవాబ్ నహీ దే పాతీ న.

స్వాతి : నాకు హిందీ అర్థమవుతుంది. కాని సమాధానం చెప్పలేను సుమా.

स्वाती : नाकु हिंदी अर्थमवुतुंदि। कानि समाधानम् चेप्पलेनु सुमा।

सुधा : अच्छा! ये बात है। इसका मतलब थोड़ी परेशानी हुई है।

సుధా : అచ్ఛా! యే బాత్ హై. ఇస్‌కా మతలబ్ థోడీ పరేషానీ హుయీ హై.

సుధా : అయ్యో! అంటే కొంచెం ఇబ్బంది పడ్డావన్నమాట.

सुधा : अय्यो! अंटे कोंचेम् इब्बंदि पड्डावन्नमाट।

स्वाती : यार! कोई चीज खरीदनी हो तो हिंदी में ही बात करनी पड़ती थी और मैं सभी चीजों के नाम हिंदी में तो जानती नहीं थी।

స్వాతి : యార్! కోయీ చీజ్ ఖరీద్‌నీ హో తో హిందీ మేఁ హీ బాత్ కర్‌నీ పడ్‌తీ థీ ఔర్ మైఁ సభీ చీజోఁ కే నామ్ హిందీ మేఁ తో జాన్‌తీ నహీఁ థీ.

స్వాతి : ఏదైనా కొనాలంటే అక్కడ హిందీలోనే మాట్లాడాలి, పైపెచ్చు అన్ని వస్తువుల పేర్లు నాకు హిందీలో తెలియదు.

स्वाती : एदैना कोनालंटे अक्कड हिंदीलोने माट्लाडालि, पैपेच्चु अन्नि वस्तुवुल पेर्लु नाकु हिंदीलो तेलियदु।

सुधा : तो तुमने क्या किया?

సుధా : తో తుమ్‌నే క్యా కియా?

సుధా : అయితే ఏం చేశావు?

सुधा : अइते एम् चेसावु?

स्वाती : एक दिन बेटे के घर में पूजा थी और मुझे कुछ चीजों के लिए बाजार जाना पड़ा।

स्वाति : ఏక్ దిన్ బేటే కే ఘర్ మేఁ పూజా థీ ఔర్ ముఝే కుఛ్ చీజోఁ కే లియే బాజార్ జానా పడా.
స్వాతి : మా అబ్బాయి ఇంటిలో ఒక రోజు పూజ పెట్టుకున్నాము. నేను కొన్ని సామాన్లు కొనడానికి బజారుకి వెళ్ళాల్సి వచ్చింది.
स्वाती : मा अब्बायि इंटिलो ओक रोजु पूजा पेट्टुकुन्नामु। नेनु कोन्नि सामान्लु कोनडानिकि बजारुकि वेल्लाल्सि वच्चिंदि।
सुधा : तो दिक्कत तो नहीं हुई न?
సుధా : తో దిక్కత్ తో నహీఁ హుయీ న?
సుధా : ఏమైనా ఇబ్బంది పడ్డావా?
सुधा : एमैना इब्बंदि पड्डावा?
स्वाती : वही तो बता रही हूँ। जो चीजें सामने दीख रही थीं, उन्हें आसानी से दिखाकर खरीद लिया।
స్వాతి : వహీ తో బతా రహీ హూఁ. జో చీజేఁ సామ్‌నే దీఖ్ రహీ థీఁ, ఉన్హేఁ ఆసానీ సే దిఖాకర్ ఖరీద్ లియా.
స్వాతి : చెప్తున్నా విను. ఎదురుగా కనిపిస్తున్న సామాన్లు చూపించి కొనేసాను.
स्वाती : चेप्तुन्ना विनु। एदुरुगा कनिपिस्तुन्न सामान्लु चूपिंचि कोनेसानु।
सुधा : लेकिन बाकी चीजें?
సుధా : లేకిన్ బాకీ చీజేఁ?
సుధా : మరి మిగతావి?
सुधा : मरि मिगतावि?
स्वाती : परेशानी वहीं से शुरु हुई। मुझे 'बेल्लम' चाहिए था। मैं मीठा बोली तो उसने मिठाई की दूकान दिखायी। इशारा करके बताया तो उसने इमली दिखायी। 'बेल्लम' बोलने से 'लहसुन' दिखाया।
స్వాతి : పరేషానీ వహీఁ సే షురూ హుయీ. ముఝే 'బెల్లం' చాహియే థా. మైఁ మీఠా బోలీ తో ఉస్‌నే మిఠాయి కీ దూకాన్ దిఖాయీ. ఇషారా కర్‌కే బతాయా తో ఉస్‌నే ఇమ్‌లీ దిఖాయీ. 'బెల్లం' బోల్‌నే సే 'అదరక్' దిఖాయా.
స్వాతి : అక్కడ వచ్చింది చిక్కు. నాకు 'బెల్లం' కావాలి. నేను తీపి అంటే వాడు మిఠాయి కొట్టు చూపించాడు. సైగ చేసి చెప్తే చింతపండు చూపించాడు. 'బెల్లం' అంటే 'అల్లం' చూపించాడు.
स्वाती : अक्कड वच्चिंदि चिक्कु। नाकु 'बेल्लम्' कावालि। नेनु तीपि अंटे वाडु मिठायि कोट्टु चूपिंचाडु। सैग चेसि चेप्ते चिंतपंडु चूपिंचाडु। 'बेल्लम्' अंटे 'अल्लम्' चूपिंचाडु।
सुधा : अरे यार! 'बेल्लम' के लिए हिंदी में 'गुड़' कहा जाता है। तू अंग्रेजी में भी पूछ सकती थी न?
సుధా : అరే యార్! 'బెల్లం' కే లియే హిందీ మేఁ 'గుడ్' కహా జాతా హై. తూ అంగ్రేజీ మేఁ భీ పూఛ్ సక్‌తీ థీ న?
సుధా : అయ్యో! 'బెల్లం' ని హిందీలో 'గుడ్' అంటారు. నువ్వు ఇంగ్లీషులో అడగవచ్చు కదా.
सुधा : अय्यो! 'बेल्लम्' नि हिंदीलो 'गुड' अंटारु। नुव्वु इंग्लीषुलो अडगवच्चु कदा।
स्वाती : वह दूकानदार हिंदी के अलावा कुछ समझता ही नहीं था।
స్వాతి : వహ్ దూకాన్‌దార్ హిందీ కే అలావా కుఛ్ సమఝ్‌తా హీ నహీఁ థా.
స్వాతి : ఆ షాపతనికి హిందీ తప్ప ఏమీ రాదు.
स्वाती : आ शापतनिकि हिंदी तप्प एमी रादु।
सुधा : फिर क्या हुआ?
సుధా : ఫిర్ క్యా హువా?
సుధా : అప్పుడేం చేశావు?
सुधा : अप्पुडेम् चेसावु?
स्वाती : सोचा, उसे बाद में ले लूँगी। पहले 'विस्तराकुलु' देख लेती हूँ।
స్వాతి : సోచా, ఉసే బాద్ మేఁ లే లూంగీ. పహ్‌లే 'విస్తరాకులు' దేఖ్ లేతీ హూ.
స్వాతి : అది తరువాత చూద్దాం, ముందు విస్తరాకులు తీసుకుందాం అని అనుకున్నాను.
सुधा : स्वाती तुमने ऐसे ही पूछ दिया क्या?
సుధా : స్వాతి తుమ్‌నే ఐసే హీ పూఛ్ దియా క్యా?
సుధా : స్వాతి షాపువాడిని అలాగే అడిగావా?
सुधा : स्वाती शापुवाडिनि अलागे अडिगावा?
स्वाती : हाँ यार! हिंदी में क्या कहा जाता है, मैं कहाँ जानती हूँ। इसीलिए दूकानदार से 'विस्तराकुलु' पूछ लिया।
స్వాతి : హాఁ యార్! హిందీ మేఁ క్యా కహా జాతా హై, మైఁ కహాఁ జాన్‌తీ హూఁ. ఇసీలియే దూకాన్‌దార్ సే 'విస్తరాకులు' పూఛ్ లియా.
స్వాతి : అవునే! హిందీలో ఏమంటారో, నాకేం తెలుసు. అందుకే షాపతన్ని 'విస్తరాకులు' అని అడిగేశాను.

स्वाती : अवुने! हिंदीलो एमंटारो, नाकेम् तेलुसु। अंदुके शापतन्नि 'विस्तराकुलु' अनि अडिगेसानु।
सुधा : तो उसने क्या किया?
సుధా : తో ఉస్‌నే క్యా కియా?
సుధా : అతనేమన్నాడు.
सुधा : अतनेमन्नाडु।
स्वाती : करता क्या है? मुझे ऊपर से नीचे तक अजीब ढंग से देखने लगा।
స్వాతి : కర్‌తా క్యా హై? ముఝే ఊపర్ సే నీచే తక్ అజీబ్ ఢంగ్ సే దేఖ్‌నే లగా.
స్వాతి : ఏమంటాడు? నన్ను ఎగాదిగా చూసాడు.
स्वाती : एमंटाडु? नन्नु एगादिगा चूसाडु।
सुधा : और?
సుధా : ఔర్?
సుధా : తరువాత?
सुधा : तरुवात?
स्वाती : मैं ने कहा, 'भैया! खाने के लिए पत्ता दिखाओ'! उसने पान का पत्ता दिखाया। मैं घबरा गई।
స్వాతి : మైఁ నే కహా, 'భయ్యా! ఖానే కే లియే పత్తా దిఖావో'! ఉస్‌నే పాన్ కా పత్తా దిఖాయా. మై ఘబరా గయీ.
స్వాతి : నేను, 'బాబూ! తినడానికి ఆకులు చూపించు' అన్నాను. అతను తమలపాకులు చూపించాడు. నాకు ఏం తోచలేదు.
स्वाती : नेनु, 'बाबू! तिनडानिकि आकुलु चूपिंचु' अन्नानु। अतनु तमलपाकुलु चूपिंचाडु। नाकु एम् तोचलेदु।
सुधा : तुम्हें 'पत्तल' मांगना था।
సుధా : తుమ్హేఁ 'పత్తల్' మాంగ్‌నా థా.
సుధా : నువ్వు 'పత్తల్' అని అడగాలి.
सुधा : नुव्वु 'पत्तल' अनि अडगालि।
स्वाती : वही तो जानती नहीं थी। उसे समझाने की कोशिश की तो वह तेजपत्ता दिखाने लगा।
స్వాతి : వహీ తో జాన్‌తీ నహీ థీ. ఉసే సమ్‌ఝానే కీ కోషిష్ కీ తో వహ్ తేజ్‌పత్తా దిఖానే లగా.
స్వాతి : అదే తెలియలేదు. అతనికి అర్థమయ్యేలా చెప్పబోతే బిరియాని ఆకు చూపించాడు.
स्वाती : अदे तेलियलेदु। अतनिकि अर्थमय्येला चेप्पबोते बिरियानि आकु चूपिंचाडु।
सुधा : इसका मतलब, तुमने पत्तल भी छोड़ दिया।
సుధా : ఇస్‌కా మత్‌లబ్, తుమ్‌నే పత్తల్ భీ ఛోడ్ దియా.
సుధా : అంటే విస్తరాకులు కూడా కొనలేకపోయావు.
सुधा : अंटे विस्तराकुलु कूडा कोनलेकपोयावु।
स्वाती : हाँ सुधा, बाद में बेटा जाकर सब ले आया।
స్వాతి : హాఁ సుధా, బాద్ మేఁ బేటా జాకర్ సబ్ లే ఆయా.
స్వాతి : అవును సుధా, తరువాత అబ్బాయి వెళ్ళి అన్నీ తీసుకొచ్చాడు.
स्वाती : अवुनु सुधा, तरुवात अब्बायि वेल्लि अन्नी तीसुकोच्चाडु।
सुधा : इसका मतलब उत्तर भारत में हिंदी न जानने से दिक्कत होती है।
సుధా : ఇస్‌కా మత్‌లబ్ ఉత్తర్ భారత్ మేఁ హిందీ న జాన్‌నే సే దిక్కత్ హోతీ హై.
సుధా : అంటే ఉత్తర భారతదేశంలో హిందీ రాకపోతే కష్టమన్నమాట.
सुधा : अंटे उत्तर भारतदेशंलो हिंदी राकपोते कष्टमन्नमाट।
सुधा : स्वाती! हिंदी हमारी राजभाषा है और राजभाषा का सम्मान देश का सम्मान होता है।
సుధా : స్వాతి! హిందీ హమారీ రాజభాషా హై ఔర్ రాజభాషా కా సమ్మాన్ దేశ్ కా సమ్మాన్ హోతా హై.
సుధా : స్వాతి! హిందీ మన రాజభాష. అంతేకాదు రాజభాషను గౌరవిస్తే దేశాన్ని గౌరవించినట్టు.
सुधा : स्वाती! हिंदी मन राजभाषा। अंतेकादु राजभाषनु गौरविस्ते देशान्नि गौरविंचिनट्टु।
स्वाती : तुम ठीक कहती हो, मैं हिंदी सीखूँगी और अपने देश के सम्मान को बढ़ाऊँगी।
స్వాతి : తుమ్ ఠీక్ కహ్‌తీ హో, మైఁ హిందీ సీఖూంగీ ఔర్ అప్‌నే దేశ్ కా సమ్మాన్ బఢ్‌ావూంగీ.
स्वाती : निजमे, नेनु हिंदी नेर्चुकुंटानु, इंका ना देश ख्यातिनि पेंपोद्दिस्तानु।

- प्रबंधक (हिंदी)
हिंदी कक्ष
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम
मोबाइल: +91 9866321109

प्रतिबद्धता का सम्मान

14 सितंबर, 2013 राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम के लिए एक अविस्मरणीय दिवस रहा, क्योंकि उस दिन संगठन को राष्ट्रीय स्तर के कुल तीन पुरस्कार प्राप्त हुए। वैसे तो संगठन में राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु पिछले कई वर्षों से राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त होते रहे हैं। लेकिन इस बार एक साथ तीन पुरस्कार प्राप्त होना अत्यंत उल्लेखनीय है।

राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु संगठन को पिछले छः वर्षों से 'इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड' प्राप्त हो रहा है। इस वर्ष भी 'ग' क्षेत्र श्रेणी में 'इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड' का तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री ए पी चौधरी ने महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी के करकमलों से ग्रहण किया।

साथ ही संगठन की हिंदी गृहपत्रिका 'सुगंध' को भी लगातार दूसरी बार सम्मानित किया गया। इस वर्ष 'सुगंध' को द्वितीय श्रेष्ठ पत्रिका का सम्मान प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के निदेशक (कार्मिक) श्री वै आर रेड्डी ने महामहिम राष्ट्रपति महोदय के हाथों ग्रहण किया।

वर्ष 2013 से भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग ने संगठनों के कर्मचारियों के लिए एक पुरस्कार योजना लागू किया है। इस पुरस्कार योजना के तहत संगठनों के कर्मचरियों की रचनाओं के लिए सम्मानित किया जाता है। इस योजना के कार्यान्वयन के पहले वर्ष में ही सहायक प्रबंधक (हिंदी) और सुगंध की उप संपादक श्रीमती वी सुगुणा को 'बाबा नागार्जुन एवं उनकी सामाजिक चेतना' नामक लेख के लिए हिंदीतर भाषी श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस पुरस्कार के तहत श्रीमती सुगुणा को 22,000 रुपए एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये। राष्ट्रपति महोदय ने हिंदी दिवस के अवसर पर 14 सितंबर, 2013 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में श्रीमती सुगुणा को यह पुरस्कार प्रदान किया।

जरा गौर करें

बात कुछ ऐसी है कि एक किसान का खेत एक पहाड़ी के उस पार था। उसे व उसके परिवार के सदस्यों को अपने खेत में जाने के लिए पहाड़ी को पार करके जाना पड़ता था। एक दिन किसान की पत्नी अपने पति के लिए खाना लेकर खेत पर जा रही थी। रास्ते में पहाड़ी चढ़ते समय वह फिसल गई, जिससे वह बहुत चोटिल हो गई।

जब इस घटना की सूचना उस किसान को मिली, तब वह बहुत दुखी हुआ और मन ही मन प्रण किया कि अब वह पहाड़ी काटकर बराबर रास्ता बना देगा। फिर क्या था... वह किसान अपनी धुन में रम गया। उसने छेनी और हथौड़ा उठाया और चीरना शुरु कर दिया उस कठोर पहाड़ के सीने को, जिसने उसकी पत्नी को घायल किया था। आरंभ में तो किसी ने उसपर ध्यान नहीं दिया और यदि किसी के ध्यान में आया भी तो उसने उसे पागल समझ कर छोड़ दिया।

मन से मजबूत कुछ भी नहीं .....

यह क्रम लगभग **22** वर्षों तक चलता रहा। वह किसान मार्ग बनाने के लिए नियमित रूप से पहाड़ की कठोरता से संघर्ष करता रहा। आखिर वह दिन भी आ गया, जब उसने पहाड़ की छाती को चीर कर **360** फुट लंबा और **25** फुट गहरा तथा **30** चौड़ा रास्ता निकाल लिया। इस पूरे प्रयास में उसकी पत्नी फागुनी देवी के सिवा किसी का भी साथ या सहयोग उसे नहीं मिला और ना ही उसे इसकी कोई शिकायत ही थी। लोग उसे मूर्ख समझते थे। सरकारी तंत्र को उसका काम निरा बकवास लग रहा था।

जब रास्ता बन गया, तब सभी तंत्र जाग गए। सभी लोग उसकी तारीफ करने लगे। उसने नजदीकी शहर की दूरी, जो पहले **60** किलोमीटर हुआ करती थी, उसे मात्र दस किलोमीटर पर लाकर रख दिया था। बच्चों का स्कूल, जो लगभग **10** किलोमीटर था, वह मात्र अब **3** किलोमीटर की दूरी पर आ गया था। गाँव के लोग उसका नाम लेकर अपना परिचय देने लगे थे। पत्र-पत्रिकाओं के संवाददाता उसके आगे-पीछे मँडराने लगे थे। सरकार भी जाग गइ। उसने भी उसे राज्य का सबसे बड़ा सम्मान दिया और उसका नाम पद्मभूषण के लिए प्रस्तावित कर दिया। लेकिन उसे पद्मभूषण तो नहीं मिला, बदले में वन विभाग ने उसके इस कृत्य को गैरकानूनी घोषित कर दिया।

वह व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि बिहार राज्य का एक किसान था, जिसका नाम था दशरथ मांझी। दशरथ मांझी के गाँव का नाम गहलौर है और इस गाँव के पास का शहर वजीरगंज है। दशरथ मांझी के बनाए रास्ते का आज खूब धड़ल्ले से उपयोग हो रहा है।